

पहकन सो भामा न भया को कमल का मंदिर का तय ले विजुलिका ज तो ते  
जवत पिता माता को सेवा गन्या मा हा देव को पूजा भक्ति गन्या अति कांति  
वंत ॥ उद्दिष्ट गन्या वडो दाता वंत ॥ बुद्धि वंत ॥ नरका प्रताप कसे ले जित्त  
न सक्या को कुल को सेष्ट सत्ता गुगाले युक्त भै कन विक्रम से न राजा वस्था  
का थिया ॥ न सै एक दि तमा विषये शांति सिल नाम दि गंधरः तय सि  
के हि फल हा तमा लिये र राजा का सभा मा आयो रः लो फल राजा का हा  
तमा दियो ॥ राजा ले पानि त सतपसि कन विहा तुना मा वसाया ॥ एसे



प्रकारलोहिगंवर एक फल भोठिराविरसधादस नगर्न लाग्यो ॥ एक दिन  
 ताराजाका हातको दिगंवर लोहियाको पाल्या कावाद्रलेघोसेरफोयो  
 फादीमा एक रत्न मित्रवाट सभा माषत्यो त सरत्नका ज्योति ले सभा हाठ्या  
 लोभयो ॥ सभाका लोगले देखा र आस र्ज्य मान्या राजाले पनि आस र्ज्य  
 मान्या र आग्या गर्न लाहा हे दिगंवर एस्तो माहा रत्न कषा अर्थ ले सकन  
 दिव्यो भंडा दिगंवर मंचर ॥ रित्त पारिगति ॥ हे माहा राज राजा कन देव  
 ताकन गुरु कन ज्योति विक्कन मित्र कन पुत्र कन केहि भोठिरावि दर्शन  
 गन्या फलित हुं ह भनि राजा हो भनि राणा को हो भनि दिगंवर ले भन्यो ॥

क  
 २

हे माहा राज एस्तो रत्न अनेक फल मायिया ॥ एति वचन सुनि राजाले भडा  
 रिकन बीला पाहे भडा रिकी फल मैले राखन दिया काति सबै लैया भन्या रा  
 जाको कचन सुनि भडा रिलेति सबै फल ल्यायो ति फल सबै एक एक गरि  
 फोया रत्न को थुप्रो लाग्यो ॥ सबै ले देखा राजाले पनि देखा आस र्ज्य मा  
 न्या ॥ राजा बहुत पुस भै भन्न लाग्यो हे दिगंवर एक रत्न को मोल मेरो राज्य के  
 न एति सबै रत्न को मोल सवपा दिउला व्यातमा मन को रूकाइ माग भनि  
 राजाले भन्या दिगंवर विति गइ ॥ सिधमंत्रौ घधमिति ॥ हे माहा राजा



हेमाशराजप्राप्सिद्धिमत्रश्रीषधपुरुषार्थदुष्टंमैथुननवानुषा  
 याकोनसुंनुसुन्याकोश्राफूसर्मकरोजोहृत्पोजान्यालेप्रकासनगर्तु॥  
 एकांतदयाभयाविंतिगईहं॥दुईतलेसुन्याकोमंत्रनासुंहुंकर  
 कानलेसुन्याकोस्थिरहुंहु॥तस्काराहकानवडांलेजोगाकुनुभानि  
 मंदाराजालेएकांतगया॥हेमाशराजगोदावरिनंदिकातिरमाए  
 कमाहामसाहनाहामंत्रसाधनागरुला॥त्योमंत्रसाध्याप्रष्टसिद्धि  
 पाईन्याहु॥प्रष्टसिद्धिभन्याकाअरिशामासहिमालचिमागरिसाई

क  
३

शिंलंवसिलंप्राकासप्रतिकामिकाईतिप्रष्टसिद्धिदुन॥ईसिद्धिसाधकहं  
 हु॥तस्कारायोसिधांततिमिकनदिहु॥लेठभानिदिगंवरलेभन्योरए  
 तमाघडुलियेएएकलेतिमिमथेसमानमाआवा॥मंदाराजालेहुंहुवर  
 गरिहोवसभन्याठहाठप्रांतदिगंवरजोगिलेसवंपूजाकोसामगृहि  
 एरगोदावरिकातिरमासमानमागयो॥राजापनिसंध्यावेलासाएकैहा  
 तमाखडुलिहरताहिगया॥जैसेराजाकनदेघोदिगंवरवहुतस्वसि  
 मेकनभन्यागोहेमाशराजईहादेविदुईकोसमावनमाएकसिसौको



रुष हते सरसमा लु ॥ मुडाया को हू लो लि ये रसा गी श्राव ॥ भनिदि जं व  
 रले भंदा राजाले हो वो र भनि राजा सि सौ का रुष मा गया ॥ वा हा दे विदि गं  
 वर ससान मा गया कसो मसान भन्या भूत वेता लले दु क भया को सा हा म  
 यान क ह सि का हा उ क पा से तो चारै ति र र क ब ह दो के व ल का ल को खे ल  
 न्या था त ज स्तो क पा ले ल भू या न न र क दे वि दो ये सो मसान भू मि धु वाले  
 प्र धा ते भया को वि र वे ता र ले ह स ले गर्ज दा भ यं क र दे वि दो सि ता या को  
 प्र गि त स का धु वाले के म ल का ल मि ध ज स्तो मि ध स्या ल ले पू रा भया

क  
 ४

न क क न भै सा व सा या राजा रुष दे वि वो र्ण ज सै म त क पे रि रुषै मा मु डि यो ॥  
 राजा पे रि रुष र रि मा सो का ठि क न का ध मा च स र्म क क क ल या वा र हे उ दा भ या ॥ त  
 का रु प्रा त ते स प्रे त भ या का व न मा वे ता ल भं ह्य ॥ का व स सा स्त्र वि नो दे ने ति ॥ हे मा हा  
 मा न्न नि स का दि न का व स सा स्त्र नि ति का वा त्रा वि नो दे मा हा ह न रा ॥ मु  
 ना नि द्रा मा क ल ह मा जां ह न रा ॥ वि न ये ने ति ॥ ज स पु त र का सं पा ति ह  
 मा ग्य ह न म त है न त ल्यो सं प ती ध्य था ह ॥ रा रु स व ता रा रु द्यो त  
 है नं त्यो रा रु व्य था ह ॥ वा रिा सं पू र्ण ह क वि भा है न त्यो वा रिा  
 ॥ हे मा हा राज को हे क थाम क हं ह ॥ सुं हु हो व र ॥ रु क वा रा



न्याकिनगिरिह ॥ ताप्रांतयमकुठनामराजाथियो ॥ तेसकोपुत्रमुकु  
 भन्याकोथियो ॥ त्योमुकुठसेबरकाजिकोहोरोसाथलियेरवडाकुट्टा  
 अहेराषेलनगयो ॥ ताहावनमारुकवाजेसरोवरयोषरिदेष्वा ॥ क  
 रिरभन्याराजाहंसचेषेवासोभितमानभयाकोकमलकाफूललेआ  
 मानभयाकोपद्मकापातलेरातासेतानिलाकमलकाफूललेआह  
 ॥ इतमानभयाकोसाहलेकहुवालेअरुसवजैजंतुलेसोभितमानभया  
 को ॥ तिरमाअतिसुहरवनलेकेतकि काफूललेसोभितमानभयाकोकदलि

क  
 ६

काफूलकारसमावस्याकाभूवरामतुरिकासधुगुंजमानलेसोभितमानभयाको  
 यथाभनुपहिमयुरचघोरकोईलिसारसद्रुपादिपक्षिकासधुलेसोभितमा  
 एसासोभितमानपोषिरमाजाईकनघोरादेसिवोल्याहातपाठुधो  
 मरिदेवताकासोठगयादेवताकननसत्कारगपाराजाले ॥ एसोभन्या  
 नेवेति ॥ उवासलेभयोवाहआहारलेभयोवावडावलवंतसनुधिंम  
 थेंभयोवासोभन्याकोधुभयोवाकोबिछाठनाभयोवाहुंगासाभयो  
 भयोवाहुःखसाभयोवामेलेसवैवरोवरमान्याकोहृएककोहिहैन



धर्मासर्वैर्हन्ता यातामापनि अंतरिक्षपनि हसैदितामापनि अकका  
 समुद्रमापनि काष्ठमापनि सायातापनि पृथिवीमापनि दधमापनि स  
 र्वैर्हन्ता सवश्रो मधिकविज एकोसिवहन्ता भनिराजाभहन्ता वा  
 को गुरुतिद्रागयाको रिश्रवंधग म्याको वालकुमा म्याको गार्दाम्याको  
 म्याको एतिपातकजोहू त्योसवैएक सितागरिमा हादेवकनहंडवत्  
 रा सवपातकजोहू रा त्योमनुष्यसिवलोकदां हू ॥ इति नमस्कारगरिराजा ७ क  
 धापहि एकनार्द्रका सुंदरि सरिले युक्तवैष्टितमानभयाकित सैपो वरिमा आर्द्र ९

श्रानगरिगौरिभवानिको पूजागारिकनघरजादाभातेसनार्द्रकाले राजकुमारकन  
 देवि रजालेपनि देखा परस्परदेखा दुवैकनका मदेनुका वाताला ग्या सो घनमा  
 हनसंहि प्रनठमा दनसंतापन इति पावगारा दुवैका ह्वातिमाला ग्या नार्द्र  
 कामने भैवेदनामुह्मा देवि ठठेरना इकाभनलागि संकेत ख्या नकहि ॥ ए  
 को फल सिरमा राखि सिरदेवि निकेरकानमराखि कानदेवि हा  
 षि ह्वातिना राखि ह्वातिदेवि पावमा राखि एति पल्लव  
 राउप्रांतराजकुमारपनिकामदेवलेग्रा तु रभयो राज



भन्यो हेमं त्रिआजमैले कोहि नार्इका अतुल्य सुंदरि  
जो ठाठ वसति जो दिन ॥ हेमिअ को नार्इका मलेन पाया  
गगन लानि चय ॥ एति सुनि सत्रि पुत्र विंति गर्ह ॥ उदिरिति  
थर ॥ हेमाहार राज जो चतुरहं जो पंडित बुद्धि मंत हं न दे प्रेमात्रे जो हं  
न ॥ हेमाहार राज बुधिवंत जो हुक्क अनुवा हले चेषाले हिठनाले बोल क  
नाले आवाक लहराले मुख कालहराले विचार गरि मन को कु रो जो हं ७

हेमाहार राज ते सार्इ काल कोहि भति थि भन्यो हेमं जो ले प्राजगल मंत  
ले सुधायो राज कुमार क हं हं न ॥ हेमंत एक कमल की फूल सिरदे  
धिनी के रकान मारा धिका न दे विहा न मारा धि दात दे धि का ति मारा धि  
का ति दे धि पाव मारा धि एति पल्लव गरि गर्इ ॥ भनि राज ले भन्या मत्रि भ  
हं न ॥ हेमाहार राज जो पल्लव को अर्थ सुनु हव सर ॥ दो कमल की न मारा  
धि कर्न कुठ भन्या को न गरि हं जो वसति हो भनि ॥ जो दात मारा धि दंत घा  
ता कि छोदि हो भनि ॥ यो हृदय मारा धि ति निरोधा ति भनि ॥ जो पाव मारा  
मे



राविपदुमिनामेरानामहोभनिन्दा॥ एस्तोपल्लवहोभनिमंत्रिलेभंद  
राजाप्राहागर्हन्दा॥ हेमंत्रिजाहामेरि प्राणापियारिह तांहिजाउरभोज  
नगरौलाभनिभन्यारमत्रिराजातेसनगरमागया॥ मालिनिकाघ  
रमागया॥ विक्रोयादीनापितिमालाकारीप्रजाजिकानटि॥ एस्तावा  
ठकुरोकि राईनुहुहु॥ ईदुवैतिहुंभनिताहिउरामन्यातवतिसमा  
लितियैमुधाया॥ हेमालिनिजाहा राजकन्यापद्मावतिहृत  
काहजुरातिमिजांकोकिभंदगत्योभंहेसधासतन्काहजुरजोहु

तनैकिमालिनिहोभनि॥ राजाभंहुन्प्राजतजायेरएसविंतिगर॥ हे  
मिआयोउद्यानवनमा राजकुमारदेव्याथोत्योतायाहाप्रायाकोहुभनभन्या  
रमालिनिगौरतसैभति॥ त्योवचरापद्मावतिलेसुनिरदुवैहातमाश्रीषंड  
लेलेपनागरिदुवैगालामासारि॥ जापापितितेराघरभनिरधषाई॥ मालि  
निघरगईमालिकनहदेआठदातिनदुलेदेघारराजालेविष्ठादमान्या॥  
मत्रिलेविचारगयो॥ हेमाहा राजकेहिकारराहुजीदसवंडालेगालामासा  
रिसैताडामरंधनलेलाईत्योकाभन्यादसदिनसुहृयहहुतांहासंसपय



जब अधारि होला तब आठुला मन्या को हो भनि संत्रि ले मन्यो जब कश्म प्रहम  
यो फेरि मालिनि कन पठाया ॥ मालिनि गै जसै मालिनि कन देखि पमावति  
लेत सै कुंकुम ले लेपन गरि तिन वगुलि ले लेपन गरि गालामा मारि रजाया  
पिनिते राघर भनि ॥ फेरि मालिनि रुदै घर आर ॥ राजाले विख्याद मान्या ॥  
मंत्रि विंति गह्वर ॥ हे माहा राज केहि काराहु ॥ पमावति रजसुख लाभै कुन  
राता गम गालामा लार्इ तिन रेखा तिन दिनमा आव मन्या को हो पहिलो दिन  
पंजलरति हुने ॥ दोआ दिन प्रसधाति निहुके ॥ ते आदिन रजनि धो विनिहुके

क  
१०

दोआ दिन सुधुके ॥ चौथा दिनमा अस्नान गलि रसुध होला ॥ फेरि मालिनि  
कन पठाठुला मन्या पठाया ॥ जसै पमावति ले देखि तसै निष्ठुर वचन गरि  
पश्चिम द्वारवाठनिका सि सि घुघर आर ॥ सर्वे तांत कहि संतुलै पुग्यो हे मा  
हा राज आज भैं आधा रातिमा पश्चिम द्वारवाठ पमावतिका डेरा जानुहु ॥  
भनि संतुले मन्यो ॥ रातमा संतुल समेत गया ॥ के दिले राजा कन मित्र लागि ॥  
संतु डेरा मा आयो ॥ राजाले पमावति सग भेट गन्या परस्य रवील्या ॥ बाहाठु  
प्रांत स्नान गन्या भोजन गन्या कय रलाया यान घास को मल विच्छाठुनामा



चार प्रकार की संभोग गन्या ॥ मनिवाठ खासि माथि बाढ पूरुष भया को रति  
 सबै ले जानु ॥ यसु जै जो रतिगर्हना सामु द्विथै जोगर्ह त्यो रति पासव  
 रति भुवि च द्यारा जन को प्रेम हो ॥ गाढा लिंग रासि कि ॥ वडा पतिले  
 आलिंग रा गन्या को जो ह त्यो सा हा सुष हो ॥ तां पुल मिति ॥ पान का  
 ते रुग रा हना ॥ क्या क्या गुण पि नो ति तो मिठो मधुरो सुषो कं माय वायु  
 ह रा क फ को ना सक मि नो ग रा स नं मुख को आभ रा सो भा चैतन्य  
 वडा गन्या को देव दान्या एति ते रु गुण पान का हना ॥ पान भन्या

क  
 ११

को शर्ग माप नि दुर्लभ ह ॥ पुरी पुक्त भया की राग वं ह सुपारि वढ ता भया  
 रंग द्य वडा गन्या पान का पात वहुत भया सुगंधि हु हु नव हुत भया मुख  
 दुर्ग धु हु ह ॥ तखा रा जु के गरियान धानु ॥ जन्म स्थान मिति ॥ हे सवि  
 क लुको सुगंधि को गुण को जां ह ह ॥ जो वरु जा हा जंमं ह ता हा तको  
 गुण प्रकास हु दैन ॥ सो भागुन ठा ठां ह ॥ कलुरि भन्या को मर्ग का  
 ना भिमा हु ह ॥ मेरना मि मा ह भनि चाल पा हु दैन ॥ क्या ग ना हु ह भनि श्रं  
 त आग मा हे व हि लो लाग्यो कि भनि य स्थो संपुरी भया की द्रव्य काग व



कनहर्षो एतौ कसुरिह भनिचारसि लोकपद्मावतिलेयहि एतौ प्रकार  
तसंभोगपरिकन राजकुमार आग्यागह ॥ हे सुंदरि मता केहि जांदिन मे  
रामंश्च जगदुधिमनहं अहिजां दहन् राहिमा हो राजतम्रामंत दे धिमवहु  
तरुसभया भोलिसतम्रासत कनसंभारगरुलाभनि ॥ अग्रंत प्रातसम  
यराले त्यो सबै दगांत मंत थैक ह्यो ॥ यतो मन्याकोछ ॥ दिनुलिनु आपू  
पेटको कुरोक हउ सुध्यावनुषानुषुवावनु एतिह शोकपुतिकालहारा हे क  
रा ॥ हे मंत तिमिकन आज आधादिनमा एानुसामद्य हि आठन्या क १२

एतिसुनिमन्ति विंतिगह ॥ हे माहाराज मेरावारा विषकालनु आठन्या क  
रा ॥ अहउग्रंत मध्यवेलासा विषकालनु लि येरकेटिका आई ॥ लउमंत  
कनदि ॥ मंत लेलुने येरकु कुरकनदियो ॥ लउषानिमात्रै कुररमन्यो  
त्यो मन्याको देवे राजारिसा यो ॥ त्यो स्वाक्षिको काम है ना ॥ यो स्वाक्षि मे रामं  
त कनसा एन आटिह रत्योकागर्नि कभानि राजलेभंदा मंतमं ॥ हे माहारा  
जपुतिकाररातातिमिसंगयोह रमसग है ना ॥ हे माहाराज माहारा रिवावा  
दाजुभाई जंनमस्यान सबै तो जे स्वामि मंन्या स्वाक्षिको धर्म हो ॥ अरुता



तदा जं मां दहन् ॥ ए सो भन्या को ह ॥ जो गत्को अन्न मर्दे ॥ जस्को घरा  
 आमा प्रवृत्त तस्को काम मन ले कचन ले सरिर ले सेवा गर्नु ठीति महो ॥  
 जो विष खटाछु त्यो दुहकन पानिकन वरो वर दे वृद्ध ॥ पानि दुह मि  
 होई जं ह ॥ पानि आमा मापका ठहा अकि हां ह ॥ दुहर हं ह ॥ न ले संसा  
 र मा ह ॥ जो वडो दुचक सला मर ह ॥ कुल धर्म को ठो ठेना ॥ हे मा  
 हा राज यो कति कहु गरा योग रा ॥ हे मा हा राज आ न आ धारा त सं प्र  
 सं भोग्य गरे र त सका वास जं चास न गले र रे वा त सु ल ज सा पार र

क  
 १३

ते का ग ह ना सब वै ल्या वा ॥ न ले बाल न मर्दे कना ॥ हो वर सभनिक नया  
 मं तले भन्यो लज कुमारी ले ग्या ॥ तिस वग हना राजा न सु दार का घर  
 पठा यो ॥ आपु सं त त पति भयो ॥ म सा न मा ग यो ॥ ज ठा म कु ठ गरि आ धा वं  
 इ को फल गरि सुं हर पं द्रा स न गरि अलिक आषा का पलक लाइ वस्यो ॥ जा  
 ले ति प द्वा धा ति का ग ह ना सब लिकन सु दार कन ति ग ह ना दे वा या ॥ ति सु दार  
 रहे तले आपु ले क मा या का राजा का द्वा प ला या का ग ह ना चिं त्रि रा घ्या ॥  
 सु दार सु धा व न ला ग्या ॥ हे सि पा हि इ राजा का द्वा र का ग ह ना का व व र



हा मिले पात्रौ भवि सुधाया ॥ कोल हल सवग न्या ॥ कठुवाल थैंक ह्या ॥ कठुवा  
 लले समायो रराजा थैं लग्यो ॥ राजाले सुधायो ॥ हे सिपाहिते लेति गहना  
 का हा पात्रौ सत्यो सुनिराजा भंड ॥ हे माहाराज मेरा गुह ले दि पार वो विल्या भन्या  
 रल्या या थ्या मका जानु का हाया था ॥ थ्या मतागरा योगन्यो हं भन्या ॥ भनि हे  
 सिराजाले भदा कठुवाल ले राजा का आग्या ले गहना विया ॥ ऐसे मसान सा लग्या  
 कठवाल ले गुरु थैं सुधायो ॥ हे गगवां द्रगहना ति मिले का हाया था थ्यो भनि  
 सुधायो जोगि भंड ॥ आज सुधा रिचतु दे सि हो आधारातमा अहिनि बहुत

क  
 १४

आया ॥ तिसवैले राता मंडल वनाया ताहि भिन्न स्वमानि समाया ॥ जसै जोगि  
 हेरमा सुधान लाग्या थ्या ॥ तसै मैले त सुलले एवटिका वाठ जंगमा मा ॥ थार  
 तका गहना भैसा सार्द्र भागि ॥ तिगहना लिराया थ्या ॥ तव सिष्य कनवेच  
 न पठाया थ्या ॥ निश्चय ॥ एति वचन सुनिकन कठवाल ले राजा हो उष्टतांत कह्यो  
 एति सुनिराजाले भडानिके ठिकन पठाया पद्मावतिकन रांगिगराया वांमजं  
 गा मात सुलको द्वा पड्कि भनि हे न जसै देया ॥ वहा उष्टतांत कठवा थैंक ह्या  
 सावोरहे च भनिकठवाल ले कह्यो ॥ हे माहाराज सां सौरहे ह ॥ ए सो मना को ह



अर्थनासमिति॥ हे माहारजवडा ले एति प्रकासन गर्नु॥ संपतिनास भयाको  
 मनको संताप धरको देष्ट चरित्र ठव्या विगन्याको प्रमान भयाको एतिकुरो वडा  
 ले प्रकासन गर्नु॥ पेरौ राजा कडुवा लते सैतापि छे छे ग एर सुधावा॥ जो ममा व  
 तिवौ सिरहि हू ये कनका दंड गन्या हो भनि सुधा व कडुवा लस सानै जाई सु  
 धा यो॥ हे तपसि क्या दंड उप भावति कन गन्या हो भनि सुधा यो॥ तपसि मं ह  
 र हे कडुवा ल ब्राह्मराः गाईः स्त्रिः बालवः गोचः जसो अं न घाई हू जो सरण  
 मा आया को हू॥ एतिकन मानु हू न॥ एति अवध हुन॥ एतिकन वडो  
 अपराध भया दे सत्या ग गर्नु ये हि दंड ह॥ एतिसुनिकडुवा ले राखि क ह्यो

क  
 १५

राजाले कसै ले न दे विष मा वातिकन सह दे विनिका सिद्धियो॥ वा हा दे विरा  
 जाले संत ले चो रामा च हाई कन ले ग्या पा हा गन्या॥ ए सो भन्या को हू॥ सं  
 प्रापुत स्व दं भस्म ब्रह्मा यंत न ग ह्यति को लिको वि हू तपे रा भजं ते राज क न्य  
 कं॥ अपरि हितं मे ति न दे घ्या को त्यो अव हू ये ह॥ त्यो अ न्या था गर्न पंडित ल म  
 नि दे व ता ले पा ति सकु हू ना॥ उक्तं चः हे राज वडा कन विना स म ये हुं हू॥ अघि  
 धुडिले हू उ हू रा म बं ड ले सुन का म ग प हिलाम ग्यार सिता गु मा या॥ न  
 हु राजाले ब्राह्मरा क न डो ला वो का या र स र्य भया॥ सह स्रा गु न ल ब्राह्मरा



किं गार्हपत्यारसपूराहृतमया ॥ राजाभुविष्टि रलेभुवावेल्पा रभाईराशिदे ससं  
 पतिसवहान्या ॥ तसैहुद्धा ॥ उग्रंतहोरिकादुःखलेहंतघातमया ॥ हेमालय  
 गया ॥ एतिकथाकहिकनवेतालमंहु ॥ हेमाहा राजविक्रमसेनहंतघातमया  
 कोपातक एभि तिनमध्याकस्वनहुद्धा ॥ जानिनकह्याह्यातिष्ठुठिसरोला ॥  
 राजा विक्रमसेनमंहु ॥ विनाविचारलेपद्मावतिधयायो राजाकनयापला  
 गो ॥ एतिलुनिवेतालफेरिहवैमागयो ॥ राजापनिपेरिरुषमाजार्हमतकक  
 नकांधमाचहार्हहिउद्गमया ॥ ईतिसिवहसुविरवितायां पंचविं सतीकायां प्र  
 थमकथानकमरा ॥ १ ॥ ॥ नत्पासरस्वतिदेवीसेताभरामुषितं ॥ पद्मपत्रवि

क  
२६

सालादिनितामसासनेथितां ॥ पापरिवेतालमहु हेमाहारजसुंनुहवसर  
 कथाहाकहंहु ॥ एकधर्मस्थलमन्याकोनगरहु ॥ ताहागुणाधिपमन्या  
 कोराजाथियो ॥ ताहारककेसवमन्याकोप्राप्तराथियो ॥ तस्वप्राप्तराकि  
 होरिमहनवतिमन्याकिथिमाहारपवंतिथि ॥ तस्वनमागनभानितीनैवर  
 आया रूपलेधनलेगुरालेतिनैवदावरमयाहु ॥ प्राप्तराकसवल्लेसन  
 चिताउतलागा एकहोरितिनवरआयाकस्वनदिठकस्वननदिठएति  
 प्रस्थावगर्दकेठिकनकालासापलेउक्यो ॥ तस्कारणमंत्रजान्याहेरुलेहेया  
 रमंत्रलागा ॥ हेजाल्मरायोकंन्याजिठदि ॥ पंचमिनवमिषट्टिचतुर्दसि एति



तिथिमाससर्वलेडकाकोजिठहैन॥मंजुलवारपनिसरवारग्रहताकादिनए  
 तिवारकोपविजिठहैन॥बोधधिलागैहैनरोहिशिमर्गसिरअस्त्रेसाविशावा  
 मूलरुर्तिकाएतिनक्षत्रमावेयालाग्याकोरोगिमर्ह॥इतिमावठमाकंठमा  
 विठउमागंडस्थलमापेठमासिरमाहातमानाघमानामिमाकांधमाकोखा  
 माएतिमर्मसंधिहंर॥योकेन्याताजिठदिनजिरीस्थानमाकुद्यानमाससा  
 नमासेताघरमावेसाटाठमासर्वलेडकाकोमर्ह॥सर्वलेडकापानिस  
 रिरःकुत्ताकोपसिनाआयाकोवातभयाको॥बाहुलिकेलाग्याकोपेठमाकु  
 लभयाकोभ्रमराविशुद्धिभयाको॥नासाहिउसुकी॥सर्वलेडकाकोमा

क  
 १७

येतोभयाश्रवस्यमरताहुं॥गलोभंजुभयाकोवचनविशुद्धिभयाको॥विपति  
 भयाकोसासवकाकोविलक्षताहो॥योकेन्याजिठदिननिश्चया॥अरुविचार  
 कागरी॥इतिवैद्यकावचनगुनिकेसवनामब्राह्मणालेतकन्याकननदिका  
 तिरमालैगेरसंस्कारगया॥तितितैवरपतिताहिगया॥एकवरतसैकन्या  
 संगमयो॥दोओवरतेसैमसानमामहिवाधिवस्यो॥तेओवरतेसैकन्याकावि  
 रहलेतिथियागगयो॥दिसंतरजाहाएकनगरमाजाईएरब्राह्मणयेषान  
 माग्यो॥तेसगहस्याब्राह्मणालेःभयोहेतपसियेहिभोजनगरीलाभनोरत  
 पसिताहिवस्यो॥उप्रातःबाहुशिलेसरामगदीमावालवरुणालाग्यो



रग हस्या ब्रांशाले बालक न आगामा हा लिहिया ॥ तेति गप्पा को विदे सिले देवो  
 ब्राह्मणाले दिया को भोजन पायेना ॥ गह स्या ब्राह्मण मं ह ॥ हेत पसि क्या हा  
 भोजन गदौ न भति सुध्यायार ॥ तपसि मं ह ॥ जस्का घरमा पत्तो रह सकर्म  
 ह तस्का घरम क्या न घाला भन्यो ॥ एति सुनि गह स्या ब्राह्मण मित्र पसि  
 पोस्तक जि कि मंत्र जा पगारि वाला जगायो ॥ तपसिले आस र्यमा नि सिता  
 यो ॥ यो पोस्तक पाया मेरि खास्ति जिया कुधौ भनि ताँ दिवस्यो ॥ आधारा तमा घ  
 र मित्र पस्यो र पोस्तक लि यो र जाँ हा के ठि क न पोल्या था ताहि गयो ॥ मसा

क  
 १७

नव स्या लेशु ध्यायो ॥ हे मित्र हे सो तरः गया को केहि विधा पायो मं हा पाया  
 को ह भन्यो ॥ तरयो मेरि पृ था क न जगाई दे भन्यो ॥ एति सुनि पोस्तक पोयो  
 र मंत्र जा पगयो ॥ कं न्या जगायो जो सगे मया थ्यो पोष नि जाग्यो ॥ ते सक न्या  
 निमित्त फेरि ति नै रज रज न ला ग्या ॥ एति कथा हा भनि कन बेताल मं ह ॥ हे  
 माहा राज विक्रम सेन पो कं न्या कस्कि हुं ह ॥ राजा विक्रम सेन मं ह ॥ ज  
 स्ले जिया यो जिव दा ता वा हुं हो ॥ जो संग मया थ्यो सगे जा ग्यो पो भाई हो  
 जो मसानमा म हि वाँ धि वस्यो त सै कि खास्ति हो ॥ ज सै भन्या त सै व्यता ल फे



रिरुषैमागयो ॥ इति सिवदासविरचितायां वेतालपंचविंशतिकायां द्वादशे क  
 थानकम् ॥ २ ॥ ॥ विष्णुश्चरन्तमस्तु तं गजं गजस्य भूषवाहनं ॥ विष्णुना  
 संमाराकायां नमामि गता नायकं ॥ फेरि वेताल भंडा ॥ एकवर्धन नाम न  
 गरथियो ॥ तेसनगरमा सुइग देवभनुराजा थियो ॥ राजा सिंहासन वसिभ  
 न लाग्या ॥ एहि द्वारमा कोहि छुकि छैन भनि राजाले सो ध्याए द्वारपाल वि  
 तिग छ ॥ प्रखेद इति ॥ हे माहाराज थाक्याका अलिसेले आलं वके हिन भ  
 याका आ आन भयाका एला आनि द्वारमा वस्थाका छन ॥ फेरि आकी

क

१८

दिनमा दहता देस वाट विरवरभन्याको राजपुत्र सेवागर्न आयो ॥ रोजको दृष्टी  
 नगर्न लाग्यो ॥ राजाले सो ध्याए ॥ हे राजकुमार तेरा जिउ नाहस मेत क्या छ ॥ भ  
 दा विरवर विंतिग छन ॥ हजार रूपमा असर्थि देऊ भन्यो ॥ सामग्रह हजार  
 रूपमा थाक्याका छ ॥ म एक छोरो खासि छोपाचको हि छैनन ॥ एति सु  
 रामं छ हेरु सबै हां स्या ॥ राजा विचार गर्न लाग्या ॥ कि मर्थे अत्यंत भनू लाग्यो  
 पाचलेका अर्थ लेवहुत धनमाग्यो भनि हास्या ॥ राजाले येको गुन होला  
 भनि हजार रूपमा दिया ॥ तेसै प्रकार सधा हजार रूपमा लि सधा दस न  
 गरि जांथ्यो ॥ येसै प्रकार ले सेवा गर्थ्यो ॥ अर्धरात्रिमा सुइग देवराजा सुधा



५५॥ ठोका माको वस्या को को छ म हा विरव र म थ्यो म कु मा हा राज मं थ्यो  
 धन को ई छा ग न्या ले आ मं हा आनु हो व स मं हा व स पर जा मं हा पर जा उा  
 वो ला उ दा वो ल नु या स्वा मिले वो ला यो ग रा यो ग नु ॥ सेवक को धर्म हो ॥  
 सेवक ले सु ता पा नु कै न ॥ निद्रा पु न्या ई उ दु ला मं नु हु दै न ॥ आ पु ३ ह मा  
 या को ग रु ला मं नु हु दै न ॥ सेवक ले आ पूरा मन को अभि प्रा य ग्या ह् योग  
 रु ला मं नु हु दै न ॥ क्या हा म न्या आ फ नु सरिर आ फे ले वे त ह ॥ त्यो आ  
 पु सु ष हु दै न ॥ ए सो म न्या को ह ॥ सेवा दे वि दु लो धर्म आ को कै न ॥ को  
 हि जो गि जन ले पति ग म ग म पा ई स क नु कै न ॥ एक दिन अ र्ध रा त मा

क  
 २०

म सान मा स्वा स्मि ले रो या को स द रा जाले अ न्या रा जाले सु धा या ॥ ये वि रव  
 र त्यो स द्ध का हो सु न्यो मं हा सु न्या मा हा राज मं ह् द ॥ हे वि रव र ते त्का न जि  
 क मा ई त्यो रु न्या का हो क्या का र रा रु ह् त्यो पु जि वा डे आव ॥ ए सो म न्या को  
 ह ॥ जानि पा दि ति ॥ वा क र को धर्म पा ठा उ दा पु जिं ह ॥ गो ल दा जु भा ड को  
 धर्म मा र मा पु जिं ह ॥ मि त्र को धर्म आ प दा मा पु जिं ह ॥ सं पा ति स कि दा स्वा  
 स्मि को पु जिं ह ॥ ये ति म न्या पा ह् वि रव र त्यो स द्ध वि चार न ग यो ॥ सुं द रि  
 दि व्य क प रा ग रु ना ला या कि सुं द रि स्वा स्मि रु दा दे ष्यो ॥ कै ले ना रु न्या



दगुनी हा ह्या कैले विना न्या ॥ मा हा दुषित मान भया कि देव्या ॥ मरुति दुषि  
 या पिन भनि लोठन माई हूँ देव्या ॥ वा हा प्रांत ॥ विरवर सुध्या वन लाग्या ॥ हे सु  
 हरित को हो सक्यन हूँ सभंदा तो मंहे सराज लक्ष्मि हं भनि ॥ का अर्थ ले  
 हूँ सभंदा तो मंरे अंधका रले व्याप्त भया का वाठ मा सुद्रग दे वराजा जा हूँ  
 भनि तन्का साया ले हूँ मंदा ॥ विरवर मं हूँ ॥ हे राज लक्ष्मि के हिठ्या हिठ्ठ कि  
 हूँ न्या क्यार्गे गरि राजा सतायु हूँ कन सोठ्या इकठ्ठा ॥ लक्ष्मि मं हिरा ॥ हे विर  
 वर राजा कि पूजा गन्या ॥ कि कालिका का हूँ राजाई तैले तेरा पूत्र को सिरका

क  
 २१

२ देवी कनराया राजा सतायु हो लाभ नि राज लक्ष्मि ले मंदा विरवर आ पूरा घर ग  
 यो ॥ घर जाई आफ नि स्वास्तिकन सुत्पा कि गूठा योर मं न्न लाग्यो ॥ तो दतांत क ह्यो  
 भार्यो क ह्यि थि भन्या आषा कान पन यन को साव न्या कि स्वास्तिका लक्ष्मि रा हूँ न्या  
 तिस बेल हाराले युक्त भया कि नं मृत भया कि अति सुंदर ॥ आशि भया कि वनी धनि  
 ॥ आवर्त ले युक्त भया कि हत्यनिका दु हजंघ भया कि घनातन भया कि तेरा  
 सत्र पिता को सेवा गन्या हूँ तस्का वावा कन धन्य पा न्या भद्रा ॥ जो स्वास्तिक ले विस्वा  
 स राषि त्यो ठ ति म हो ॥ ए सो भन्या को हूँ ॥ एका पुत्र य सिद्ध अर्थ लाग्या को वि  
 द्या सरिर मा आ रोप भया ॥ भला मित्र संग को भेड स्वास्तिक आफ नाद ग मा र न्या



भलोवोल्ह्या पावथोक संतोष दिव्या हुं॥ उग्रो तचकारः गरावोन गन्यो धूपारा  
 राजा सहल मित्र भयो॥ आफना रागमान चल्पा खास्त्रि र्द्वारथोक सुलामि चंन  
 रि मुवाठका सुलि हुन्या॥ मित्र सग वितको अतरन रहो स्या॥ गुरा वत वाकर थें  
 पियारि खास्त्रि यिं जो स्वामि छु त खु से अतं त मना मिल्पा को भया॥ येति थें दु  
 : खक ह्या खुष हुं छन्या॥ वहुत क्पा क हुं मैले तरा आद्या राजा का निमित्त नि  
 श्रयः॥ हे प्रिये त ते रासा ति थें जा॥ वावा सा हातारि संग स मय वर्तमान गर॥ भ  
 नि विर वर ले भंदा तं कि रा नि विंति गर्छि न॥ वावा ले सा हातारि ले भाई ले हि जो  
 ते रोग ति स्वामि एहि हो भनि दिया॥ नव पूत्र ले सका गर्छु आरु ३४ मित्र ले का

क  
 २१

गर्छु दा जु ले भाई ले वावा ले सा हातारि ले सका गर्छु॥ मेरा गति सा पति सा ति मि हो॥ तम्रो  
 पाठ सह उ न्या है न॥ सता प्रति पदा यो हुं॥ स्वामिको मात्रै आस्रा गन्यो॥ धर्म स्त्रिको हो  
 ॥ जो धर्म भै आया को अधि देषिको छ॥ तदा नै रितिः॥ खास्त्रि हे रु दान ले व्रत ले उपास  
 ले उधु हुं है नन्या॥ एति अर्थ को हिन गन्या पनिके वल स्वामिका व्रत मा र ह्या स्त्रि अछु हुं  
 छन्या॥ स्वामि भन्या पछि अंधा भया पनि लोभि भया पनिके ठरोगि भया पनि स्वामिको  
 सेवा तन मन ले जो गर्छु त्यो सा हास ति हो॥ विरना पूरुष का मुख न हेनु॥ वचन न वो  
 लनु॥ ए सो धर्म हाम्रो हो भति चेतना गन्यो जो स्त्रि छु तस्को उति स गति हो॥ ए



तिन जान्या छिहे नरक जां हं रा॥ एति साहा तारिवावा का कुरा सुनि पुत्र भंछा॥ हेवावा  
 साहा तारि किन विवाह गहौं सकन मारि राजा सुजग देव जिहु न्या भया मलो प्रारा  
 दिनु छ॥ जसो हो लथ घातु त सथे मित्र प्रारा दिनु॥ धत्री को धर्म हो॥ साहा तारि  
 भंविं बमलो भनि स॥ एति चारै जाना को मो तो गन्यार देवी का थान गया॥ उप्रोत  
 राज लु कि कनक सो गहं भनि रह्यो को थिया॥ त्यो भंछ मनै ले जसो बुद्धि हुं हो र  
 हे छ तसै सति भाव हुन्यार हे छ सहाया पानि तसै हुन्यार हे छ॥ भावि जसो हु  
 न्या अवस्ये हुन्यार हे छ॥ भनि विचार गन्यो लुकि रह्यो॥ विरवर देवी का थान जा

क

२३

३५ जागरि हाता खड्ग लिये र भंछ॥ हे देवी मेरो छोरो बंध गहुं राजा सतायु हो वंछा॥  
 भनि कन सिर का ठिचरायो॥ गिउ भन्या भर्त्सा सस्यो॥ भार्त्स स्या को देवी र वहि निले  
 पानि पेट फरि आमा ले पानि प्राण त्याग गरि॥ तिनै ले प्राण दिया॥ विरवर भंछ॥  
 तिन को ताम र ता भयो राजा को सेवा गरि ह आर रुच्य आ अस र्पि ले कपा गरु ला भ  
 नि अफ नुसरि र पानि चहायो॥ एति चारै सन्या का देवि राजा चितार्त्त भंछं रा॥  
 मेरा निमित्ये तेका चार पारि वार को हाय भयो॥ एति मारि मै ल्ये राजा ३ गुनु कपाय  
 यो कपाय योग ह भनि छुरि लिया र जसै गलासा वसायो तसै दे विलो हात समाति

पताल



आग्या गहिन्दा ॥ हे सुदग देव ते रास्य त्वे देवी पुसभ नाका सां हौ सागभानि देवि भं  
 हिन्दा ॥ हे परे मे श्रिति मिम देवि सगुठ भयोत ति चारै जाना सद्य भौ जिवंन्दा ॥ रा  
 जालो विंति गन्या ॥ देविले हो ओ सभानिन्दा ॥ पाताल वाठ अ मृत ल्याया रसि सि  
 दियन्दा ॥ चारै जाना ठव्या ॥ विरवर भंछ ॥ हे साहा राजा दयावंत दाता गुणाको  
 संग्रह गन्या ॥ राजा गुणाका वडा पूरापका बलले सेवा जि तिछ ॥ राजाईको रक्षा ग  
 न्या पत्र सुख सो सेवक राजालो पावतु दुर्लभ छ ॥ ए सो भन्याको छ ॥ राजा साधु ज  
 न कंन्याई ति नथोक सेवा ले फल छ ॥ ए तिकथा हा कहिक नवेताल भंछ ॥

क  
 २४

हे साहा राजा यति सधको सत्यवादि को हो भना ॥ राजा विक्रम सेन भंछन्दा ॥ राजा  
 सत्प्रवादि हो ॥ स्वामिका निमित्त सेवक जि ठदिछ ॥ सेवक निमित्त स्वामिले जि  
 ठदि है नन्दा ॥ तत्कारता राजा सत्यवादि ज हो राजाई त राजै गरिक न जि ठमान  
 आद्यायो ॥ एति सुनि वेताल फेरि रुषै मागयो ॥ इति सिवदाश विरचितायां पंच  
 विंशतिकायां तृतीय कथा समाप्तः ॥ ॥ ॥ गंगा धारंग गंगा धारंगौ रिन  
 थंग गौ श्वरो ॥ गावाहन गतं देवं नमस्कृत्य सहैश्वरं ॥ ३ ॥ फेरि वेताल भंछ ॥ हे सा  
 हा राजा कथा हा कहंछु ॥ एक भोगवति भन्या कि न गरिछ ॥ ताहा राजा रूप सिन  
 भन्याको धियो ॥ त सर राजा का धवल गहमा विधगधु उमति भन्याको सुचाधियोः



तेस सुगा हौं राजा सुधा उहूँ ॥ हे सुधा तैले का जान्या को हूँ मंदा सुगा मंदा ॥ हे  
 माहा राजस वै मैले जान्या को हूँ ॥ जान्या को भया कहत वा ॥ मरारु पसुता उदि  
 नारिक तै हूँ कि हूँ न ॥ मंदा सुधा मंदा हे माहा राजसुग्ध देस माहा सुग्धे खर भ  
 न्या को राजा हूँ ॥ तस्कि रो तोलि सुंदर सुदरि भन्या कि हूँ त्यो तं मरानि हुन्या हूँ  
 ॥ तिसु सुदरि ले पति आ फना घर वसामा मदन मंजरी भन्या कि सारि पिंज  
 रा माहा ल्या कि थिन्या ॥ तसै थैं सुधा वडि न्या ॥ हे सारिके हिक हूँ मेरा रूप कारा क  
 जकुमार कथै हूँ कि मंदा ॥ सारिका मंदा ॥ हे माहा रानि भोगवति भन्या कि २५

नगरि मारु पसेन भन्या का राजा हूँ ॥ तितमा श्रामि हुन्या हूँ ॥ इति सुनिक न वि  
 रह भयो ॥ जसै रति भयो तसै रूप सेन ले डत पठाया ॥ मुग्धे खर कि होरि मागन  
 भनि मुग्धे खर का जियै हतांत वुजि राजा सग भेठ गरायो ॥ ति डत ले कन्या थि भे  
 आया ॥ मुग्धे खर ले दिया ॥ तो हतांत तिक न डत आया ॥ रूप सिन थैं हतांत कखा  
 हे माहा राज कन्या पायौं भनि विंति गन्या ॥ राजा ले सुभल ग्रामा विवाहा गन्या ॥ रानि  
 ले मदन मंजरी भन्या कि सारिका समेत सिये र आ फना घर आ उदि मई न्या ॥ राजा  
 रूप सेन ले तो रानि कि सारिका कन विदग्ध बुडा भन्या का सुगा थैं रके पिंज



रा मा हा लि दि या ॥ सु ग ले अ ति सुं द रि सा रि का क न दे व्वा र का म दे उ ले आ तु र भौ भ न्न  
 ला ग्यो ॥ हे पि या रि वं व ल जो व न भ या कि ॥ आ ज म स ग सं भो ग्य ग रा ॥ हे र सं सा र मा  
 स वै जि व जं तु का मि ला प न ए सै ग रि तु छ ॥ फु ल को सा र फु ल हो द हि को सा र धि  
 व हो ॥ तिल को सा र तेल हो ॥ ध र्म को सा र सं प ति हो ॥ सं प ति को सा र का म दे उ हो ॥  
 आ ज सं स को सै यौ व न दृ था ग र छ ॥ हे सुं द रि जो अ तु र ए र ष छ र ति का म ग र्न मां द  
 छ ॥ ये सो भ न्पा को छ ॥ जो य सु जा त हं र ति सं ग ग र्न जां द छ ॥ तर ठा उ जां दै न न र क  
 घा ठ वा ठै मा र ति ग र्द ॥ का म दे उ भ न्पा को र ह स्य र कां त मा पो ग न्गी हो भ २६

नि जां न्पा ता वि र ला को ठि यो ~~जो~~ जां द छ ॥ हे सा रि जा हा ण सि ना थ का र्त्रे से अ त्पं त  
 वं व ल भ या कि छ ता हा ता हा सु क रि ले थ का त्र म र्द ज व का म दे व का वा रा ला ग छ  
 त व पा ठ मा ला या का ने व र को स व द सु नि दै न न र ॥ पू र्ण वि ष य ज सं भो ग तु छ सं  
 सा र कि स्थि ति ये सि छ भ नि सु ग ले भ न्पा को सु नि सा रि का मं छे ॥ भ लो मं छौ त  
 र लो ग्ग ॥ भ न्पा का पा पि दुष्ट हं छ र खा स्नि मा र्द ॥ सु ग मं छ खा स्नि पा नि दु स्वा  
 रि शि ए रू स को वं ध ग र्द ॥ ए सो भ न्पा को छ ॥ अ न्पा ग न्गी सा हो स मा या मु र्ख अ ति  
 लो भ अ सो च नि र्द या ए ति खा स्नि का म्ब भा व गु रा तु न र ॥ ए सो ति न दु र्द को सं वा द  
 ग न्पा को सु नि रा जी मं छ ॥ हे सु ग का अ र्थ ले वि वा द ग र्द ॥ सा रि का मं छे ॥



हेमाहारजकथाहासुंनुहोवस॥ येवा सपुरमन्याकनगह॥ तौहंमाहाधनिवानि  
 भाह॥ तसकोहोरधनहयनाउगन्याकोथियो॥ तस्कापुरीवर्धनभन्यातगरमा  
 वनियाकिहोरियाहागन्याकिथि॥ तसैसमयमात्पोवानियासरिगयो॥ उप्रं  
 तधनहयभन्याकोहोरथियोतलेधनःघरकोसवैजुवामाहान्यो॥ ससुरालि  
 काघरगयोससुरालिलेवहुतमानगया॥ केहिदिनताहिवस्योससुराथिंभन्यो  
 हेरतंमहोरिपठावभन्योरहवसभन्यापठायोत्पोस्त्रालिलिराहो॥ जसैश्रा  
 धावाठपुग्योतसैस्त्राक्षिकनभन्योहेपुयेआजयाहावडोभयहुतेरागहनाकप क  
 रामथैराघनदेभन्योरागहनाकपससवैलियो॥ स्त्राक्षिकनअंधकपमाहाल्यो २७

रआपुयेकलैगयो॥ त्योनारिलेकुवामावडोफुकारसदगारि॥ त्योसदवाठकावडु  
 वालेठन्यारत्योकुवामागयादेख्या॥ रुदिस्त्राक्षितिवाठकावडुवाले॥ ऊकारवा  
 ठामालाईदियात्योपनिफकिरमाईतेगयि॥ मातिलेसुध्यायाहेपुत्रिकाहाफ  
 किआइसर॥ भन्याहेवावामाहातारिवाठामोचोरलेहेकोरमेरागहनासवैलि  
 योरभागिसत्राहाआया॥ तमाजुवाईकोथाहाहेना॥ मन्याकिवाचा॥ एतिसु  
 न्यारवहुतसोकगया॥ होरिजुजायाजानिरोहोरिमंदाहामिपांलंलाभंदाधं  
 दानमांभन्या॥ उप्रंतफेरिकोहिदिनमाससुरालिकाघरत्योधनहयभन्याको  
 वानियागयो॥ जसैहैलानेरापुग्योतसैश्राफनिस्त्राक्षिदेघोरपुषामान्यो॥



अवकागर्हं वभनि मान्योरत्योश्चास्त्रिमं हे ॥ हे श्यामिधं दानमान ॥ नडरावभनि घ  
 रलगि ॥ ससुरालिकापरियारुसिभया ॥ अंकमालगया ॥ कतिदिनताहिवस्यो  
 एकदिनता रातिसुत्यामास्वास्त्रिकनमारे रगहनाकपरास्त्रियोरआफनाधरगयो  
 एतिप्रतप्तमेले देव्याको हूरतवपुरुषको प्रयोग है नभनि सारिकाले भन्याको सु  
 नेरसुगाभं ॥ हे माहा राजयसो भन्याको ह ॥ वाजिमारासमिति ॥ घोरको हा  
 तिको लो हाको काठको डुंगाको कपराको स्त्रिको पुरुषको जलको एतिको बहुत फे  
 रतु ह ॥ कोहि अमोलहं की डी तु हं पति परंतु जात एकै ह ॥ येति अति राजा  
 विदग्ध सुघाथें सुधाठु हं ॥ हे सुधास्त्रिको होषक ह ॥ सुघाभं ॥ सुनमाहारा

क  
 २८

ज ॥ काँचनपुरभन्याको नगरधियो ॥ ताहा सागरक्षत्रभन्याको वातित्राधियो ॥ तको  
 दुतभन्याको होरोधियो ॥ तहो श्रीपुरभन्याका नगरमा समुद्रदत्तवानिया कि ह  
 रि विवाहाग्योर आफूाधर आयो ॥ केहि नधरमा राख्यो रः स्वास्त्रिकनमातिका  
 धरपढायो ॥ त्यो श्रीदत्तभन्याको वातित्राकन समुद्रपारव्यपारगर्तगयो ॥ ताँहाव  
 हुतदिनलाग्यो ताँपासाइतै मावाठि रजोवतवाति भौ ॥ ए सो भन्याको ह ॥ जबजोव  
 नतु ह तवकसै नरा म्रै पति रा म्रै दु ह यो कन्याका समयमा आमिलो फलानि पुवा  
 पति गुलियो हुं ह ॥ तवत्यो धरमा वस्यारग्यालवा ठगस्त्रिमाहे नलागि ॥ तेसो ग  
 ही एकदिन जुवान पुरुष देवि परस्पर देव्या जसै देवि तसै आफू सधिथैं कहि ॥



हे सचित्तो जुवान कनडा कपारमथै ल्या भानि ॥ त्यो सुनिरस विजुवान थै गौभ  
नि ॥ ए जुवान तेरा केहि काम देवगन को मन हृत समुद्र दत्त वा निया कि को  
रिति मिस गये कांतगर्न को ईहा गन्या कि कुर ॥ हव सराति मश्रा ठ लाभ्यो  
ए सो मन्या को छ ॥ अत्यंत सुंदर पुरुष देखा ॥ सुवास भया को वदन देखा ॥ खि  
हेरु को जोवन अत्यंत चंचल हु छ ॥ सित पन्या का पल्लव जी हु छ ॥ धिव का  
धे ला गति स्वास्ति हो ता ता फल मज सो पुरुष भया दुई एका ठा ठ भया धिठ  
को धे ला आ पेर सा ठ छ ॥ ५ प्रोत मालि तिका घर मा ति ई उ ई को मिला पभ

का  
२२

यो ॥ ५ प्रोत दुई दिन पाहिया ह्याग न्या वसं मश्रा ई पुग्यो ॥ ससुरालि भेठ न भानि  
॥ त्यो स्वास्ति ले व्याहा गन्या को वसम दे विरिंता मा शि ॥ अमम कया गरु क ता जा  
न भो कन ठ पान निं डान जा डो न धामः यामन पन्या को गथ्यो ओ कुर थिएन  
र मन पन्या को गथ्यो मन पन्या का पुरुष संग घे ल्या पर पुरुष सग को गोष्टिः मन प  
न्या को गर्नुः खिको विना सः कारा हो ॥ ५ प्रोत ससुरालि ले आपना गुवा ई क  
न वि लि ग राया ॥ विछा ठ नामा सुत्यो ॥ स्वास्ति कन पनि मा हा ता रिका वल ले  
विछा ठ नामा सुतन पदा ई दिया ॥ हो दि जुवा ई कन एका ठा ठ मा सुताया ॥ त्यो



विद्या। उनामाजाइरपिठिठफर्कि सुति॥ आ मिले सधुरो वचन ले वोलायो एति  
 गर्न लाग्यो॥ स्वास्त्रितादुःख सोन लागि प्रिति मन्या को का सहेउ सग दुह॥  
 क सोभन्या सारा सन गन्या कि क परा गह नागा जल को रिठि को लाई कन  
 अंगार गन्या कि देखा का देउ दुह॥ मुख चंचल उभो मुख गारि वडो सद्ध गारि  
 हासुग॥ आसन चंचल गनु आग भावनु जमावनु॥ पुरुष सग संमुख भये ररावि  
 पुरुष का मुख हेरे रव उभा गप मानि स्त्रिको कथा गन्यो फलाति स्त्रिता वडि भाग्य  
 मानि कुभानि आहत गन्यो कान कना उन्यस यस्तील क्षरा वेस्पा को हो॥ आ पु  
 स्वासि सग विरक्त चेष्टा गन्यो आषा भुकुठि वांगा गारि रिस संग हेन्यो वोल्या पनि

क  
 ३०

रिसा वन्या गारि वोल्या येति थोक हुन्या स्त्रिता अभिसारिका हो॥ ए सो प्रका  
 रले पिठिठफर्कि सुति॥ ए सोभन्या को हू॥ रोगि जो हू तो निडा पाठ हू॥ वरो  
 वर एति वरो वर भया का स्त्रि पुरुष भया पनि सुख निडा हू॥ एस्का रागरंग पृ  
 तिन भयाता का ठमा दुंगा मा पनि सुहू॥ रागरंग मान्या न रलो ग्या सुत्यो॥ ए स  
 प्रका रलो ग्या सुत्या को देवी र विद्या उना देवी उठे जाहों जा रह ताँहि गे॥ आ  
 धारा तमा जसै गै तसै चोरले देख्यो॥ चिता उत लाग्यो योग हना लाया कि स्वास्त्रि  
 काँहा जाँहे भनि चोर पछिला ग्यो॥ ए सोभन्या को हू॥ जो नारिकु कठिनि  
 सित एति गरे र भाषा संकेत गारि आर्को पुरुष वोलाई जो पुरुष संग भाषा ग



रित्यो आसन भानि आसुकाठि सहे आफना आसिकन दोष लाउहे ततो व्ये  
 स्या हो भनि जांनु ॥ सतिगु राउमि तेसको आर आसि जो हो तो तेका भाषा  
 गरेका ठाउमा वस्या को थियो ॥ तस्क नचो रे हो भनि माया हरः को गे गर  
 ॥ ता हा पुगिर मया को देषि वडो विरह मानि तजसग पति छ तसग  
 भेट हुदा तिन लोक ताहि देषि थियो ॥ तंसग देवले विजोगग न्या तिनलो  
 क देषि देन ॥ त्यो नारियनि विरह ले पिवा किले तेस मितक कन अगालो हा  
 लिर मरे छ भनि जानि ॥ चंदन लाई दिपान पुवाई दि फेरि मुख को पुंवन गरि  
 सतिगदी जो अध्या रे देषि ॥ चिया लाग्ना को चोर थियो तश्चेतो हतांत देषो ॥

क  
 ३१

कृतं चाया चिंतया मिसततं मयि सा विरक्ता चान्यमिच्छति जनजनो न्यसक्तः प्र  
 समत्कते च परिगुह्यति ॥ काचिदं न्या धितो चतं चमदनं चंद्रमा चमाचा ॥ जसै  
 सतिभयो तसै ता हा वर को रूप रहे छ ते सरूपमा एकराक्ष सरहे छ तश्चे चि  
 तायो ते समतक मापस्यो रत्यो नारिक न संभोग्यग रुभने रते समतक मापस्यो  
 रत्यो मतक ठाठि अंक मालगयो ॥ मुख चंवनगर्दी हातले नाक लुहे रपदिगे  
 गयो ॥ मतक फेरिलो द्यो त्यो आसि रक्तले छियेर आफ्रि सविधै गै रव  
 डो सव्द गरि रून लागि ते राग नीले मन कठि भना आज भानिर आफ्रना थ



हितास्वामिसुत्पाकाठावद्धगईवजोसदगदिररुतालागितोरुटाकोसद  
 सुनितेसकामाईतिसवैआया॥जसैदेप्यानसैनाककाद्याकिदेप्यानसैभं  
 प्रलाग्या॥हेपापिष्टलाजनभयाकाहेअकर्मगर्भविनाअपराधेहामि  
 होरिकोनाककाष्टिसमंदाजुवाईभंहा॥हेससुरालिहोहेरकालासर्पको  
 हातमाखडालियाकावैरिकोचंचलाचित्तगर्भादिनारकोआसिकाचरि  
 त्रकोविश्वासनगर्भ॥कविहेरुकावर्नानगईनरा॥जोजोगिसिद्धकपदेव  
 नरा॥मदपिन्याकापोलैनरा॥सिहेरुकागईनरा॥सुनभंछ॥घोरकोपे  
 टकरायाकोमेघगर्भको॥त्रिकाचरित्रभाविहो॥न्याजोछवसैन्यापो

क  
 ३२

तादेवतापनिजांदैनरा॥मनुष्यताकाजांलापोचरित्रहोयिनभंदाभंदैसमात्मा  
 रराजाथैंसंप्या॥राजाकामंत्रिहरुलेविचारगया॥मान्यमानिसहोभनिठहरा  
 या॥उप्रांतजोचोरलोपोहतांतदेव्यापोतेहोसवैहतांतकहोरविचारिहरुले  
 सुन्यारअर्थमान्यारजुवाईकनपनिहोआ॥चोरकनपनिहोआ॥एसोभ  
 न्याकोछ॥साधुजनकनपालनुदुष्टकनमारुयोराजाकोधर्महो॥यसोनि  
 तिगयाराजाकनपरत्रपनिवरत्रपतिसुषुंछनरा॥भन्यारतेसनाककाद्याकि  
 कनगधाहामावहायारसहरदेविकासिद्धिया॥धयाया॥एतिकथाकहिक  
 नविदग्धमतिभन्याकोसुखभंछ॥हेमाहाराजनारिभन्याकाएसाहुंछनरा



भनि विंतिगयो ॥ उप्रोत जसै स्मृति विवाह गथा तसै सारिकार सुधा दुवै पक्षिरूप  
 हो आर दिव्य विद्या धर भये र आकास गया ॥ स्मृति कथा कहि कन वेताल भं  
 छ ॥ हे माहा राज विक्रम सेन क स्को पाय हु लो हो स्वाक्षि पायि कि लाग्या पापि भं  
 दा राजा भंछ ॥ स्त्रिभन्या का निंदा गनी हु न ॥ पुरुष भन्या का निंदा गनी होई न  
 रा ॥ धर्म अधर्म विचार ले हुंछ ॥ ब्रह्म अधिक या पस्त्रिथिं ॥ पुरुष को पाप का  
 ठिंछ ॥ भंदा जसै सुन्यो तसै वेताल फेरि रखे मागयो ॥ त्रैलोक्य वहास विरचितायां  
 वेताल पंच विसति कायां चतुर्थ कथा हासमा प्रंश ॥ ४ ॥ ॥ लं वो द रं माहा कायां  
 लं वो दं गज क र्ता कं ॥ पाप ध्रुं पार्वति पुत्रं न मा भि गता नायकं ॥ एक उज्ज्वल भन्या कि

क  
 ३३

नग रिथि ॥ ताहा मदन भन्या को राजा थियो ते सको मं वि संधि विरहि हरि दास भ  
 न्या को थियो ॥ तस्कि कं न्या मा हा देवि भन्या कि थि ॥ त्यो अति सुंदर विवाहा ग  
 नि भौ ॥ वायु पानि के दोहे न लाग्यो ॥ ऐस्ता विषय मा कं न्या भंछे ॥ हे वा वा ज स्का  
 सव गुण ह त स्वन द्यो भनि ॥ एक को हि दिन प्रख्या व मा दक्षि न का राजा थेंछा  
 उगर्त हरि दास गयो ॥ ताहा जाई दक्ष रा का राजा सग भेट गयो ॥ राजा भंछे हे  
 रि दास कालि को व्यवस्ता क स्तो हुन्या छ क हु भन्या र हरि दास विंतिग के र  
 हे माहा राज कलि आयो भन्या बहुत हुन्या छ रिस राग बहुत हुन्या छ वडा  
 पुरुष को अमान हुन्या छ ॥ अविनयन मृत के नरा ॥ अधर्म गर्वी बहुत हुनरा



भलासगठद्याईगनेन॥ हुरमासिठोवचनगन्योकांठापरिजायेरदुखात्रि  
 गन्योमनुष्यहुनन॥ कालिपुण्याकोरुसोचरित्रही॥ धर्मप्रवर्जितइति॥  
 हेमाहाराजधर्मजोहृत्योविदेसजाला॥ ताहिपदिन्याजालासत्पपनि  
 वडाजाला॥ भुमियनिफलितहोवैनन॥ राजापानेअन्यागन्योहून॥  
 ब्राह्मराचंचलहुनन॥ संसारस्त्रिकावसपला॥ खाझिपनिअतिचंच  
 लहुनन॥ सास्त्रकोप्रमानगरैनन॥ साधुजोहतनकनपि॥ गहोला॥  
 जोदुर्जनहंतनकोचलातिहोला॥ तवकलिप्रवेसभयोभनिजंतु॥ हा

क  
 ३४

नगन्याकोपनिफलहोवैन॥ काहाभन्याधुतकनभाठकनमालकनकुवे  
 दकन॥ कुवेदभन्याकाधामिजाहूहुन॥ ठाठनसकनन॥ चोरचुलिषो  
 रुताकनदियाकोनिफैलहु॥ भनिराजाथेहरिदासलेभन्यो॥ उग्रो  
 तलाहिएकब्रांमरातेहरिदासलेहोरिमाग्योतमिहोरिस॥ लाईदेभ  
 योरहरिदासमं॥ भोलिविहानरथमाचरेहसथैआवभन्यो॥ उग्रोत  
 प्रभातरथमाचरेहरिदासथैआयो॥ तेसैरथमादुवैजानाचहिकन  
 उज्जुनिनगरमाआया॥ उग्रोतघरमापनिआर्कोब्राह्मरातेकेठिका



हाजुथेमाग्याहर॥ हाजुभंछजस्काभलागुताहतस्कनदिउलाभंछ॥  
 तोभंछमवडोहानिहुभन्यो॥ तरदियालौभन्यो॥ फेरिआकोप्रासलेक  
 ठिकिआमाथेमाग्योतमिहोरिमलाईदोभन्यो॥ आमाभंछेजथेसवगु  
 ताहेतस्कनदिउलाभनितोभंछभधनुर्विद्याजांदहुभन्योसववेधिस  
 देमावाताहान्योसनुमान्योभंदातसोभयासैलेदियाभनि॥ एसप्रकारति  
 नवरविवाहागर्तलाग्या॥ केठिलेपानिसुनिरविषादमाति॥ एकिहोरिति  
 नकोठहरकाहुहुकसोहुहुभनिबितामानिएतिप्रसावहुदारातमाग्यो

क  
 ३५

कंन्याअतिसुंदरिथितस्कनतराक्षसलेविधापर्वतमालेगयो॥ एसोभन्या  
 कोहु॥ अतिभन्याकोसर्वत्रवर्जनु॥ अतिसुंदरिहुनालेसिवाहराम  
 यिन॥ अतिगर्वगरालेसवरायमन्यो॥ अतिदानगर्नलेवालियाताल  
 गयो॥ तस्कारालेअतिभन्यावडालेनगनु॥ उप्रोताविवाहमातिने  
 वरताहिआया॥ तिनमाकोजोगानिसुधाठहुरा॥ तेहानिकंन्याता  
 ताहाकेन॥ हानिलेप्रक्षलेहेयोएतोकंन्यातराक्षसलेविधापर्वत  
 मालगेहुभन्यो॥ दोआलीभंछ॥ तेसस्थमाथहिजाठभन्योएहव



तोरहससमारिकनतीकंन्यामल्याउलाभन्यो॥ तेओभंछा॥ मेरारघ  
 माचहजात्रुभन्योरहवसरभानिरथमारख्योरविध्याबलापर्वतमा  
 लग्योराक्षसकनमारेरकंन्याल्यो॥ तस्कातिमित्यपेरितिनेव  
 रजगरागर्नलाग्या॥ वाधामनमासितावनलाग्योसबैलेउपकाररा  
 गरिकंन्याल्योयाकस्कनदिहुकस्कननादिहुभन्यो॥ एतिकथाकैहि  
 कनवेतालभंछा॥ हेमाहाराजविक्रमसेनयेतिनिनमाकासिहोचो क  
 कंन्याभनिवेतालभंछा॥ राजाग्राहागर्ह्य॥ जश्वेराक्षसमाचोर ३६

कंन्याल्योतसैकिहो॥ भंछाफेरिवेतालभंछा॥ त्रसवेवरोवरहुन्या॥ उधका  
 रजुगुतिलेतिनैलेगरिल्याथारमान्योमात्रैश्रेष्ठयाहामंछाएजाभंछं॥  
 हानिरदधिताउपकारिसात्रैहुन्या॥ जश्वेपराक्रमगन्योतसैकिभायीहो॥  
 एसोभन्याकोहु॥ उधमभयाकोसाहसभयाकोधैर्यभयाकोबलभ  
 याकोबुद्धिभयाको॥ पराक्रमभयाको॥ एतिहुथोकभयाकोजथिहु  
 तसदेपितादेवतापनिसंघासाहुन्या॥ एतिसुनिवेतालफिरिखैमाग  
 यो॥ इतिसिद्धसाविरचितायांवेतालपर्यंतविसतिकायांपंचमकथास  
 माप्ता॥ ५॥ ॥ लंबोदरंमहाभिमंलंबोदंगजकर्णकं॥ पापचूंयावतिपु



नमो भगवते वासुदेवाय ॥ हे माहा राजसु नमथा कहं कु ॥ धर्म परम न्या को  
 नगर थियो ॥ ताहा धर्म सेल मन्ना को राजा थियो ॥ तन राजाले एक चंडि  
 का को देवल बनाया ॥ अधि रति रखा उकु उवनाया ॥ ताहि राजा सधाहा  
 सत चंडिका को दूजा गरेर भोजन गथ्यो ॥ तसो समयमा एक दिन काजि  
 विंति गर्छ ॥ हे माहा राजा मेरो विंति सुनु हो वर ॥ ए सोम न्या को छ ॥ अउत्र  
 को घर सुनहुं छ ॥ संपति बहुत भया पनि जस्का दाजु भाई वधु छन तस्का  
 हिस सुन्ये छन ॥ सुर्व को हृदय जो छ सुन्य छ हरि डिका सब सुन्ये छ ए

क  
 ३७

तिसुनि राजाले देवी चंडिका अलु तिगर्न लाग्ना ॥ नमस्ते देवि सिव लमा विष्णु द  
 वंदिता ॥ सिव दे हो ॥ नमस्ते सोम माहा लक्ष्मि नमो सुते ॥ अहान हान नरपा रधी  
 रा राव भयं करि ॥ वार्म सुं उधरे देवी चतुर्वक्री नमो सुते ॥ २ ॥ ताल जं घेमा  
 हाका येति र्मसि ते महर्षि ति ॥ नुर्ध के सो के द्धामे र्म रका हि नमो सुते  
 ॥ ३ ॥ इति सुति गरेर देविको आधार गगन्या देवि संतुष्ट भये र्म भंडि न ॥  
 हे राजे द्रते रा सुतिले म संतुष्ट भया ते रा या ईहा क वर मा भंदा राजा वि  
 ति गर्छ ॥ हे परमेश्वरि म पर संतुष्ट भयो त पुत्र को वर दे ॥ स पुत सुंदर  
 दानि भानि विंति गन्या राजाले ॥ देवी आहा गहिं ॥ हे राजा त कन पुत्र हो



लावलवंतुडि संतपराक्रमि होला ॥ संकनचंदनफूल अहोतापानिधूपदि  
 यगरेरच राठ्या गन्यासभनिदेविलोभंदा राजातसंगया ॥ राजाकनपुत्रजन्यो  
 एसे प्रकारले पुजागरेर मित्रपस्थामा राजाकाधोविकि होरि देखा ॥ अतिरां  
 मिष्टुहरिदेखोरचंचलमनगयो ॥ देविये विंतिगर्न लाग्यो ॥ हे देवि परमेश्व  
 रि एसकंन्यासगमे विभाभयाता मेरासिरलोतमो सेवागरुला ॥ भानिभाषाग  
 योर आफनागठमागयो ॥ तसधोविको मितसाथे थियो ॥ योमंड ॥ हे मित क  
 वावा राजाकाधोविकि होरि देखा रतसैका विरहले एसा भैरहे छुन ॥ येति ३५

सुनेरवावाले राजाकाधोविकि होरि माग्यो पायोपनि ॥ उग्रान्त आदोरवाहा  
 गयो ॥ याहागन्यापदि केरि उतै मितसंगससुराका घरगयो ॥ केहि दिन  
 सामैलोभाषागन्याथाभनेर आस्त्रिथे भन्यो ॥ हे पये मरे विको हसंनगरि  
 आवंजि मितसगवस्थासभन्यो रदेविकाथानगयो बहुतवेरभयो ॥ धोवि  
 लेगयो रसिस्वरुद्रहाले ॥ जब आरुनतयमितगयो ॥ जसैगयो तसे  
 मया को देख्यो विद्यातमा निरितायो ॥ मेरा मितमया छुन सैले जिठठुकाछ  
 मितमारेर मिति निल्यायो मंभनि अवगालका उरले योपनि ताहि मयो  
 ताहापदि बहुतविरभयो ॥ तोपनि आया नभानि खास्त्रिगेः जसैगैतसे दु



वेकासिरकाठियाकादेपितश्लेषनिश्रासयमानि॥ घरमायेजातव्यासोभासंगजा॥  
 माईतपोजातरवसमकनमारिराश्रमं॥ भतिवकीकोपासोलाईरमनतयार  
 भई॥ जसेदेविंनरतसेदेविआग्यागहिं॥ हेपुत्रितेरागुधिदेविमसंतुष्टम  
 यावरमाभंदाविंतिगहें॥ हेपरमेश्वरितिमिसंतुष्टमयौत३२३मिताजिवन  
 भतिवरमागिरदेविभंछि॥ हेपुत्रिचाउसिरजोरिदेभनि॥ वडाहर्षलेसि  
 रजोरिस्वामिकोसिरमितकाठाउमामितकोसिरस्वामिकाठाउमाजोरि॥  
 तिहुवैउद्यासंवाहगर्तलाग्या॥ येतिकथाहाकहिकनवेतालभंछ॥ हेमाहा  
 राजाविश्वमसेनलोकसिखास्त्रिहोसिरकिहोकिगिडकिहोराजाभंछ॥

क  
 ३२

सर्वोषधिमति॥ सर्वैषधिसाहुलोअंनहो॥ पिन्यावसुमाहुलो जलहो॥ सर्वे  
 सुखमाहुलोस्वास्त्रिहो॥ सर्वैसारिरमाकोअष्टसिरहो॥ एतिसुनिवेतालफेरि  
 हषेमागयो॥ ॥३॥ तिसिवदसविरसितायांवेतालपंचविंसातिकायां षष्ठम  
 कथाहासमाप्तः॥ ॥६॥ ॥ वीवादेकलंहेवैद्यस्यानेकधिकमंश॥ प्रवेसेर  
 स्मरेहसुभक्तिपूर्वविनायकं॥ फेरिवेतालभंछ॥ हेमाहा राजकथासुन॥ चं  
 पापुरमन्याकोनगरि॥ ताहाचंपकेस्वरमन्याका राजाथिया॥ सुलोचनम  
 न्याकिरातिथि॥ तनाकिरौतेलितमुखासुंदरिभन्याकिथि॥ निविवाहा  
 गन्याजोग्याकिभाथि॥ तनरौतेलिकासुखकोवराकमलचंद्रमाकावरावर



भयो॥ आषाढसुषमरोवरह भनिकोभंनसकला॥ बइनेत्रका रसकोवला निर्वल  
ककासको अमृत भन्या जसो॥ एतो अंगको सुंदरवता यार श्री छिन नैता यम  
रजापतिस कैना॥ एति सुंदरिकं न्याथिन॥ ये सो भन्याको छ॥ कसलो वरान धा  
र्यो दोला सा सुषानि छु र भावन भयाकि सांझाको वन विषे सु राई संग का र्यो  
गन्यो लाजव हुत भयाकि॥ अति नै नता भयाकि रूप भयाकि॥ अंग वन्याकि  
सधुरोषा सा भयाकि॥ या गुता छंति सवख भावले भयाका गंभिर र्थे र्यो लेयु  
त भयाकि॥ नारिनुति सहो भंनुते सा हा राज हे स मा राज कु मार या वर थिया

तिं लेले वेर देखाया ॥ राजा भंडूक ॥ हे व्रतियेति सा को तेरा मन पड्य ॥ भंडा पु  
त भंडूक ॥ हे वावा एति सा ता मेरा मन को हि पदेन ॥ राजा भंडूक ॥ न सो भया आ  
फेख यं वर गर्न जा भन्या र खयं वर पनि गर्हित भानि ॥ रूप वह हानयति म  
या को जो छ त सक न हे उ भनि ॥ त मुवन मुंदरिलो भानि ॥ इति सुनि राजा लेदे  
संदे समा दुई दुई मानि सपठायार बार को गोठा वर ल्याया रह गुरगया ॥ रा  
जा येक गरि गुरा वर छै सुध्यावन लाग्या ॥ हे वर होतं मा आ फना गुरा कहु ॥  
भन्यार ॥ एक वर भंडूक ॥ हे सा हा राजा सुन मेरा गुण म एक दिन सा पाव पल सु  
वरा जो न्मा नुहु ॥ एक पल प्राप्ता कनदि कु हो ओ पल देवता कनदि कु ॥ तो



ओपल आभर राग रहे ॥ ओथोपल खासिक नहि दु ॥ पाओपल यान सु पारिमा  
कुल मा मिथ्याई मा वर्तग रहे ॥ चलक नमंदे मि आको है न ॥ रूपक नदे थे को  
भनिक नरका लोभन्यो ॥ दो ओवर मंछ ॥ हे माहा राज जो कोहि है जल मार  
ह पाथल मार ह त्या सर्व जय जं दु प सु मनुष्य मन कि वोलि मजां दु ॥ मदे विवाह  
यो हे समा है नर ॥ रूपक नदे थे है ॥ ते ओवर मंछ हे माहा राज मे रागुरा सुना  
महति या रना लिक न कते जाना ॥ संग्रा म साम सग क सै लो स ते नरा ॥ मसंभव लक  
न आको सै न ॥ रूपक नदे थे है ॥ ओथोवर मंछ ॥ हे माहा राज मरा स्र सवे जां दु ॥ आ क  
का चल ले सब को मंछ को श्री प्रिय जां दु ॥ चलक न दो ओ आक है न ४१

रूप ज तो कुदे थे है भनि रा दे लोभन्या ॥ ते सुनि राज मंछ ॥ सबै गुण रूप  
ले युत भया को रखा क नरा ॥ हो रिका सुव हे या र मंछ नरा ॥ हे पुत एति वार  
मा क कि रा नि दु न्या कु स मंछ ला ज ले को हि विंति मर्न स कि नरा ॥ येति कथा  
अहिक न वे ता ल मंछ ॥ हे माहा राज एति थार मा क कि हो ॥ राजा विक्रम से नरा  
ग्या र है नरा ॥ आ फु जात दु नाले के त्रिलो वि भा रा ग न्यो ॥ ए सो भन्या को छ ॥ पु  
डिमं ॥ ले वडा कि को रि व्या हा ग न्यो ॥ राम न भया प नि ॥ एति सुंद सि ह भनि  
नि चा कु ल कि को रि व्या हा न ग न्यो ॥ आ फु ना स रा व रि मा व्या हा ग न्यो ॥ मंछा वे  
ता ल मंछ ॥ हे माहा राज सबै गुण वरा व रि भया का क्या हा त सै कि मात्रे मंछा ॥ रा



जा भं कुरा ॥ पाव पल सुवरी ठु जाव न्या तो सुनार सुड हो ॥ सवै को भाषा जान्या वेणारि वे  
 स्प हो ॥ सास्त्र जॉन्या प्राप्तरा हो ॥ संग्राम गन्या हा ल हो त स्काराले हा ल ले व्या हा ग  
 यो ॥ एतिसुतिवेताल फेरि रुखे माग यो ॥ ॥ इति सिवदास विरचिता यां वेताल  
 पंचविं सतिका यां सप्तम कथा हा समाप्तः ॥ १ ॥ ॥ नता मिभारति देवि श्वेताभरणा  
 भूषितं ॥ सततं वाञ्छा यष्टं यत्प्रसादा विधियते ॥ फेरि वेताल भं कुरा ॥ हे माहा राज  
 सुन कथा हा कहे कु ॥ एक साल वति भन्या कि नगरि हा ॥ ताहौ गुणा धिय भन्या  
 को राजा थिया ॥ तनका हा रमा दुहे सवाठ ये करज कुमोर सेवा गत आयो ॥  
 सधा राजा कोद सेन गन आठु थ्यो ॥ ते सो गही जो धन सर्व ल्या थ्यो वर्ष दिन मा स

क  
 ४२

को ॥ परियार सवै भाग्या एक लोभ यो ॥ एक दिन राजा सिका खेल नटा उगया ॥ तसे समय  
 मा सेवा गतो आया को राज कुमोर लेद सेन गयो ॥ सलाम मा यो ॥ ताहा पछि राजा भं कुरा  
 हे राज कुमोर का हा आया थ्यो भंदा राज कुमोर भं कुरा ॥ हे माहा राज तमा थो राय छि आया  
 थ्या भंदा राजा भं कुरा ॥ का हा वहुत दुवला हौ मन मा सुती भया जस्तो देवि हौ भंदा ॥  
 हे माहा राज या मलो पाई न तो ति मि कन होष है न ॥ मेरा कर्म अभाग हो ॥ हे माहा राज हुं  
 बिलहि सुंदे वदेन रका सुख कन होष है न ॥ वरु विष घातु भलो ह ॥ सेवा गन्या को ध  
 नि विमुख भया को भलो है न ॥ ए सो भन्या को ह ॥ बाल को साथ गनुं विकास को हास्या को  
 खास्ति संग को कलह विना सुवार्ता को गुलानु गदा हा माय हि जानु नि विवेकि दुष्ट की सेवा  
 एति छथे कले मनु ह हलु ग कु ह ॥ सानु वोला ठु ह ॥ आयु कर्म संपति विषम रण



ति पाम्थोरु गमै देवि हुहु ॥ हे माहाराज वडा राजा को सेवाग न्या कहत काल निष्क  
लभ योरहुवल भया ॥ भंडा राजा भंडे ॥ हे राजकुमार मलाई भोक लाग्यो त्यो भंडे ॥  
हे माहाराज सवन माषा वल्लुका पाई येला भनेर एताउता हे रे एखुवला काफल  
लाई दि योर राजा लेषा यात प्रभया र भंडे ॥ हे राजकुमार वा ठो दे घाई दे र म  
वोर हाहु भंडा घाठो दे घाई दि योर राजा हवी रग या ॥ राजा लेते स सिवक को जि  
नुवाठो गरि दिया ॥ कोहि दिन राजा का काज मा समुद्र कातिर पठा या गयो ॥ जं  
सैग योत सै देविको मोठ देव्यो र देविको राजा गयो र एक नाई का जाहा देव्यो ॥ य क  
हिलाग्यो ॥ यहि लाग्या को दे विर भंडे लागि ॥ हे पुरुष क्या काम ले या हा आइ सर ४३

भनि ॥ त्यो भंडे ते राख पका ले भले संभोग गन कोई का भयोर आया ॥ भंडा नाइ का  
भंडे ॥ मसग कोई का भया ए खुंड मा स्नान गर भनि ॥ स्नान गन कुंड मा ज सै पस्यो  
त सै आ फ नान गर मा पुग्यो ॥ तोह तांत राजा थैक ह्यो ॥ राजा भंडे ॥ मयति ताहि  
हं हु भयो ॥ ते स सेवक लीये राजा ताहि गयो ॥ ताहा कुप्रांत तिहुइ आया का दे वि  
कन ज सै देविकन नमस्कार गारे जाहा ते स नाइ काले राजा सेवक न दे वि राजा क  
न अति सुंदर देवि वडा छति संवत भंडे ॥ हे माहाराज क्या आग्य हुं क भन मगर ला  
भनि ॥ राजा भंडे ॥ यहि मसखनं करि छति ॥ मेरो आह मा न्या भया मेरा सेवक कि  
खाहि हो भनि राजा ले भंडा नाई का भंडे ॥ मता तिति पर छति थियो र कसो गरि आ



भाकी कि भाय्ये दुसरा ॥ राजा भंडूरा ॥ मेरा हजुर माय सो भानि थिर ॥ लोचन को प्रमत्ता क  
 भन्या मेरा सेवक कि भाय्ये हो भंडा ॥ लोचन भाति रुपां ता विवा हागन्या राजा सेवक दु  
 वे चरैया ॥ एतिका कति कन वेता लभं ॥ हे माहा राज विक्रम सेन राजा सेवक मा  
 को सत्यवादि कह ॥ राजा भंडूरा ॥ सेवक सत्यमा ॥ वेताल भंडू ज स्त्रे देवां गराया  
 इकन सेवक कन दियो लोचना हा सत्यमानाहि ॥ एसो भन्या को ॥ जो ठपकारग  
 हे तस देवि जो साधु भलो ॥ तो का हा गुता विगा रगन्यो कन ठपकारग ॥  
 लो साधु हो भनि साधु हे भंडूरा ॥ एतिसु निवेता लफेरि रूपे मागयो ॥ इतिसि  
 वहा सवि रसितायो वेताल पंचविं सतिका यो अष्ट संकथा हा समाप्त ॥ ८ ॥  
 गराय परया भन्या हे सया नां सरस्वती ॥ यस्या प्रसाद मासा द्य वि दग्धा मिक

क  
 ४४

यामिमां ॥ फेरि वेताल भंडू हे माहा राज सकथा हा कहं कु सुन ॥ एक मदन पुर भन्या  
 को नगर थियो ॥ ता हा मदन विर भन्या को रगा थियो ॥ ताहि हिर राप दत भन्या को वा  
 निना थियो ॥ तस्कि को रम दना भन्या कि रहि ॥ तो मदन से नाव संत ह तु मा सेल  
 न आरा मगन भनि रुद्या नवन मा गे ॥ तो दिवन मा धर्म दत को पुत्र सो मदन भन्या को  
 वा नि यामि व्र संग ता हि गयो ॥ ते सकं त्या कन देख्यो र प्रतिचंचल भयो र ये सो भन्या  
 एकं त्या मेरि स्वा स्ति तुल्या वन पाया मे तो जि नु नु संफ ल डु हो हो भनि त सका विरह  
 ले रात डुः खले का सो गव विहायो तव खे लन ताहि आयो ॥ तो मदन से ना पति फल ठि  
 पन ए लो आ था कि रहि ॥ ते सकन देख्यो र समा ल्यो ॥ हे गुं हरि ते रा डु ई नेत्र का मध्या



माजोतिलकहृयोमल्लवानजसोसोभाहृजोभुजु।टिहृधनुंजसाहृतोधनुवीनलेका  
 विघ्नगहृ॥भानिसोमदतलेभन्योयोधनुर्विद्याअपुर्वहृक्याहाभन्यासरिरमाघा  
 उनलागिभिप्रपसेरवेयागहृ॥सोसुनिमदनसेनाभंहे॥हेपूरुषएसोनगरकं  
 न्यादोबहोलाभंदासोमदतभंहृ॥हेसुंदरिकमलयजस्तानेत्रगयाकाअवहृ  
 रावहुतेथियारतिसवेहृउरईउलेअहिल्लाकनसंभोग्यगयातपस्यागया॥  
 अघिकिआहृसि।किनविगान्योहो॥तवहेरहृदयजोहृतोसुखाकोतिरिरा  
 होतेस्माकामदेहुकाअग्निलेयोल्यामायोगर्तुकामहो॥योनगर्तुभानिकोभंहृ॥  
 भंदायोभंहेसोसुजतिभन्योततरहेरपाचदिनमामेदेव्याहाहुन्याहृविभाहाभ  
 यापहि॥तिमिसगसंभोग्यगरुलातवसेरास्वामिसंगसंभोगगरुलाभनिरकंन्या

क  
 ४५

घरगै॥सोमदतवानियापनिआफनाघरगयो॥जवव्याहाभयोतववेहितास्वामिलेअ  
 गालोहाल्योरसंभोगगर्तुहृगयोरेतेसैलेहेकि॥हेखासिमकत्याहृदाएषपुससग  
 संमतरगयाकोहृभानिजेभयाकोधतांतकहितोसुनेरस्वामिभंहृ॥तोसाचोभयाजात  
 वभन्यो॥तवसंपुर्तोसोहृसिगारगरेरजाहाभाकाराविथिताहिगै॥वडारातमाजसैगै  
 तसैचोरलेदेव्योरसुसिभयो॥एसकाकपरागरुनाहियातापरसस्तहोलाभानिमनसा  
 चितायोस्चोरभंहृ॥हेसुंदरिउरनभयाकिरुलावडासधारातमाकताहंहेरभंदा॥  
 जाहामेराप्रातादेविकोदुलोमानिसहृताहिजांहुभानि॥एकैएसाएतमाउरलादे  
 नक्याभानिचोरलोभंदा॥हेबंहेहातमाधनुर्वासापुंग्यायेरकामदेहुसाहाहृभानिका  
 नअघिकोहृतांतचोरथिंकहि॥चोरलेपनिवेसकोसिगारकिनभंगगरुभनेरहृ



डिहियो॥ जाहा सुत्या की धियो ताहि जे॥ त्यो सोमदत्त भंडू तको हो देव कन्या हो सि मनुष्य  
 कन्या हो सि दैत्य कन्या हो सि रिषिकन्या हो सि नाग कन्या हो सि भंडा त्यो भंडे॥ हिरण्य  
 दत्त भन्या का वानिया कि छो रि हुं सदन सेना भन्या कि सहुं॥ जख नवन मा ति मिले स मा  
 त्या छो त्यो सहुं॥ आज विवाहा भयो रत प्राह जुर आया व्याग्रा रुचि हू त सै गरा॥ भंडा  
 तो भंड॥ यो हतांत ते राव्य हिता खा मिथै कहि सकि कहिन स भंडा सवै मैल क ह्या को  
 कृभाति॥ सोमदत्त भंडू॥ विना क परा को अलंकार विना धिव को भोजन विना खर को गा  
 ठनुं विना पुति को मैथुन त्यो सवै वेया हो॥ परस्त्रि संग को प्रिति धन को ना सहु ह॥ त  
 स्कारा वडा ले परस्त्रि संग संभोग गनुं॥ स्त्रि भन्या का कत्ता हूर मित्र विष हू ह

क  
 ४६

वाहिरामो उंहर तेखो ते भगग न्या विषले ना सहु ह॥ स्त्रि को जात रूप सो हू रका  
 संग प्रिति गहूर॥ मन ले आ को चिता ठहं॥ तस्कारा खा स्त्रि को प्रेम को रि है न  
 व्याकुरो पेट मा हू त्यो जि भ्रामा हुं देना॥ जो जि भ्रामा हू तो वाहिर हुं देन जो वाहिर हुं हू  
 त्यो पनिसा चो हुं देन॥ तस्कारा अनेक चरित्र खा स्त्रिका हुं हू न॥ जो हुं हू न कति  
 मनु स परस्त्रि को संभोग गर्दिन॥ ते राव्य हिता खा मि हो जा॥ भनि विहा दियो र  
 त्यो जे॥ तो हतांत चो रथै कहि॥ चोर ले यनि जा भन्यो र आ फूना खा मिथै ग रे र तो ह  
 तांत कहि॥ वडा पु तिले संभोग अलिंग न गयो॥ एसो भन्या को हू॥ को र्त्रि लिको रूप  
 खर हो आ फूता काले हुं ह॥ प्रति पदा स्त्रिका अनेक रूप ह॥ कोरा को रूप विद्या हो



जोतपसिद्धतकोरूपसमाख्याहो॥ एतिकाथाकहि कनवेतालमंछ॥ हेमाहाराज  
 विक्रमसेनराजितिनमाकोडलोधर्मात्माकहा॥ मंदारमंछनचोरडुलो॥ वेता  
 लमंछकाअर्थजेमंदार॥ राजामंछन॥ आफूवोहिताखामिआकोसितवितरहि  
 कुभनिहोडिहियो॥ विरानापुरसबलेराजदंडहोलाभनिहोडिहियो॥ तोका  
 धर्मा॥ जोरकातातोकेहिबिबेनतस्काराचोरडुलो॥ येतिसुनिवेतालकरि  
 रुघेमागयो॥ इतिसिवहसाविरवितायोवेतालपंचविंसतिकायांनवमक  
 थासमाया॥ २॥ ॥ विश्वविजप्रहोहार्थेबुलधानमुयास्थित॥ धनुसक्ति क  
 मंयंदेवंधरतिरूपमिस्वरमा॥ करिवेतालमंछ॥ हेमाहाराजगोड ४९

हेसभन्याकोनगरिह॥ ताहागुणसेपरभन्याकोराजाथियो॥ प्रभवचंडभन्याकोसंवि  
 थियो॥ तेसमंतधर्मेसुनावनलाग्योसिवपु॥ जादानभुमिदानसोवरीदानवि  
 त्रकनबिबदानगर्तुजुवानबेलनु॥ मंदतापिनुगंगामाअतिपातनगर्तु॥ दा  
 नधर्महेसमावठागुनु॥ एतिसुनिमंतमंछहेमाहाराजसुनधर्मसाख  
 सुन्यापछिताधारसंकासुन॥ आफूलेनसकाकोहेसमालाठनु॥ साकिहेन  
 योसरिरकल्यातरहन्थाहेना॥ संपतिपतिरहेहेनएकदिनआठकुणदि  
 नजांहुकालभन्याकोदिननाजिकाउहु॥ संपतिरसरिरदिघहेना॥ त  
 स्काराधर्मकोसंग्रहगर्तु॥ कुपतिनगर्तुअहंकारिरिसलोभद्रत्यादिनग



मातसदेवि परमेश्वरि ठां है नन्दा जको दुहरवायिं ह खरखिया वन्या ज  
 तिको तिकु सो गरिराग्यमा रहं हन्दा मनो लागाई रभै सिवरोवर है नन्दा ज  
 को देहि देवि गोसुत पत्र डु हन्दा तिमारा हुन्दा मात्रा होई नंर लो भनो  
 लाखुरसिंग हुन्दा दुखाना ता भै सियनि हन्दा तिला हासानि है नन्दा गाई  
 ताति र्वस विवेद देवता हेरुका आसप हन्दा तेस्कारा गाई मान्या तिन कन  
 दुहिषान्या हन्दा देवाहितर्य राग हन्दा तन गाई कन जो पिडाग है त्यो मुख  
 पापिष्ठ हो ॥ एतिसवै मात्रे धर्म निर्भय दान हो ॥ जय जंतु को भयया प्रभैर ह्या  
 कृतक न निर्भया दिया त्यो धर्म है ॥ जो मनुष्य मुखमा त्रिरायापिक न सरागो

क  
 ४८

न्या कन निर्भया दिया जो मा है त्यो माहापापिष्ठ हो ॥ त्यो मावाधरा हि अधिक हो  
 जो आर्की का मा सुलो अफनु जिठ पो ह स ह त्यो पति पाया मा हो ॥ मा सुभन्या को सर्व  
 को वरोवर हो ॥ आर्की को मा सुषान्या अफनु मा सुषां ह ॥ त्यो नरक जां ह ॥ जो पालि  
 कन मारिषां ह तस्का दुखये सो देवि ह ॥ अल्यु विकल रोगि अंहा वीर गुई सो धीरु जो  
 जंभजं मां तडं ह ॥ तस्कारा तिल धेनु सुवर्ती धेनु रौप्य धेनु एतिलुप्या विदान गनु  
 पाप मुक्त ह ॥ उप्रोत मदसा न्या जलोयात कि को हि है ना ॥ का हा मन्या पहिले लाज  
 हरा ह ॥ धन को नास ह ॥ असुवि ह ॥ एतिकातिक ह ह आर हो वमदसान्या  
 को ह ॥ तस्कारा मदन मानु ॥ माहायात क ह ॥ मा सुखानु पानियात के ह ॥



संस्कारगर्भीलेठन्याघान्या हानूभनिश्च हावन्पाठपदे सहिन्या ३ तिकन वरोवरया  
तकहा ॥ वहुतका भनु ॥ एवंविधैर्विकैरसै विधिलेतोमत्रिकाधर्मवाक्यलोधर्मसा  
लाग्यो ॥ ठहाठप्रोतचोरलो राज्यमाठपउगर्ने लाग्या ॥ राजायनिधर्मकावलस्वर्गग  
यो ॥ राजाको पुत्रधर्मधो जामन्याको राजाभयो राजाभैकन अभयचंडमन्याको सं  
त्रिकनसवैपरितारसमेत देसानिकाल्यो ॥ धपायो राज्यकंठकिगयो ॥ ठप्रोत एक  
दिन वसंतहनुका समयमा राजा आशिरानिसमेत आसमकडा खेहन गयो ॥ ता  
हा एक पोषरि देख्यो पोषरिवाठ एक कमल लियेर केठिका हातादियो केठिका

को  
४८

हातवाठकामलषस्योररानिका पावमायनोरयाठभाग्यो ॥ होश्रीरानिका सरिरमाचंद्रमाका कि  
र्निलाग्यारफोकठुवा ॥ ते श्रीरानेकाठाठावाठमुसलचलायाको सुनिर हातमा व्येथाभयो ॥  
एतिकथा कहै खेतालभंछ ॥ हेमा हा राज येतितिनमा सुकुवारिकहु ॥ राजाभंछन ॥ ज  
स्का हातमा व्येथाभयो त्यो सुषिहो ॥ एतिसुनिवेतालफेरि रूखेमागयो ॥ ॥ ३ ॥ तिसिवदा  
सविरसितायां वेतालपंचविसतिकायां दसमकथा समाप्तः ॥ १० ॥ ॥ प्रताप्यसिरसादेवं  
पितामहमहेश्वर ॥ कोतुहलं प्रवक्तानियत्रकेनापिभाषितं ॥ फेरिवेतालभंछ ॥ हेमा हा  
राजमकथा कहंछु सुन ॥ एकगुराकरनामनगराथियो ॥ जायवल्लवभन्याको राजाथि  
यो ॥ प्रजाके सभन्याको संलथियो ॥ तसकिभाय्योलाहिभन्याकिथि ॥ तो राजासनमा



वितावन लाग्यो ॥ राजा सि पाइक न कपा फल हो ॥ यो सुंदरि सि संग रात दिन संभोग गर्नु सुष हो  
 भनि राज्य को भार काजिका हात आ फु संभोग गर्न लाग्यो राजा रानी काजि गर्न लाग्यो ल  
 हि मा भंहे ॥ हे स्वासिका कार सा बहुत दुवला हो भंदा तं त्रि भंदा ॥ हे पृथे सकन राजा विता ठ  
 क चिंता भन्या को वडो रोग छ ॥ राजा स्वासि संग आ सक भोग्यो भंदा भाय्यो भंहे ॥ राजा हो  
 विंति गरम तिर्थ यात्रा हां हु भन ॥ येति ते समं त्रि ले भन्यो विदा भयो तिर्थ यात्रा गयो ॥ ज  
 द्दहा सा समुद्र काति रमा रा मेश्वर को दर्सन गरे राजा सा समुद्र का मा जमा एक कल्प द्दहा सु  
 व री को देखा क सो भन्या रा ता हा गा भया को मोतिका फूल भया को मुगा का फल भया को रु  
 स्ता द्दहा सा एक सुंदरि दिव्य विद्या ठना मा वसे रहा त मा विन्या लि वेर तिन सि जो क ठग

क  
 ५०

दो देखो यन पहायितं विहं कर्म भुमौ सुभा सुभा ॥ प्राप्यंते च वतत्रैव निपते विधिना सदा ॥ १ ॥  
 देवापतं जगत्सर्वं स देवा सुरमा नुषं ॥ तस्मात्सर्वं प्रजत्नेन सयेव चिंतय भू सं ॥ २ ॥ पूर्व जं  
 न्माघितं यावं कर्म पुंसां सुभा सुभा ॥ तदेव सर्वं जंतुनां ऋष सं हा रका रसां ॥ ३ ॥ इति याठ गरि  
 रुडि ॥ एति कौतुक मं तले देखो मन मा विता यो न पत्ता कुनु कु रो प्रता द्दहा को भया  
 य नि न भंनु ॥ ये सो देखा को क्पा दवा भु भनि प हि ले द तां तक हो राजा ले सु न्योर रु के रा  
 मेश्वर का मो ठा ग द्दहा से न गयो र व त्या यो ज से तो द्दहा कल्प द्दहा ते हि ना द्दहा स म त आ ठ  
 द्दहा राजा ले ज से देखा त से ता हि ग या ॥ द्दहा जो पा ता लग यो ना द्दहा भंदि न ॥ सकन रु स  
 च रु द्दहा सि का दिन रु को त न हि या सकन हो ड भंदा राजा ले रु को ता दि ठ लाभ न्या रह वर भ



निविहाग्यापरस्यरुतिवठाया॥ जवकसुखतुर्देसियायोतवनाइकाभंडे॥ आजकार  
तमानिमिमथैश्याभनि॥ राजालेहोवसुभन्यारहामारवकुलियारअदेखावमावस्या॥  
जसैवस्यातसैराक्षसलेआएरनाइकाकननिल्याकीदेखाहातमारवकुलियेरराजाधाय  
हेराक्षसपापिष्टस्त्रिधातककाहाजांहुससगयुद्धगररातवजाभनिभंडा॥ राक्षसउरयो  
आजभयभयोभनिराक्षसलेसंघामान्यो॥ राजालेपनिभयमानामकनपनिनिलरुकिभ  
निसंघामान्यारुहरिहातमालियारराक्षसमारिकनयेठविरेरदेवांगरानिकास्या॥ जसैनि  
कास्यातसैनाइकाभंडे॥ भलोभलोहेमाहाविरआजवठोठपकारगयो॥ एसोभन्याको  
हु॥ सैजेसैजेनेति॥ हेरसवैपर्वतमासुवरीहुहेनसवैहातिथैगजमोतिहुहेन॥ एका

क  
५९

दहातिथैहुंहु॥ साधुजनसर्वत्रहुंहुन॥ एकादहुंहुनश्रीषंडसवैधनमाहुंहुनएकादव  
नहु॥ भनिनाइकालेमंदाराजाभंडा॥ हेसुंदरिकाकारालेराक्षसलेतिमिकननिल्यो  
भंडाल्योभंडे॥ विद्याधरमेरावावाहुनतनाकिपुत्रिसुंदरिभन्याकिसहुं॥ मेरावावातनघा  
भोजनगहेनथ्या॥ एकादिनवावालेभोजनगर्भवेलासामआनरक्षरुसवतुर्देसिका  
दिनतकनराक्षसलेनिलोसुभन्यारमेलेवितिग्याहेवावासरापदियौहुपापनिगरा॥ भ  
निविंतिगदीफेरिवावाभंडा॥ जवकोहिसुखआइपुग्यातवराक्षसकनमालीतवसरा  
पदेविमुक्तहोलिसुभनिवावालेभन्याकोथियो॥ आजसरापदेविमोहभगा॥ आजमवा  
वाकननमस्कारगनहुंहुंभंडाराजाआहागहुंहुं॥ हेसुंदरिआजतिमीलेउपकारगयोभ



निमोह होत ॥ तिमिले मेरो राजनगरि हेरि कनक वपसि तेरा वावा को दस नगर्न जालि सभंदा  
 फेरि विंति गर्छे ॥ तव सतसे गरिकन तो नार्द्र काले प्राप्ता विद्या समनगरि राजानार्द्र काहु  
 वै ते सै जलमा पुझा ॥ आफना राजथानिमा आर्द्र पुग्या ॥ जसै पुग्या तसै मंढले नगरमा हाठ दो  
 गान्धजापता कावाजावा दित्र वेद पुरान गित मंगला सब ठासा ह हर्ष गयो ॥ सबै लोग भेठि  
 लि कन दस नग आया ॥ उहाउ प्रोत केहि दिनमा फेरि नार्द्र का विंति गर्छे ॥ हेमाहा राज विहा  
 र्या होयो सभ्यो हुभनि राजा मंछ ॥ केन कारो न ॥ हे सुंदरि तेरो विद्या कता गयो कषाका  
 राले तेरो विद्या आया न भदा त्यो मंछे देवांगरा भै केन मनुष्य विषे आसक्त भै रजाले यस्तो सि  
 वराषनु ॥ निष्ठाचार वहुत भयाको स्थिर बुद्धि भयाको ॥ वडो विचार जान्या दृष्टा वडो भयाको

क  
 ५२

धुत्पात्रे नभयाको रिस नभयाको वडो दाता धर्मात्मा लक्ष्मिले युक्त भयाको सत्यवादि ॥ उज्ज्वल कन  
 कार्य गर्छो ॥ एस्तो मंढ राषनु ॥ एति कथा कहि कन वेताल मंछ ॥ तो देवांगरा ल्या उदासा हा  
 हर्ष वडाई गर्दो यो मंत्रि थियो तो छाति फुटि मयो ॥ जानि नक ह्याति मिपनि छाति फुटि मरो  
 ला ॥ राजा विक्रमादित्य मंछ ॥ मंत्रिले त्यो कषाहा रन लेप्यो ये सोचि नायो राजा देवांगरा  
 सग आसक्त चित्त होला राज्यको संभार गरेन प्रजा अनाथ हुनं ॥ राज्य छु यकन जाला ॥ एस्तो  
 भयाको छ ॥ विद्या नभयाका मुनुष्य कन सुती सोछु छु ॥ तस्दे समा राजा छैन स दे सका प्र  
 जा कन सुती हुन्छ ॥ अधाररा भया प्रजा कन सोच हुन्छ ॥ विना संतान को मैथुन पनि सोच हुं  
 छ ॥ तो मंत्रि बुद्धि को चरे हो ॥ हे सविग्रो भनि ते सै सुताले मयो ॥ मंदावेताल फेरि रुषेमा



गयो॥ ॥ इति सिवदास विरचिता यां पंचविंशतिका यां येकादस कथा हासमापूः॥ ११॥ सबद्व  
 स सुधापुरी लोलक लोलमालि निसरस्वतिं नमस्कृत्य विदधामि कथा मिमां॥ फेरि वेताल  
 मंछ सुनम कथा कहंछु॥ पुडापुर भन्या को नगर थियो॥ ता हा पुडा मणि भन्या को राजा थि  
 यो॥ तस को पुत्र हरिश्चामि भन्या को थियो॥ त्यो अत्यंत सयवत केवल काम देव को मुर्ति हो भ  
 न्या जलो थियो॥ त अर्द्ध स्वर नाम धासरा कि छो रिया हा गयो॥ तन को परस्पर पति बढ्यो॥  
 एक को हि दिन मा गृष्म ऋतु का समय मा घर का कौ सिका मा डुवै जाना सुत्पा का थियो॥ त  
 स्ते समय मा आकास गा मि विद्या धर गाले रावं राय वतिकन निर्वी रा सुत्पाति हेघो र काम दे  
 डुव डो र रावं राय वतिकन ठा यो रा विमान मा चहायो र आ पूरा चरै गयो॥ जसै आ पूरा स्वामि

क  
 ५३

तस्कार रा घानु पिनु वर लोक को हो॥ हिनु पर लोक पाई छु॥ उपांत जाहा मिह्या मागे थ्यो ते सघ  
 र कि व्रां सिले वडा वडुक मिह्या ई दुद सर्व र प्रभति सरा जाम वना ई मा हा को हि मंछ वडुक  
 भन्या का कला हुंन॥ हिंग जिरो मरिचुन समेत गरि मास को आठो फाठुनु अडुवा पुरी हा  
 लनु तव तेल का करा यि माय का वनु सुं हर सुवास को मल कुं कुं का जसो सुवास हुंछु॥ ती  
 सुहरि खिले पति संग हांसि मुख ले दिया का वडुक मुख मा हाले र मा ठुनु ति धन्य भं ब्राहुं  
 न॥ रसा प्रकार का वडुक मिह्या ई सवै ठय रा मा हाले र ते स ब्राह्मण कन ब्राह्मण ले दिया॥  
 त्यो मिहु क ब्राह्मण ले लि छे र वर का रुष म नि गयो॥ ती घानु सरा जाम वर का रुष म नि रा  
 वेर आ पूरा हात पाठ धुन गयो वर का रुष मा स प सुत्पा को रहे छु॥ उद्यो र तो ब्राह्मण का घा



नामा विषय सा श्रद्धि यो ब्राह्मणाले देखा न भोजन गन्यो ॥ भोजन गमाय छि विषये बुझे रू  
सरा का घर गयो ॥ हे धां रीति मिले सकन विषय दियो मेरो सरा गमयो भने रूरां सरा गमयो  
गृहस्था ब्राह्मणाले प्राप्ति निवाहु निधायो ॥ जा ब्राह्मण वंध गन्यो ॥ ए सो भन्या को ह  
जय कारि जो हत स्कन पाप न गर्नु ॥ आफै भन्या को हो ॥ नहि ते रको रूख को काठ हू आफै ह  
रह ॥ एति कथा कहै देवे ताल भंडा ॥ हे माहाराज विक्रम सेन तो ब्राह्मण भन्या को पात क  
क स्कन हुं ह ॥ सर्ये कन हो कि वाहु निक न हो गृहस्था ब्राह्मण कन हो तो सो भन्या ॥ राजा  
विक्रम सेन भंडा ॥ गृहस्था ब्राह्मणाले कोहि जाने न त स्कन कपा पाप हू क से कन पाप क  
हे न जो विना विचार ले भंजात से कन पाप हू ॥ एति सुनि वेताल फेरि रू बेमा गयो ॥ १२ ॥

इति सिद्ध सविरचितायां पंचविंशतिकायां द्वादशकथा समाप्तः १२ ॥ ॥ नमस्य विहविजादिस्थि  
ति प्रलय कर्मने ॥ विश्वनाथ कनिमार्त सुग्रधारय संभवो ॥ फेरि वेताल भंडा ॥ हे माहाराज सुन सक  
था कहं हू ॥ वेडुहा स भन्या को एक न गरि हू ॥ माहाराज धिर भन्या को राजा थियो ॥ एक धम ध  
ज भन्या का वानि जाथे यो तोर हो रिहा मिनि भन्या कि थि ते स्कारुप ले सुख्य पनि चंड हुं थ्या जो  
को हित स्कन देखा मुहू भये न पृथि विमा भ्रमं राय गर्थ्यो ॥ मुनि हे रूप निन स्को पिता धन का  
म हू ले विवाह को चर्चा गरे ता तो जोवन वति भरखा बुका घरे वसि ॥ ते सन गरि माचो रको उपडे  
भयो र सब पोवासि राजा थें गयार विंति गयो हे माहाराज समस्त नग लो र ले विगान्यो भ  
नि विंति गदी राजा भंडा ॥ अवगुंता नो रको ठ पडु हो वैन रात माचो कि सह रमा राखा रप नि



सहरमाउपदेहुन लाग्यो ॥ राजासिताउन लाग्यो ॥ मरुकेले जंकुमनिराजा अधा रातमा ए  
ले गया ॥ धनुर्वा नढालतर्वालियेर राजा हिया ॥ सहरमा एकमा हा कालो उराउनुमानि सहे  
षा राजा तंहुन ॥ तकी हो समंदा मरीर हुमन्यो चोरले सुधायो तकी हो मन्यो दुवैले भन्या भठि  
या मन्यो दुवै जाना मयेर सहरमा हिया ॥ चोरले राजा कन अध्या राकुना मालग्यो राजाले चोरको  
घरे देषा चोर मंहु ॥ तिमिई दिवस मतमो विछाउना वनाई दिहु ॥ भनेर चोर गयो एक के छिआ  
इर मंहु हे माहा राज तिमि चो जाउ चोरले तिमि कन विश्रय माली भनिराजा मंहु ॥ वाढे देषा  
इहे मन्यो रते के छि लेवाढे देषा इहिरा जा गया ॥ हर्वा रुपग्या फेरि दो आदिन राजा लेते सरो क  
रको जाउ छे चोर चोर जु ध्यगन लाग्यो हा तिघो रापिया दावहु ते मान्यो राजाले चोर जिठे समा ५६

पावलि यो रिले वाध्या रआपू सहरले गया ॥ वाजावजाया रचोरलाई सुलिमा हालुन लै गया ॥  
सवै यो वासिद सघरका जालवाठ मंजु लाग्यो हेरवडो चोर ल्याया सहरमा चो न्यो यो हि हो धर्म  
धजवानिया कि छोरिले देषिरवहुत पतिवंत मन्यो रआफनावा वार्थे मंहु हे वावा ससरो रकन  
मवदेहु ते ससोरकन होडा वमंदा वावु मंहु ॥ हे छोरि जस चोरले राजाको सेना वहुते मान्यो त  
स्कनक सो गरि होडाउ माहा अपराधि चार सगते सो क्या पति मन्यो ॥ त्यो मंहु त्यो चोर रकन  
याता मते सै सित सति जाला मंदा ॥ धर्म धजवानिया राजा छोगयो ॥ राजा छो वितिगन्यो हे मा  
हा राज एक को छि सुनका अरु सविदिहु एससो रकन होडा मंदा राजा मंहु ॥ येला कुरान  
गरमंदा वानि मा मंहु ॥ के सो वमिति ॥ का गति ये सुवि उदेना ॥ जुवा खेल्ना ये सो सो हुन



वाहरथे धैर्ये हुंदेन ॥ मुदसा न्याये धर्म हुंदेन ॥ सर्वथै विचार हुंदेन ॥ स्वास्त्रिथै काम देउ पुता हु  
 देन ॥ राजा मित्र कल है हुंदेन ॥ एति थोक साबो है न ॥ एति भंडा भंदै चोर कन सुलि माहा न्या ॥  
 नोवानि जाकि होरि चोर थै गै रय सो भनि ॥ हे चोर तम स्वास्त्रि मभया तिमि मभया मसति जाला ॥ ए  
 तिसुने रय पहिले रोयो पहिले हास्यो ॥ ताहा पहिले चोर मभयो ॥ नोवानि याकि होरि चोर को सरिराले ये  
 र सो लोवनाइ कनडा सो सोला मायसि रत सै आका सगानि नि देविले देवि न भंडि न ॥ हे पुत्रि  
 त देवि मसंतु मभया वर सो हुंदा तयो भंडे ॥ यो मे रोखा मिसय वर्ष जिठ न्या मिरा सय पुत्रु वं  
 न ॥ भंडा देवी आग्या गहि न ॥ हवस भानि न ॥ चोर ठुयो राजा ले देखा रवडा हवले तन को वि  
 वहा गरि दिया वडो मान गरि राजा ले अंक माल गन्या ॥ तश्चोर सगति दुई स्त्रि पुरुष यनि विषय

५७

भोग विलास गन्या सुष संतान वृद्धि भयो एति कथा कहिक न वेता ल भंड ॥ हे माहा राजा यो  
 चोर का अर्थ ले पहिले हास्यो पहिले रोयो कहु ॥ भंडा राजा भंडे न ॥ यो चोर ले रोया थो य सो वि  
 ता यो हे रत स्त्रि को आट साहस मे राम न्या समय मा एति गरि ॥ त्यो स्त्रि को जोवन रूप वध्या  
 गयो भनि रोयो ॥ हास्या को कारता ए सो भन्या कीहु ॥ जथिं लाहि न कुलाहि हुंदि न ॥ अकु  
 लिथे सरस्वति जां हि न ॥ गुण त्रथै स्वास्त्रि रमा ठि न ॥ वडा यवत मा ते घव संहु यो स्तो रि  
 तहु भनि हास्यो ॥ हे रस्त्रि को साभा वरी लाग्या को सग एति गरि भनि हास्यो ॥ एति सुनि वे  
 ताल फेरि हूँ भोग यो ॥ इति सिवदा स विरवि ता यो यंच विं सतिका यो यो ह सकथा समा  
 प्तः ॥ १३ ॥ ॥ गता नाम धियश्चं डो गजक्रो माहा वला ॥ समि भवतु सु एतो वरदा विनायक



केरि वेताल भंड ॥ हे सा हाराज येक कौ सांविभन्या कि नगरि थीयो ॥ ताहा सुविचार भन्या को राजा  
 थियो ॥ तस किरानि ससि प्रभा भन्या कि थिन् ॥ चंड प्रभा भन्या कि रौते लि थिन् ॥ बुधिसा ग  
 र भन्या को काजि थियो ति चंड प्रभा भन्या कि राज पुढ नौ यो वन भया मा एक दिभ सवि सग  
 उद्यान वन मा घेलन गौ ताहा फुल ठिपन आठित सै विषय मा एक खासि भन्या को ब्राह्मण  
 आयो ब्राह्मण ले राज कन्या क नंदे धो राज कन्या ले पनि ब्राह्मण क नंदे धि परस्य र पति भ  
 यो ॥ ते स्को रूप देवे र काम देव चओ ॥ काम का वारा ले सुहो भयो र भुमि मा लोयो जिहु दो  
 हु किम त्या को हु भानि धा हा पाये ना ॥ ए सै स मय मा मुल देव धुर्त ससि भन्या का ले दे धा मु  
 देव भंड ॥ हे ससि एक ब्राह्मण को अवस्था सिधि भंडे ॥ हे ब्राह्मण का कार राले ए

क  
 पृष्ठ

तो भैरे हे ह्क ह भंडा ब्राह्मण भंड राज कन्या संग आ सक्त भयो र ससि भंड हे रवा ठमा  
 हि उदाय ले मनुष्य का पंचो द्वि जो हं तिन काल जाप निहु कं न मत्पार्त्रे पानि हु कं न जे सै  
 सुंदरिका भुहु ठिका धनु बटं कार कान माय यो भ्रम न भयो लिह दय मा राखा ए लो  
 सुष हु हो हो भनि स मर राहुं ॥ ज सै नेत्र का वा रा प या त सै अवेत भयो लज्जा पनि रह  
 दे न न मत्पार्त्रे के हि रहै न तव ए स ब्राह्मण क न सुंदरि लि का दृष्टि वान ला ग्या भनि स  
 सिधुर्त ले भंडा मुल देव भंड ॥ हे ब्राह्मण हे ब्राह्मण का हा यलो भैरे हि ह्क स भंड ए  
 लो सो भाव ता सि को यो हो ॥ भंडा ब्राह्मण भंड हे मुल देव संसार मा लि स भोग दे धि आ की  
 सुष के दिहै ना ॥ स्त्री र्ग को सार का ह्क भन्या लिह तस्का र ता त्या शि भन्या का सुष का वि रुडा हुं ॥



स्त्रिभन्गाका अमृतका कुडुं ॥ घरपत्ता स्त्रिको कसेवना यो सबै रत्नमा सेहू खीड़ं ॥ तनका नि  
 मित्य छनको संग्रह गन पड़े ॥ जस पुरुषले सुंदरि नारि सित अलिंगन गरि नतत को जिठु  
 वथा ह ॥ अति सुंदर सा हासन भया कि सिरि सका फूल जला कतल हात भया कि सति  
 स्त्रि सग संतो ग्यगर्न न पाया जिठु वथा ह ॥ स्त्रि मुद्रा मि ति ॥ काम देव कि मुद्रा भन्गा कि  
 स्त्रि हो तो सबै संपत्ति को विरुवा ते लिकन हो डेर जो वैराग्य लिख तो मुर्वे धाड़ हो वैराग्य को  
 तामि थ्या फल ह ॥ तिम उषा ता विदे या दुनाले को हिना गाड़ ह ॥ को हि जग धारि ड ह  
 को हि पुडु सा ड ह ॥ तिस वडु धित ड ॥ या का का जो ल कां कि जला मठ गन्या कि स्त्रि  
 का मुष को अमृत जस पुरुष ले पाया न जं मुष को जुठो धाये न त तो मुष डलो भु ॥ तुल देव भं ह ॥

क  
 ५२

हे ब्राह्मरा उठ लोक न्या मै लो दि भाम निरुप धारि शि गुठिका लिये द ब्राह्मरा का मुख मा धा सिदि  
 व्या कं न्या भयो दो श्री छुठिका आपूरा मुख मा धा ल्यो र हू ब्राह्मरा भये र तो रुप धारि शि कं न्या  
 का हात मा समा ते र राजा थें ग र ह स न ग न्यो ॥ राजा सुधा उठे अ हो ब्राह्मरा कां हा वा ठ आ  
 यो भंदा ब्राह्मरा भं ह ॥ हि मा हा राज म गंगा पार व ह्या ड ॥ ता हा मै रो पुत्र ये क भयो सो ह  
 वर्ष को भयो व्या हा ग न्यो को चिंता भयो र का हा जा ई क न्या मा गु भानि दा डा ग या र के  
 न्या मा ग्या ॥ व्या हा ग न्या के हि दिन मा लो के ठिलि न फेरि ग या के ठिलिये र आ उदा गा  
 उदे वि एक स्त्रि आ ई र मै ले सुधा भा घर मा स व न्कि ह भंदा त ह्ये भानि त मो हो रोक  
 ता वि दे स ग यो हो रा का विर ह ले मा हा तारि सरि ॥ चरत मो दि तो ह भनि उग्र त म



कनफिक्कभयो होरोषो जनजातुहारिक ता होठु भंडा मतमा हजुरे आया योउ हारिना  
 सोराषिदेउ जवत होरो लिये र आगुलात वदिया भंडा ॥ राजा विताउ हन ॥ मनमा घर  
 वस्येमा ॥ संकष्ट आर्द्रपयो प्रासराको वचनानमा गुत सरापगली ॥ प्रति सुंदरिकं  
 न्यादेष्वा रराजा भंडे ॥ हवसभन्या र आफनिकं न्याकन वीला यो ॥ चंडप्रभाकन  
 भन्याहे पुत्रि यो प्रासराकि उहारिकन आ पूरा ठागुता आ पूरे विद्या गुनामा तेरे हजुरे  
 राषन्यागरा ॥ प्रासाकानजरले देव न्यागरिराष्या ॥ राजकं न्याभंडे अवसभानिरहा  
 तमा ससातिर आ पूरा वीरगीले ॥ ताहा षठियासा चंडप्रभापतिताहि वसि ॥ लो  
 प्रासराबंधुले वडो सुतीमा न्याजति राजकं न्याकन देषिरभंडे ॥ हे राजपुत्रिका

का  
 ६०

अर्थले सुन्यहृदय ह्रुदुस्त्रिभयाकि हो तो काराभना ॥ अतिं दुखितमनका हागरि राषि  
 हो भंडा चंडप्रभाभंडे ॥ गुताको विचार जान्या वीलीकोठियो हन ॥ संग्रासका सुरापनिये  
 कादहन ॥ आर्कोका दुषदेषि दुषजान्या पनि एकादहन ॥ वहुतका भुभानि चंडप्र  
 भाभंडे ॥ होषभन्याको कस्तुजातमा हैन रोगभन्याको कस्तुनलागै नवै सभन्याको  
 कस्तुन हैन सुखः दुखः कस्तुन हैन ॥ हे प्रासराबंधु एक दिन सवि संगवेलनगया ॥  
 ताहा अतिरूपवंत प्रासरादेखा तस्को हृदय देषि मंचलभभाते खोना ठुया तजोदिना ॥ तो  
 र्यामिनभया मसरुलानि अया ॥ तसेका राले हृदय सुन्य ह्रुदुस्त्रिभया ॥ कं न्यारूपधा  
 रिराभंडे ॥ हे राजपुत्रि त्यो प्रासराकन मले ईदिठुला मलाई वया हो लिभन भंडा चंडप्रभा



मंहे ॥ नम्र हासिहुं लासर्वथा मे राखातिक नंदे वावा ॥ जसैयसो भनि तसै सुषवाठ गुठिका जी  
 किर सुंदर ब्राह्मण भयो ॥ जवत त्कनंदे विलज्यावति मे राज पुत्रि ॥ ये सै प्रकार दिनु स मा  
 कंन्या मे रहंथ्यो रात मा पुरुष हुंथ्यो राज कंन्या स ग सं भोग गर्थ्यो ॥ तन का परस्पर पतिव  
 थ्यो ॥ ते सराज कंन्या कन गर्भ भयो ॥ तसै समय मा ताहिका काजिका हो राको व्या हा गर्भ  
 आया छ र आ की दे सका काजिकि हो रि म गां कवति भन्या कि त र कन व्या हा गर्भ प्रायो  
 र सवे नि प्राग यो वड प्रभा पति ब्राह्मण कि वं डु पति गया का थिया ॥ काजिका हो रा ले थो ब्रा  
 ह्मण कि वं डु कन दे वे र अत्यंत मन संवल गयो ॥ यो स्त्रि मे रि भया मे रो जिनु नु सं फल भयो क  
 यो स्त्रि मे लन मिला मनु ह भनि रि ता उर भि ता उरै मुर्छा भयो पुनि मा लोको ॥ आ पू ६१

मित ले हे कोर सुधा यो तो कह न लाग्यो ॥ मुर्छा मा प नि श तांत क ल्यो ॥ मं वि राजा थैं विंति ग  
 र्छे ॥ हे मा हा राज यो ना सो वाध्या कि कंन्या मे रा हो रा कन दिन ययो मं हा राजा प्राग्या गर्ह न ॥  
 हे काजिय सो म कान ग रु ला ब्राह्मण कि उ हा रि दि न स कू हे न ब्राह्मण सरा प ग लो  
 र भ स ग लो ॥ यो धर्म राजा को हो ई न ॥ या सो राजा ले मं हा स वै पा च विंति गर्न लाग्या ॥  
 हे मा हा राज सर्व थो दि न्या प यो ब्राह्मण कि कंन्या ता राजा ले दिया ता व डो पु रा प ह मं द  
 राजा सुधा व न लाग्यो ब्राह्मण थै ति मिल्ने जान प यो ति मी ले न जा या रा स ले लो जान ला  
 यो त व राज को र क्ष गर्भ मं हा रूप धारि नि कंन्या मं हे ॥ हे मा हा राज ति मिल्ने जा ति दि यो  
 न म के दि विंति गर्छे ॥ ती मा न्या म पाने मा नु ला भ नि ॥ म कन व्या हा ग न्यो भ या छ



सहिनासंमतिर्यथागर्जनावसरहसहिनापुण्यापदि सरकोतदिठलातोतितमोमं  
 त्रिमाहृतमपनिमाबुला॥ मंदासं त्रिपुत्रलोभन्यो मथितिर्यवर्तगारिआहुंजिमेरिव्याहु  
 लिसगरहनु॥ एतिभनेरतिर्यथागगयो॥ ७ प्रातरूपधारिरीकंन्याकाजेकिबुहा  
 रिस्कासयनमावस्या॥ व्याहुलिभंहेमेरातापुरुषकोअर्द्धोह्यपरंतुअंतजाअंतजानस  
 तिनयाहापुरुषकेनमेरावडोजोवहमेरायस्थोअभागभयोतेरोक्याअभागलाग्यो  
 आइस्त्रभानिदेहोतालेपठायतामनिअभागिनिभईस्॥ मंदातेरूपधारिरीकंन्याभंहे  
 तेराजतिलोग्याकोईह्याभयासलोग्याभयेरतसंगसंभोग्यगरुला॥ त्योभंहेक्यासक  
 नलोभ्याहुंहेस्त्रभंदाक्याकलोभ्याहुलामेराताविद्याकोवलहतेसोभयाप्रतच्छदिभावः

का  
 ६२

त्योकंन्यारूपधारिरीभंहेदेतवभंहेमुषदेविगुठिकाजिकिरलोग्याभयो॥ संभोग  
 जयो॥ येसैप्रकारदिठसकंन्याहुंथ्योरातमापुरुषभैसंभोग्यगर्थी॥ तसैप्रका  
 रपुतिवढाया॥ येतिभयाहुप्रोतहसहिनापुग्योसंतपुत्रआईपुग्योरसहरमावढाई  
 भयो॥ गाहुनवजावनलाहा॥ यातिहुईलेदेव्यारसनचंचलगन्याकलाजाहुकसोग  
 रंभनिविष्याहसान्या॥ जाकुतेआइपुहतेहिबुहोर्नयई॥ तवतोआन्याकहंहु॥  
 दुइकाभनतिल्योरअवयाहादेविजाहुभनारलोगहषवठाइमालाग्योतसैओस  
 रमाहुवैनिस्वपा॥ जाहामुलदेवथियाताहिगया॥ त्योस्त्रीकोरूपधारिआसगाले  
 योर्तससिरमुलदेवभन्याकाथियातनथिंविस्तारइतांतकह्योयाहाहुप्रोतमुल



देवलेहधवाहाराको रूपगयाधुतससिक नखोउसवर्षको पुत्रहुलायारगया॥ राजाका  
 हवीरगया॥ राजाकोसेनगया॥ राजालेविह्याठनामावसाया॥ कुसलप्रश्नगया॥ जोके  
 होकोल्यायोभनिराजालेसोध्याब्राह्मणविंतिगहेहेमाहारजमेरोपुत्रहोयेसैकिब्रा  
 ह्मणोनासोराधिगयाकिहोतोनासोमागनआया॥ दिनुहोवस्रमंदा राजामंहुन  
 हेब्राह्मणमपरकेहिद्वाराविनेरोविंतिनुना॥ काजिकाहोरासगकोहतांकह्या॥  
 जोकुनिकनब्राह्मणलेअतिकोप्यगयोमंजलाग्या॥ मेरिबुहारिआकीकनदियो  
 तसारापदिनुमंदा राजाकाकाजिपाचसवैपाठप्या॥ राखराखसरयनगरभनि  
 विंतिगदीब्राह्मणमंहुन॥ हेमाहारजहेपंचहोमेरिबुहारिअंतिदियोततस्कासा

क  
 ३३

ठामाराजकंन्यादिहोतमेरोहोरोबुजाठकुभनिब्राह्मणलेमंदा राजाकाभलासानिसवस्यारमो  
 तोगर्नलाग्या॥ सरायकाउरलोहिन्याययोब्राह्मणकिंकंन्याकोराठोराजकंन्यादियाकुठेव  
 होइनतापनिब्राह्मणठचीजातहोभनिदियाविभाग्या॥ व्याहागरिकनहातासासमात्पार  
 हुद्यानवनमालेग्या॥ शारैजानावाहुलाभयाससिधुर्तरवामनखामि राजकंन्यानिमित्तपेवि  
 वादगर्नलाग्या॥ मैलेव्याहाग्याकिमेरिहोभन्या॥ ससिधुर्तलेतापनिअधिगर्भजमाया  
 कोहमेरिभयाकिहभन्यारवामनखामितिहुँकोविवाहमुलदेवलेकिभसकेनंन॥ सति  
 कथाकहिबेतालमह॥ हेमाहारजकस्त्रिभाय्यहुन्याहो॥ मंदा राजाविक्रमसेनआग्यागहे  
 न॥ हेवेतालससिधुर्तकिस्त्रिहोमंदावेतालमंहु॥ ब्राह्मणकोअधिगर्भभयोक्याहातीकि



मै न भंडार जा भइ न्याहि वेताल ब्राह्मण ले ता कहल ले गर्भ राख्यो ससिधु तले ता संसार ले जातु  
 गरि विवाहा गग्या त स्कारा गभ को दोरि छोरो ज्याह्यो ससिधु तले कन पिंड दान गली ॥  
 ये सो भन्या को ह्यो ॥ सो वरी फूल पथि वि ए तितिन को संविताति न जाना गह्यो ॥ को भन्या जो  
 सुरा विरह्यो जो विद्या वंत ह्यो जो सुंदरि छिह्यो न ए ति सुनि वेताल फेरि ह्यो मा गयो ॥ इति  
 सिव दास विरचित यां वेताल यंत्र विं सतिका यो चतुर्दश कथा समाप्तः ॥ १४ ॥ ॥ वासनं लेक  
 हंतं वा हस्ति वक्रं मही हरं ॥ नमामि परमया भक्त्या विघ्ने संपरमेश्वरं ॥ केरि वेताल भंड ॥ हे माहारा  
 ज एक हि माल य पर्वत थियो ॥ ताहा सय जो जन विस्तार कां चन पुर भन्या को नगर थियो ॥ ते  
 सनगर मा विद्या धर गरा को जिमुत के तु भन्या को राजा थियो ॥ के तु मति भन्या कितन कि रानि थियो ॥

तन का आगत मा मनोरथ दायक कल्प द्रु थियो राजा अपु ज थियार पुत्र का निमित्त  
 कल्प द्रु को सेवा बहुत गग्या र कल्प द्रु संतुष्ट भये र भंड ॥ हे माहाराज जिमुत के तु ति  
 मि पर संतुष्ट थ्या निमित्त कन पुत्र हो ला ॥ मै ले दिय निश्चया ॥ कल्प द्रु ले दिय पाठ  
 रानि थि पुत्र जं न्यो ॥ लघ्व वठाई गग्या दान गग्या ॥ उग्रं तना मकरा गग्या जिमुत वाहन  
 भनि नाठ राष्या ॥ राजा ले सधा ब्राह्मण कन पाठ माला या संसार मा धर्म गन्यो भयो ॥ अग्नि  
 वायु मुसा सब को भय भये न मेच पानि समये मधा से न्या भयो ॥ भुमि मा अं न ले पुर्ण दुन  
 ला ग्यो ॥ मारि पानि घे ला भरि दुह दिन लाग्यो ॥ खामिका व्रत त मा स्त्रि रहत लाग्यो ॥  
 जिमुत वाहन का राजा ई मा य सो भयो ए सो गुण ले राजा जिमुत वाहन पानि भयो ॥



तो पति विताऊत लांगो अहो संसार सा सर्व जिय जंतु को कृप कार गुरु त्यों अति भूलो  
 होयो सो वितायो रति न ले पति कल्प दृष्ट को सेवा गन्या ॥ कल्प दृष्ट संतुष्ट भये रक्षा  
 ला गई ॥ हे जि सुत वाहन ते रा सेवा देखि म संतुष्ट भव र सो भंडा ॥ जि सुत वाह  
 न विंति गई ॥ हे भगवो नति मिजति संतुष्ट भयो त संवैष्टि वि सा धनि ग रा द  
 देठ देखि पर सो कु भंडा कल्प दृष्ट भंडा ॥ ह वर मन्या त से ग रा था ॥ त से समय  
 सा राजा को गोत्रिया ह रूले य सो विता या वावु हो रा दु वै धम ग न्यो भया र छप ये से  
 ओ सर सा लिठ भन्या र सैन्य सा धि सर र घे न्या ॥ त व राजा भंडा ॥ हे पुत्र क सो ग  
 रो भंडा जि सुत वाहन विंति गई ॥ संग्राम ग र र राज्य था सो ला भंडा राजा आ

क  
 ६५

ग्या गई ॥ हे पुत्र यो सरिर भन्या को रह न्यो छे न्या ॥ संघति पति स देखे के ना स ड  
 हेन का ल भन्या को न जि का ठ ह ॥ त व त स्का रा धर्म को संग्रह गुरु ॥ त स्का निमित्त  
 स ता पाप ग र्दिन गोत्र ह त्या भन्या को ता व डो पात क ह ॥ गोत्र ह त्या ग न्यो देखि देव ता  
 पति यि व पति वा डूं वं डु स व ठ ग ड ह ॥ ति राज्य को लो भग न्यो गोत्रिया क न राज्य न  
 दिया तन को आ सा भंग हो ला ॥ तो पाय हा मि क न ला ग्या ॥ त स्का र ता यो राज्य गो  
 त्रिया क न दि रु ख न मा जा रु भन्या र ग या ॥ राज्य सो पा व न मा ग या र दु वै व्रत मा र  
 ह्या ॥ कंत सु ल पा डूं रह न ला ग्या डूं गा वि द्या ठ ना रु स का वो क का क य रा प हि न्या  
 रहिन का डूं न ला ग्या ॥ त से समय मा ते सैन्य न मा रह न्या क्रि वि को पुत्र स ड क र भन्या को



तससंगजिमुतवाहनलेमितीरिगया॥ तनमितसंगजिमुतवाहनहिमालयपर्वतमाडुल  
 नगया॥ ताहि एकगौरिदेविकोसोठदेव्या तेसैमाठमारुकनारि विशिभावगाठिदेव्या स  
 विसंयुक्तभयाकि तेसनाई कालेपनि जिमुतवाहनकनदेवि परस्परदुवैका कामदेठकावे  
 षाभया॥ जसैवेष्टाभयाकोदेव्या तसैसधिलेभनिंतिघरजातसकिनेंर डोलिमगायारस  
 विहेरुलेघरलेगया॥ जिमुतवाहनपनिआफमिति लेआर्मा लैगया कामदेठविकलभ  
 योतीकंन्या आफू रमापछिरात विषयमा विरहकाअग्निलेसंपूर्णसरिरठठिरविसावं  
 डमंडलमासितलरिसाडुगामावसेरमा हातारिथेंधतांतगरि॥ तोसासिनमायाप्राप्ताया क  
 गगल्लाभनि॥ रानिलेराजाथेकहिन्ना॥ राजालेवाकरवनमा जिमुतवाहनषोडनघठाया ६६

जिमुतकेतुथैगयाविंतिगयाहेमाहाराजतमावेलाजिमुतवाहनकनपठावविखावसुहासराजाकि  
 रोतेलिदिच्छुगगर्हभनिविंतिगयो॥ हवसपठाकुलामन्याएषठाया॥ जिमुतवाहनगया  
 मलयसुंदरिभन्याकि राजकंन्यायाहागयाएवडाठसाहलेसुवर्णकादूभयाकायाएकिमा  
 चरेरआयावावामाहातारिकापायापयाडोगदिया॥ रानिसमेतआयाकोपुनदेविवावामाहा  
 तारिबुसिभया॥ तसैसमयमाएकदिनहिमालयपर्वतमाविनोदगर्नडुलनभनिसालोसंग  
 लियेरजिमुतवाहनगया॥ ताहासेतोपर्वतदेव्यारसालाहोसुधयायातोसेतोदेविन्याक्या  
 होभंडासालोभंडा॥ सर्वकाहाडुहन्ना॥ ताहोसधागडुआयेरनागमारिषांहुन्ना॥ अऊ  
 पनिदिप्रतिथेकएकषांहुन्ना॥ जसैयेतिकुरोजिमुतवाहनलेसुन्यातसैआफूसितगयाका



साक्षात्प्रभृतिजो थिया तिसवै फिराई दिया ॥ राजा एकलै जसै गया तसै येवठि स्वास्नि लेहे पुत्र  
 निरुहा सुन्या देखा रसुध्याया ॥ तिमि कपान रुहौ भंडा ल्यो भंडे ॥ अजमे रोहो रोमह गदुर आ ए  
 रवां ह तसै अर्थ लेरुहु ॥ भंडा जि सुत वाहन भंडे ॥ जानि ते मेरो जि उदि ये रतं माहो रा को  
 जि ठरा बुला भंडा ॥ संखु उ नाग भंडा ॥ हे मित्र ये सो आगपन भंडु हो वस ॥ वडा को धर्म ये से हो  
 तरत सो जि ठमा न्यार मै लेवा चनु धिकार हो तिमि जा उई हान वस जसै गदुर आ कला तसै विंगार  
 हो लावा डो जा ठ भंडा जि सुत वाहन भंडे ॥ तिमि मेरा भाई भयो ईहि वस म जो कन देवता को न  
 मस्कार गरिया हा आठं जि वस भन्यार संखु उ गया ॥ जसै संखु उ गया तसै आकास मा गदुर  
 आठं देखा र राजा जि सुत वाहन नागर हन्या सिला मा गया सुपा ॥ नाग कन खान भने र

क  
 ६९

गरुड ले पाठ पाता लमा लाई घषे ठाले देस दि सावा प्रगरि सा अर्ज बोहर गरि वत्सा कन कंठ  
 मारा विरुंड सुय्ये काने त्रगरि ससा भुवन कान यक गदुर दस जो जन ला मुडु वी गरिय सो ग  
 रुड को दे विराजा जि सुत वाहन उरा यानं ॥ त ली विषय मा आकास माले जादा मा हा राजा का  
 हात मा लाया कि गुठि गला को हार राजा को नाठ ले विचि दूग गया की तो रक्त ले मुदि ये  
 र मल यठं ति का काष मा षस्यो ॥ त्यो दे से र मल य वतिले मा हा दुषित भयी ॥ हे श्वामि आ  
 जाति मि कन क्या भयो भानि संखामानि ॥ तसै समय मा संखु उ नाग पनिते सै सिला मा ग  
 यो ॥ देखो राजा कन ले जादा र भंडे ॥ हे गरुड हौ उ हौ ठ तो तमो भ हौ ई न संखु उ भ  
 न्यो को नाग राज कु मार तमो भ हौ त्यो ताई हि ह भंडा गरुड ले सुन्यार संधि मानि फर्या



ताहिषस्या॥ येसलेकागयोभानिगरुडसुध्यावहन्॥ जिमुतवाहनथैतकोहोसकिनयेस  
 सिलामाग्राइथिस्रभानिसुध्याठदाराजामहन्॥ किनवितासांहीतमीसनोग्यगरसकनभ  
 गरमंदागरुडग्राहागहन्॥ हेसत्यधारिक्याअर्थलेपरात्रिका निमित्तप्राणात्यागगह्नीभं  
 दा जिमुतवाहनविंतिगहन्॥ घृष्टं घृष्टमिति॥ वडाकोरितिभन्याएस्तोह् प्राणात्याग  
 भयापनिजोग्राफरुसुभावहत्पोहोइहैनद्रिष्टोतक्याहभन्या॥ श्रीखंडकाठमाश्रेष्ठ  
 तिधत्तासुंदरसुवासहुंछातुमाश्रेष्ठसुवर्नेह् तोफतिह्धगन्यासनिकालोहुहैन॥ को  
 तिवंतहुंछ॥ रसमाश्रेष्ठठुष्टह्पोपनितितीहुहैनवहुतामिठोहुंछ॥ तसौवडाकोस्वभा  
 वदुःखभयापनिहुइहैनजोवडाजोन्याहन्तिन्यायादेविएकपाठपनिविवलितभैअन्या

क  
ह

माजाहैनन्॥ होकोहिभनस्तपनिमंदोभलोभनस्तपनिलहिरुंतापनिजातंतपनिअजौमर्तु  
 ह् तपनिवहुताजिठनुह् तपनिअन्याअधर्मवडोअन्यामनुष्यलेगहैनन्॥ हाहाहेसआफुसु  
 र्यकातापसाहेररअरुकनह्। यादिह्करा॥ फलरह् तपनिआर्केनिमित्तप्राफुषाहैनन्॥ नदि  
 वह्नेह् आर्केनिमित्तमेघवर्सेह् संसारका निमित्त॥ तसौठपकारनिमित्तपवडाकोजन्महुह्॥  
 समुद्रमाअनेकपाशार्थह् तसमुद्रकागह्निन्॥ विध्यावलह् तिकागह् मलयाचलाअ  
 षडलेकागह्॥ तीसवैआर्केकाठपकारनिमित्तपवडाकोजन्मह्॥ जोमनुष्यआर्केकोठपकार  
 गहैनतस्कोजिठनुष्याह्॥ जोमनुष्यपरोकारगह् तस्कोजन्मसंफलह्॥ आफुपेटता  
 कागलेपनियालह्॥ नाहिवडालेठपकारगर्नुजोमनुष्यगाईका निमित्तप्रासराका



निमित्तमित्रकानिमित्तस्त्रिकानिमित्तप्रारादिह तस्को जन्म संफलह ॥ हेमाहराजसत्यवा  
 दितदेविसंतुष्टमयौवरमागभंद जिमुतवाहनमंहु ॥ हे परमेश्वर आनंद प्रोतनागतिमिले  
 नवानु जो अघिषायाकाहु न तिपनिजिहु ॥ भंदा होवो सभन्या रं प्रं म तसिसि दिवार  
 ज गाया ॥ गरुड आ पू था न ग या ॥ ना ग हे रूप नि ग या ॥ जि मु त वा ह न य नि आ पू वा  
 र ग या ॥ आ की को जि ठ मारि आ पू जि य को र ह ग नी ता स वै हं ॥ आ पू जि ठ मारि आ की को  
 र ह ग नी एक जि मु त वा ह न मा त्रै हं ॥ प्रोत गो त्रिया लेश ज्य लि ये र धा पा या व्या ति  
 स वै आ ई पा ठ य न्या राज प सो पा र लै ग्या ॥ ए ति क था क हि वे ताल भं हु ॥ हे मा हा राज वि क्र म  
 से न ॥ जि मु त वा ह सं षु उ डु र मा को स त्प वा दि क हु ॥ राजा आ ग्या ग हं ॥ सं षु उ डु स त्प

क  
 ६२

वादि हो भंदा वे ताल भं हु क्वा अथ ले भंदा राजा भं हु ॥ गरुड ले ले गै हा ल्या थ्या ले ग या की फि  
 रा इ क न तो हा उ म क न वा ठु म न्यो आ पू का ल मा आ की को तर रा क्वा न ग रु ला भ नि ह्यो उ यो  
 भंदा वे ताल भं हु ॥ हे मा हा राज ज श्वे आ की का का र रा मा जि ठ दि यो त्यो क्वा हा स त्प धि क भ ये न  
 भंदा राजा भं हु जन्म जन्मो त मा जि मु त वा ह न का आ की का नि मि त्त प्र रा त्पा ग म र्णी को अ भ्या स  
 थि यो ए प्र रा त्पा ग ग र्ने गा हो मो दै न थ्यो जन्म जन्मो त की अ भ्या स ग न्या को द वि द्या त प स्या  
 ये ति अ धि का जन्म का फल ले या ३ हु ॥ ए ति सु नि वे ताल फि र रु षे मा ग यो ॥ इ ति सि व हा स  
 वि र चि ता यो वे ताल पंच विं स ति का यो पंच द स क था स मा पूः ॥ १५ ॥ ॥ अ वि हि न्ये  
 द सो पे तो द ता क र तु सो मि तां ॥ वे दे सर श्व ति दे विं अ ने क वि ता स्थि ता ॥ फे र वे ताल भं हु ॥



हे माहाराज सुन विजयपुर मन्पाको एक नगर थियो ॥ ते सतग रिसा धर्म सिल मन्पाको राजा थियो  
रत्नदत्त मन्पाको वानिया थियो ॥ ते सवानिना कि छो रिठ्ठा दिनि मन्पा कि थितरको रूप जोको  
हिंदू त्यो काम देउलो पिडा गर्थो तपसिपनि तलो हुदा एक दिन रत्नदत्त वानिया राजा  
थे विंति गर्छ ॥ हे माहाराज मेरा घर कंन्या रत्नदत्त रत्नका अधिपति मि हो त्यो ताचाहिं हे म  
न्पा व्याह गरा ॥ तो चाहिं मन्पा अत्कन दि कु भनि भंदा राजा ले वडा मानि ससामुद्रिपन्पा  
का कन हेर्न पठाया ॥ रत्नदत्त का घर गया हे या तत्का रूप सबै सोहन मया ॥ कं हर्य गलित  
मया का देखा रवा वाले लुकायो ॥ नयनको सब विस्तार देखा ॥ मुख पुरा चंद्र जस्तो देखा क  
चं पा का फूल जै गाल दिखा ॥ नाक वाठ तेल का धारा उठ्ठे न मन्पा जे देखा भुकुठिका मेदे १०

उका धनु जे देखा ॥ हात मन्पा हि राजा जुवाला जस्ता वोठ को श्लिका जस्तो सोरग लामा तिन  
रेषा माधविल ताल जस्ता चाहु हात का नव अंगुलिसाना मया कि पहेला डाठा सारा सान  
मया कि काठि सानु मुठि मरि मया कि नाभि गंभिर मया कि रूप को विस्तारता की गर्न स  
कला नितं वडला मया कि एति नारि विधिर व्या कि हो ॥ एति नारि लह न वति सुमाना  
रि सवेला हिले युक्त मया कि देखा रहे न जाना हेरु मुषा मुषगर्न लाग्या ॥ यस संग रा  
जा रया ता तसे माया सत्तरा जाले काज के हि गंरे न भनि मोतो गप्या र राजा का  
हजुर गया ॥ विंति गर्न लाग्या ॥ हे माहाराज अलक्षरी रहि क्हा ॥ त प्रजो गप कि र  
हिन क्हा ॥ रत्न रहि न क्हा विषं मरि क्हा भनि विंति गन्या ॥ रत्नदत्त ले त्यो पुग्यो रघव



लधरभन्याको सदीर तसे राजाको रहेहू तसे लाइ दि यो व्याहा गयो ॥ लैग यो ठांत  
 यो ठांतादि नि का पठ को पठ्यो मकन अलक्षि शि भन्यार राजा ले व्याहा गरेन भनि  
 रि सठ्या को थियो ॥ तसै समय मायका दिन राजा सहरमा बहिराया यो ठांतादि नि  
 पनि राजा का देवाव परला भनिल का रग रिसो हसि गार गरि रज्या लमा वस्या कि थि  
 राजा ले दे व्या रिता या ॥ यो देव कं न्या हो कि नाग कं न्या हो कि मनुष्य कं न्या ता ते सिद्ध  
 या ॥ भनि जसै रिता या तसै काम देठु ले प्या गयो ॥ जसै ठो का दुवाया वि ति गर्ह ॥ हे मा हा  
 राज का हा म लिन हौ ॥ का दुःख मन मा भयो भनि विं ति गर्ह राजा आ हा गर्ह न ॥ प्रा  
 ज सहर मा यात्रा गर्ह एक स्था स्त्रि जाल मा वस्या कि दे व्या र काम देठु को वेद ना भयो भंदा

क  
 १

दुवाया विं ति गर्ह ॥ हे मा हा राज त्यो मनुष्य कं न्या हो र तन दत्त कि कं न्या हो जो ति मि ली अलक्षि शि  
 भन्यार ह्यो आ कि हो ॥ तो सुनि राजा भंदा ॥ वडा मा बिस विचार गर्न पठाया र दुरा मा ब्राह्म  
 रा हे रु ले ठा व्या र काम देठु को धनुर्वि द्या अपुर्व ह ॥ का हा भन्या सरि रमा घातु नला गि भि  
 न वे प्या गर्ह ॥ ए सो भनि राजा ले तो के ठि हे र्न पठाया का ब्राह्मण कन वी ला या र भन्या हे श्रा  
 त्म रा हो मकन कान ठा यो भंदा ति विं ति गर्ह न ॥ हे मा हा राज का राले ठा व्या को हो का हा  
 न न्या यो अत्यंत सुंदर मा राजा आस कुहु न नूर राजा कार्य गरेन न सवै राज्य दा य जा  
 ला भनि त सो ठा ठि वि ग ति ग या को हो भंदा त न क न वि द्या दि या गया ॥ वा हा

क



उग्रंत धवल धरभन्ना को सदीरा जायिं सकांत विनिगर्न लाजो हे मा  
 हारा नाम तमो दास गुला मूहं ॥ जीत प्राक सावसा भयो मेरिखा झिरे  
 भिकनत तो मल्पा इदिं कुं ॥ संभोग गरभंदा राजा भंडर ॥ हे धवल  
 धर धर्मी ताले परस्त्रि संभोग गर्नु जोग है न कसो गनी भन्दा हे म  
 हारा जमैले मेरिखा स्त्रि दिया कप दोष दु भन्दा राजा रिसिये रभन्ना  
 ॥ परस्त्रि गमन गन्ना कसो गरि धर्म होला रभो भन्ना को ह ॥ विर

निखास्त्रि माहातारिवरोवरमानु भन्ना को ह परस्त्रि कसि गरिं मानु  
 ॥ चार्की को जिव चार्फना जिउ वरोवर जो देखु तो धर्मी ताले सिष्प कन  
 सासना गनी गुहं दु दुष्ट कन सासि गनी राजा हं हं पापिकन रा  
 स्त्रि गनी जम राजा हं ॥ भन्दा सदीरा विनिगर्न हे म हारा जमति मि  
 कन कमारि तु ल्पा इदिं कु उहा देखि परस्त्रि कसो गरि हं हे भन्दा राजा  
 भंडर ॥ संसार मा विरुद्ध गर्नु है न अहारा जायिं लै जा रव स्या तु ल्पा



क.

७३

रतवमलिउलाभन्दासहीविंतिगह्हेमहाराजातप्रामनसंतोषगरेर  
मवेस्मातुल्पाउदिनभंदाजातवाभन्तिउन्मादिनिमावित्तलायोदसैच  
वस्ताएतिहृन् ॥ पहिलेविंताभयोदाओचवस्ताहेनमनलाज्योतेओसु  
स्केराहालोयोथोज्वरआंगभायोकोजोचवस्तापावोचवस्तामासरि  
रयोलाज्योहेटाचवस्तामाषावुरुवेन ॥ सातीभाकंपभयोअ  
होमावहुलायोनवमचवस्तामाचवेतभयोदसंचवस्तामाप्राण

७३

त्यागहं ह् एतिदसचवस्ताहृदा राजाकाप्राणात्यागभयो राजाकोदेह  
त्यागभयोभनिसदीरलेसुनोतसैदवीरआयो ॥ रगुरुथिंसुधायोहे  
गुरुअवकागर्माहोभन्दागुरुभं ह् आदित्यकनअर्घदेउमेरोखा  
मितहिहोसंसारजिउजंतुकोप्राणतिमिहो ॥ कर्मलेमनलेववनले  
तिमिदेविआकीमेरोकोहिहैनभन्येरखलामाप्रदक्षिमागरेरफरा  
लद्यालोअग्निमाजसैफालाहोतसैउन्मादिनिह्हेहगुरुस्त्रीकोध



कम  
७४

मेक्याहो आशाहवोस्वभन्दागुरुभं हं हं ॥ उ प्रांत स्वामिविद्यमान हं हं  
जो नारिव्रततीर्थयात्रागर्ह स्वामिको आयुद्धिन्नगर्भा होपरंतुम  
यापद्धि नर्क हं हं ॥ स्वामिनिगुतिशेगिभयापनिस्त्रि लेपरमेस्वरदे  
वताभनिस्वामिकनमं नु जिउदासेवागर्ह मयापद्धि सतिजानुतसे  
गयापाउपाउअस्वमेधजगयाजस्तोपुं न्य हं हं ॥ साधुस्त्रिकोधा  
मेस्वामिसगमनदेवि आर्कोधर्मकेहि हं हं ॥ उ प्रांत तिनकोटिपया

७४

सलाषरोममनुष्यकासरिरमा हं हं ॥ तेतिवर्षस्वर्गमा हं हं ॥ स्वा  
मिसितजान्याएतिधर्मसुनेरस्मानदानगरेरविंताप्रदक्षिंसाग  
रिरउन्मादिनिस्वामिधिंमे ॥ हेस्वामितं प्रादासकिपनिदासिहुं  
॥ जमजन्ममापनिभनिसोलाभापसिएतिकथाकहेरवेताल  
भं हं ॥ हेमहाराजाएतितिनमाकोसत्पात्माकुलो जानिकनन  
कह्यामरोलाभंदा राजाविक्रमसेन भं हं ॥ राजासत्पाधिक



क.  
७५

होवेतालमंडक्याअर्थलेभंडा॥ राजाभंडर॥ आपूरासेवकलेदियाकि  
खास्मिलीयेनधर्मविरोधहोलाभनिधवलधरसदीरलेखाभिनिमि  
तपजिउदियोत्पोजोयेहोउमादिनिलेआपूराखामिसगसतिगेत्पो  
पनिजोयेहो॥ संसारमायेसोईउषकोभोगगदीहःखआंडई  
नूदुःखकोभोगगदीउषहुंई॥ येसोवकईयेतिसुनिवेता  
लगयो॥ ॥ इति सिवदाशविरवितायांपंवविंसतिकायांषोडसक

७५

थासमाप्त॥ १६॥ ब्रह्मायेनकुलालवंनियमितं ब्रह्मांडभांडोदरेविष्णोर्जेन  
दसावतारगहनेः क्षिप्तसदासंकटे॥ रुद्रोयेनकपालपाणिपुलंकेभिष्माट  
नंकारितेसूर्योभ्राम्यतिमितमेवगगहनेतस्मै नमः कर्मने॥ फेरिवेता  
लमंडहेमहराजउज्ज्वनिभन्याकिएकनगरिणि॥ ताहराजामाहासे  
नथियो॥ देवसर्मभन्याकोब्राह्मराथियो॥ तस्कोपुत्रगुणकरभन्या  
कोवडोपंडितथियो॥ सुरोपनिथियोसुराणभन्याकिकंन्याव्याहारागि  
दिया॥ तस्मैमातोर्गुणकरजुवाभयोयाकेहिघरमापायोत्पोलियेर



जुवासा हर्न लागो ते सो गदीपरिया रलेध पाचारणयो अर्की देसमा ॥ सहरवाहिर  
ना देवालयमागयो रभोक लेसुतो ॥ क्या गरूकता जा भनि विंतागर्न लागो ॥ त  
से विषयमा एक जो गिबुति आयो ते सगुशा करले नमस्कारणयो ॥ यो गिले  
सुध्यायो को होस् संभंदा तस्त्रां हारा पुनले आ प्रदतांत क हो के रिभन्यो  
म ताभो को कुभंदा यो गिका हातमा मां न्द्र कोष पपर रहे ह्ता हिमा भात रहे  
ह्ता यो धा भनियो गिले भंदा योष पपरमा को भात क सो गरिषा वा हारा हुंभंदा यो  
गिले वृज्या वश कुल को रहे ह्ता ॥ यो भात पाये न क्या द्यो भनियो गिले विता यो ध्या

जुवासा हर्न लागो ते सो गदीव नगरे रवटय क्षिरि भाइ ॥ हे यो गि क्या भा शा हुं  
ह्ता यो गि भं ह्ता ॥ एस व्रा हारा कन पान देउ भनि जसे यो गिले भन्या तसे ता हि एक  
घर देवि वटय क्षिरि ले रवि न्द्र ॥ तसे घरमा वा हारा कन भोजन वंदन पान फूल  
विक्षा उना समेत रातमा पुरी छडा वा हारा संग गरि जसे विह्यायो तसे वट  
य क्षिरि गी ॥ वा हारा एक से भयो वि हान हे ह्ता के हि दे घेन ते हि दे वि को  
स्मरणा गयो सुंय हृदय मा वै ध्या न मा के हि दे घेन ॥ फेरि यो गिले भन्यो  
॥ हे व्रा हारा क्या हा विले वा उ ह्ता संभंदा वा हारा भं ह्ता हेत पसि वटय क्षिरि



कावियोगलेमसुद्धंदायोगिभूँह ॥ तोदेविताविद्यावल्लेगे ॥ हेप्रभुतो  
 विद्यामकनदेउतोसाधनागुद्धंदायोगिलेसंवदियोतोसंवलियेरजलमा  
 एकवित्तभयेरसंवसाधनागरभन्यारगयोजलमासंवसाधनागदीकेहिप  
 दयपायेनरउछोजसदेधिरयोमिगिथिंकह्योहेभगवान्मैलेविस्तारगः  
 याप्रतक्षपाइनभंदाअग्निमासाधनागरभन्यो ॥ ब्राह्मशाभं हूपरियारसग  
 भेटगरेरआठलारअग्निप्रवेसगह्लाभन्योरपरियारथिगयो ॥ परिया  
 रसभैअंकमालिगरेररूनलाग्या ॥ वाबुभं हूं हेप्रभुशाकरएतिदिन

काहवस्याकोमिस्रदरकसोवित्रीस्त्वास्त्रितेरिप्रतिवृताधर्मसिलवारकर्म  
 भयाकिह ॥ गृहस्थलदेधितुलोआर्कोधर्महैन ॥ स्वास्त्रिदेधितुलोसुषआ  
 कीहैन ॥ वावासाहातारिदेधितुलोआर्कोतिर्थहैनविष्णुदेधितुलोदेवता  
 आर्कोहैनसाहातारिपिताकनयोनिंदागर्हस्योअधर्मिबंडालहोतोस्वर्ग  
 जानपाउदेन ॥ भनिब्राह्मराकोक्यनह ॥ एतिपिताकाववनसुनिपुत्रभं  
 ह ॥ हेवावाकोसरिरमारगतपिपकिराजंतुमलयपुत्रेदुर्गधभयाकोतस्मा  
 संतोषुह्यामुषहो ॥ विरुद्धुमापंडितहोहेरकस्कावाबुकस्किस्वास्त्रिक



क.

७८

को छोरो संसारमा उत्पत्ति प्रलय एतौ छ ॥ के तावे रम-या के तावे रजम्मा अने  
कह ज्जारा रज्जो निमा को वातु भयो को छोरो भयो विर्य को रक्त का संयोग ले  
देहि हुं छ तो देहि विलुले छ री भया को छ ॥ त स्कार रासरिर असु विहसु  
यि काले हुं छ नान ले हृदय सुवि हुं छ ॥ पेट मा पाप भया वा हिर धोया सुवि  
हुं छ ॥ जो कर्म गन्यो छ ॥ ज्ञान गन्यो छ न तन को देवता अग्नि छ ॥ जो बुद्धि  
मा न्छ न तन को देवता पेट मा छ ज स्का छोरो बुद्धि छ तो प्रतिमा कन देवता भं  
हुं छ ॥ जो जो गि जं हुं तन को देवता हृदय मा हरि परमेश्वर छ ॥ त स्का

७८

र राग ह स्या ॥ अम को प्रयो ज न छैन संसार मा ज ननु मनु भलो छैन योग  
साधना गनु भनि फेरि धरवाट निस्क्यो ॥ जा हा जो गि थियो ता हि कि गयो  
जोगि का हनु रुप ज्यो ए अग्नि प्रज्वा ल्य गयो ॥ अग्नि मा वस्यो र मंत्र साधना  
गयो ॥ ते पनित्यो वट यक्षिणि आइन ॥ यो गि थि क हो वट यक्षिणि आ  
इन ॥ एति कथा कहे र वेताल भं छ ॥ हे महा राज क्या कारणा से वट यक्षि  
णि आइन कह भं दारा जा कि कम से न भं छ ॥ साधक का दोषित भया को दे  
छे र आइन ॥ एक दिन संग का ज गन्यो सिद्धि हुं छ ज व हो यित्त भया ना सु हुं छ



क.

॥ दाननभयाकिर्तिवलेन ॥ सोबोनभयापुजाहुदै न म्यायानभयामालहिम  
हुदै नर ॥ ध्याननभयासिद्धिहुदै न ॥ भंदावेतालभंङ्ग ॥ कसोगरिसाधकको  
दोवित्तभयोराजाभंङ्गर ॥ मंत्रसाधजदीगर्दैपरियारथिजयोभनिजोगि  
लेपुनिएस्तोदोवित्तभयाकासिष्ठाकसोगरिसं वदिउभनिदियेन ॥ तसै  
अर्थलेविद्यारिसिकनआइन इति सुनिवेतालसफेरिरुचैमागयो ॥ ॥  
इतिविषयसविद्वितायांचं वविंशति कायं । सप्तदशकथासमाप्त ॥ ७ ॥  
नमस्तस्मै गणेशाय सर्वविघ्नविनाशने ॥ कार्यारंभेषु सर्वप्रयः सुरैरपि

७२

पुज्यते ॥ फेरिवेतालभंङ्ग ॥ हेमहराजसुनकथाहा ॥ वंकोलभन्याकोनग  
रहंताहराजागुणसुंदरभन्याकोथियो ॥ तनराजाकारनिवहुतैथिया  
॥ परंतुपुत्रसंतानकेहिथियेनतसैनगरमामक्षभन्याकोब्राह्मराजियो  
महाजनवनिआथियो ॥ तस्किछोरिधनवतिभन्याकिथि ॥ सामलिपि  
पुरिमावस्यब्राह्मरालेवाहागया ॥ किथिगोरिदत्तनाउरहेइ ॥ को  
आफ्रानगरमागयेरमाहासुषलेरहाकोथियो ॥ तसैसमयमास्क  
छोरिनमिपहिलेआफुमयो ॥ तसैसमयमागेतयाआयारअपुतालि



को धन लै गया ॥ तो धनवति होरि सिये रवावुका घर जान भनि आउदारा  
तपयो ॥ वाढे विरिये हरम सानमा एक वोर सुखि माहा लिरा धाको रहे  
छ ॥ तस्का पुढा मा धनवतिको आगला जो वोर भंड ॥ कस्तु यो कटग यो  
रखोरहे छ ॥ सुषको दुःषको दाताको हिरहे न छ ॥ आकी देलार म पाखा  
भंसापनि कुबुद्धि हो अधिको ज्ञाक माइ हो तो मानइ रहे छ ॥ ज्ञासत्य  
छ जाहा दुःष छ जाहा लक्षवधं छ ताहि आ फल कर्म ले ले जां छ अहो सुखि  
मापमाका तिन दिन भयार अरु मेरा जिउताको आस छ धिक्छ ॥

वोर भंडको हो सुस्त भंदा म अनाथ हुं एक होरि मावै छ ॥ योर भंड तेरि होरि  
मलाइ दिजात एक लाघ सुनका असर्पि दिउला भंदा धनवति भंडे ॥ पापको वि  
रुवा लोभ हो व्याधिको जोरो र सहो दुःख को विरुवा पति हो इति तिन छाया  
पुखि हुं छ ॥ यो पुत्रि मै ले दिया कसो गरि होरा तुला उड्छु भंदा ॥ फेरि वोर भं  
छ गंधर्व विवाह ले विवाह गया मेरि भै यो कंन्या जब जातु समय होला तव एक  
बास सा ल्यायार मेरा हज्जार रूप आदिये ररितु दान गरया ॥ उप्रांत याहा  
देखि दुर्वरवरको रूप देखिं छु सुख मनि लाघ असर्पि छु लै जाउ भयो



क.  
८१

रवोरमयो ॥ तपोधनवतिले तपोधन बिये रफर्कि एकमहाविद्यारवनावार  
वसितो कंन्या दिनदिनवाढि ॥ योधनवतिभै एकदिन आप्रघरका जालमा  
वस्था कियित्तसे समयमा सवि संग घेले नगै ॥ जादा मावाटा मा एक ब्राह्मरादे  
धिरत स्कन देविका मदेउ भयो सविधिं भनि हे सविते स ब्राह्मरा कनलिये  
रआवो नु हो सभानिरत स ब्राह्मरा कनलिये र आसभयिं गै ॥ माता भंडे ॥ हे ब्रा  
ह्मरा मेरि हो रिकारि तु भै रहे छत स्कनरितु दान देउ होरो भया हज्जार रूप आ  
दिउला तिमिकन भंडा ॥ तपो भंडे हवो सभगस्व लाभयो घटिया मावसाया

उत माथिक परापहि शया धानुपिनु पान मिद्या इषुवायार राति संग भोग गन्या व्या  
हान सवि आइ सुध्याइ हे सवि आज राति ते राखा मिले क्या गयो तपो भंडे हे सवि स्वा  
मि विद्या उना माज सै आया त सै सारि फुको आ फे अरु कपश पनि पुकुला भया जाध  
मा पुग्पा आ हा संम जादु ॥ ता हा उपांतर सकाव सप्याव सपर्दी मा क्या क्या भयो  
मजां दिन भनि रस्ता स्वाभिकन स्वाभिज मांतर मापाने विस्त्रदै नर ॥ कस्तो भन्दा  
सुरे कुलिन प्रेमववन को र्त्तमा अत्यंत मायागर्मा दाता गुणवंत अतिरक्षधारिस्त्रि  
संभोगगर्मा सिपा लु रस्ता कनता विअदै नर ॥ भनि रत्ना लग रिते सकाते सै दि



क.  
८२

नमो गर्भभये रूपहिले पहरमा गर्भभया का है टा दिनमा स्वप्ना देखि कस्तो भन्ना  
एक पुरुष जटा कुट भयाको आधा वंदमा को फुल लाया को मसानमा को भस्म आ  
गमा वस्याको से तो जने लाया को से तो कमलासनमा वस्याको से तो नागको मे  
मलालायाको रबहु ब डुंग सुटु विस्मल एति दाहिना हातमा लिया को दस भुजा  
भया वमस्तक पहेला आषा भयाको नीस्मल पारि वांगा दात अति उग्र यं रमा  
फुल कंकरा डुं वरु धं ट सर्व वारा हातमा भयाको केवल प्रलय काल को अग्नि  
जस्तो दृष भमा व ह्या को एस्तो तपस्वि स्वप्नामा देखि ॥ तेस्तपस्विले भन्यो ॥

८२

जो तेरो दोरो जन्मला तस्कन एक मधुसवना या रता हि भिन्न घाले र राजा का द्वार  
मार बियो ॥ भनि स्वप्नामा तपस्विले भन्यो जसो भन्यो तसित स्कि मा हातारिले ग  
रिराति राजा का द्वार मार बियो ॥ जसो राबियो तसो रातमा राजा ले पवित सौ स्वप्ना  
देखा ॥ त्यो तपसिराजा थिं भंड हे राजन तेरा द्वारमा पुव छ पाट रानिक न दे भन्यो  
र रानिले मधुसल्या या ॥ हे न्यार हज्जार असर्पिसमेत पुव दे र्खा लक्षि न हे न्यो  
हे रूले हे न्यार वतिसहस्र शाको बाल धरहे छ भन्यो ॥ राजा भंड वतिसलक्षि  
राकस्तु हं ॥ भंडा वंति ग ई न ॥ जिनवा कोति नटा उगं भिर छ हा उडु को वार हां उ



क

८३

होटे सारं म्हा उता रोह मा रा ज्ञ हं ॥ पावथोक लामु वारथोक सानुना मि  
 कंठ हृदय एतितिनगंभिरनिकरुहं न उरुहाति मुषनिधार एतितिन विस्तार  
 काकाषिकोषावटनष्नाककाध एति उवा निका हं ॥ लिंग दृष्टि त्रिवा जं धी स  
 तिवार हो टानिका ॥ आषातालु जिह्वा कोठ ह के ला पे ला नम एति टाव को एतो सु  
 ष संपति पठा उ न्या हो ॥ दंत अंगुलि पर्व के म एति वारथोक मुष दाता हो वि उ डो  
 आषा नाक हात दुद को अंतर एति पावथोक क्षीर्वा निकोषो वा लोष अव स्य रुजा हो  
 ला ॥ एति राजा ले ज सै सु न्या त सै मो तिको हा रुच का ग ला मा द्या ला ॥ मे तिका

८३

दस गुण हं ॥ पाठ रानिले पुत्र कनकाष माघाले र राजा का वाउति र रा विधि  
 ॥ उ प्रांत वडा इ ग मा हर्ष उता वग रे र भि व द्या ल्या नाम कर राग मा हरि दत्त  
 ना उ रा घ्या ॥ पठ रानिले गुरु धिं संधि न् गुरु ले सा स्त्र प ह्या सो र व र्ष को भ  
 यो सवै सा स्त्र प ह्यो सो ह व र्ष सं म वा ल ष हं हं स त रिसं म अ द्वे सि हं हं स त रि  
 दे धि उ भो हृद को ला उ ह तो राज काल प र्या ये रा रा ज्ञा प यो ॥ त स्को पु व हरि  
 दत्त राजा भयो ॥ उ प्रांत के हि दि न मा रा ज्ञा ये सो भं हं म पु व ले ज न्या ले क्या  
 भ यो जौं ग या मा पिं ड दान ग या ज र म रा एक दिन वा पु का नि मि त्त ग या आ



क.  
८४

द्वगर्भगयोताहागयेरवाहाराकनवहुतद्वयदानगयागुरुभंरुजस्पजरको  
उभयहृदयासवैजिउपरराषगु॥तवतस्कनशाभिभंनुमोक्षपत्रितसैकनहुं  
हृदिनाज्ञानलेजटापात्यालेभस्मविद्युतिलायालेहृदेन॥जोत्रिदंडधारेर  
मांगोभयेरसिरमुजयालेअथवागुफावस्पालेरुषमनिवस्पालेपुशमप्या  
लेक्याहुंहृदेरपयाकोहृतक्याभयोजोहृदयसुद्धहैनततोसवैदुषमा  
नेहो॥दानतपस्पातीर्थसेवातोसभैभनसुद्धनभयापथाहृद॥अक्ष  
नभैकनकर्मनभैकनअहंकारलेजोआइगहृदोपिनपाउदै॥देव

८४

ताभन्याकोकाटमापनिहैनंपा निमापनिहैनंहुंगा मापनिहैनकाहाहृ  
भन्याभवेमादेवतारहाकोहृदितिगुरुकाववनसुनेरहरिदतराजाआ  
प्राहातलेजसैपिंडदिनसाज्योतसेनिनहातफलुवाटनिस्का॥हरिदत  
राजालेआसज्जिमान्याकस्काहातपिंडदिउभनिकनएतिकथासुनिक  
हिकनवेतालभंरु॥जोरपात्याराजारितुदानगर्भीएतितिनमाकस्का  
हातपिंडदानजांरुकरुहवोए॥राजाआज्ञागई॥जोरकाहातपिंडदां  
हृद॥भंदावेतालभंरुजस्कोविर्यहोतस्काहातक्याहापिंडगयेन॥



क.  
८५

अथवा जस्से पाल्यो राजा दियो तस्कन पिंड का हा गये न भं दारा जा भं  
हं न ॥ ब्राह्मण ले विज को मो ल दियो व द्या पार तो आ पूर हु दैन ॥ राजा  
ले सो वरी लिये र पाल्यो उसै को धन पायो तस् अर्थ ले राजा कन भये  
न ॥ विर्य को मो ल धन होत सकार रा पिंड दोर का हात गयो ॥ एति सुनि  
वेता लगयो ॥ ॥ इति शिव दश स विरविता यां वेता ल पं च विं स तिका यां  
अष्ट दस कथान कं ॥ १८ ॥ विद्यारं भे विवा हे व प्र वे स निर्ग मे त था सं ग्रामे सं  
ख वा पिव वि ध्रं त स्प न जाय ते ॥ फेरि वेता ल भं हू हे मा हा राजा वि क म से न वि

८५

चकुट भन्या को पर्व त धियो ॥ ता हा विज को ट भ न्या को न गर हू ता हा रूप  
से न भ न्या को राजा धियो तो राजा प रया म्भु ग व ने ल प्र भ ति म्भु ग मार न गयो  
तो राजा कन विषा भयो वर प र हे दी मा पो प रि दे छो ॥ ता हा जा इ द्यो रा वा ट  
को ल्यो र द्यो रो वि सा यो एक मु ह र्त सं म्म हे चो दे दो मा प हि ले एक स धि कं न्या  
फुल टि प्र आ या कि दे छो ॥ तो रि धि कं न्या गे राजा भं हू र क्या वे व स्ता हो म  
तं म्मा आ स्र मा आ आ र पा रु ना को भा वो न गरि क्थान गयो ॥ ठु ला का घ र नि  
वो प नि जां हू उ ठो हू त प नि जु वा न हू त प नि वा ल ष हू त प नि स वे भं द ठु



क.  
२६

लो ताउभागत हो भंदा मषिकं न्या लेहेरि ॥ परस्पर वांगो गरि देखागम  
॥ काम देव लेप मिषि डागयो ॥ तस्से समयमा मषि पत्रि आया तस्कि हो  
रि हो तो रिषिव डाहुं भनि राजाले प्रणाम गन्या मषिले आसीधी दगन्या ॥  
मषिले राजा छिंसु ध्याया ॥ हे महा राज एके कान आया थ्यो भंदा ऐ हाषे  
लन का प्रसंग ले आओ भनि राजाले भन्या ॥ मषि भंछर ॥ हे महा राज  
महा पाप क्या नगनु हुंछ ॥ किलामा बाधेर पसुकन मारि ररुको हिलो जो  
तुल्या उछु तो खर्ग गवा नर्कमा को जाला पाप गन्या एक भोग गयी एक

७६

षान्या कन दोष हेन ॥ मान्यो कन दोष ॥ हे महा राज सिकारिमा वहुत जिउ मारि  
महा पाप क्या नगनु भंदा राजा भंछर राज धर्म क्या हो कह ॥ भंदा मषि भंछर हे  
महा राज जो दान घोरा दान भुमि दान सोवरी दान अन्न दान तो सभै भंदा तुलोनि  
भय दिंछु तो महा दान छ ॥ सय ज्य जगन्या को भुमि दान गन्या को एकोति रक्खरा  
गदे पिड राया का कन वष धदि नुरत स्कन रोग को निभय हुंछ ॥ जति जिव जंतु  
हुं तन कन निभय दिया प्राण दान दिया को छुप छ ॥ संसारमा आश धन ग  
रा को सकछु वनमा वसि वने को तरा माइ रह्या एसा गमारि नल्या या सं



क.  
८७

सारमा को रहला ॥ हिमहा राज निर्भय दान देषि तु लो दान केहि है न ॥ जब  
महा राजा हं भनि अहं कार ले दुष्ट पापि पाचंडि क न मां दे न त तो पा प राजा क  
न है ॥ सरा मा आउत्पा क न न मा नु वडा को रित हो रो गि छुवा आ की का स  
र मा मा गया को हू त प नित स्को रक्षा प्रा रा दि न प नि ग नु र द्वा भ न्या को ज  
स्का धर्म को सिल हू अहं कार रि स ज स्ते जि त्या को हू ज स्ते वि द्या न मृत ग न्या  
को हू आ फ्रि स्ति मा सं तुष्ट भये र प र स्ति ज स्ते व र्ज्य को हू त सक न सं सार  
मा क से को भय है न ॥ क्ष मा दे षि तु लो त प स्या है न सं तो च दे षि तु लो सु र्ग के

८७

हि है न वि द्या समा न को दान केहि है न ॥ दया दे षि तु लो दान आ की है न भ नि  
न भिले भं द राजा भं हू न ॥ ना हे स पि आ ज उ प्रां त हिं सा पा प म ग दि न भ न्या र  
तो सु ने र न पि सं तुष्ट भया हे मा हा राज न्या मां हो दिं दु भ न्या ॥ राजा भं हू हे न  
वि ज्ञा म प र्से तुष्ट भयो त त मि त्यो कं न्या म क न द्यो भ न्या न मा ग्या प नि दि नु व स्तु  
दि ने प र्द वि द्यार कं न्या मा ग्या र हो व स् कं न्या दि आ गं ध र्व वि वा ह ले वि वा ह  
ग न्या न पि पि आ ज्ञा मा ग्या र वि द्या भ या ॥ त्यो कं न्या क न द्यो श मा व हा या र ले  
ज्या ज से आ धा वा ट पु ज्या त से रा त प यो ता हि व स्या सु त्या ॥ आ धा रा त मा श क वं



क.  
२५

हराक्षससमात्रनआयोवं ह्युराक्षसभंडं हरसकं न्या कन मषां ह्यु भन्यो राजा भं  
हन् ॥ महापातककाननग ह्युभंडं हरक्षसभंडं हरसकं न्या कोमायाभया  
एकसातवर्षको ब्राह्मण पुत्रको सिर मेरा अधिवाट काटि हिंदु सता म ह्यो डि  
हिंदु सातद्वितमा मआउला भंडं राजा लेमान्या सति सुनिशक्षसगयो ॥ राजा  
आफ्नानगरमागयो ॥ पहिले कोट तांत सवे मंविधिक लो ॥ मंविभंडं हेम  
रा राजा आपदा माधन ले रक्षा हुं ह ॥ धन कानि मित्य खाक्षिको रक्षा गरिं ह ॥  
आफ्नानिमित्त धन पनि खाक्षिक पनि आफ्नै आफ्नै निमित्त हुं वटिया गर्नु भये ह

८८

लोकार्य गरुला भन्यार एक सुवर्षको मानिस वनायार मोति हिशकिमाला लगायार  
रवाटमा ल्याया ॥ जो कोहि ब्राह्मण सातवर्षको देला पुत्र त स्कन यो मोति हिउला  
त्यो पुत्र राजा काद न्या ह्नु त स्कन कोटिल को पुरुष दिन्छ ह्नु भनि एक ब्राह्मणाले  
वावु महा तारिकन भंडं मलिउला भंडं माता पिता भंडं ह्नु हा मुकन त्यो द्रव्य  
ले प्रयो जन ह्नु पुत्र भंडं संसार मासार भन्या को द्वय हो ॥ इत्यन भया कथा सुष  
ह्नु पुत्र तातं म्मा आर्को होइ जा भंडं धन कालो भले ल्यात व भन्यो ॥ हे पुत्र एसा भ  
न्या जात व ॥ राजा धिं भन्न गयो राजा धिं हे महा राज मैले जिउ दिआ मेरा वाकन



क.  
८८

धनदेउजसैभन्योतसैब्राह्मणालेहेक्यो॥ हास्योपनिशतिकथाकहेरवेतालभं  
ह॥ हेमहाराजकहु॥ क्याकारणालेमर्त्यसमयमाहास्योभंदा राजा विक्रमसेन  
भंहर॥ हेरसंसारकोस्थिति॥ माहातारिलेपालिवालेषमापदिजिउवा  
ह्योसंसारमा॥ जोरक्षागर्गीहोत्योमार्जलाग्योतेसोदेविहास्योएसोभन्याकोह  
॥ सारदरितुमाकोमेवगर्जहवसदेवर्षीसतुमावर्षहमात्रेगर्जदेन॥ जोनिवो  
हमुषलेमयेसोगरुसाभंहरागिरागर्गसकैन॥ जोवडोह्योगरिपु  
याउहवकैन॥ एतिसुनिवेतालगयो॥ ॥ इतिशिवदासविरचितायांपंच

विंसतिकायांएकोनविंशतिकथा॥ १८ ॥ येनदुस्तमनोभवेनवलजितका  
यः पूरास्त्रिकतेयोगंगावदधेधकदायकरोयावह्रिपत्रपय॥ यस्याहुःससि  
मखिशेहरइतिस्तोतुंनुनामामरासोआदिष्टभुजंगलारवलयःस्वा सर्व  
दोमाधव॥ ॥ फेरिवेतालभंहरहेमहाराजसुनमकथाकहंहु॥ एकविसालसि  
भन्याकेनगरिहृपदनाभभन्याकोराजाताहाधियो॥ अर्धदत्तभन्याकोवनि  
आधियोतस्किहेरिअनगमंजरीभन्याकिधितसैपुरमामरिनामभन्या  
कावनिआलेत्योअनंगमंजरीवाहागन्यो॥ आहामात्रैग्योवावुकैधररा  
व्योआफुसमुद्रपारवेपारगर्गन्यो॥ वाहवर्षताहवस्योत्योअनंगमंजरीवा



क.  
२०

क  
उकाधरसुखसगवस्था<sup>कि</sup>॥ सरविसगको सिमावस्था<sup>कि</sup>थि॥ एककमला  
करभनाको ब्राह्मण कनदेवि कस्तोरुपज्यो वरा लावं रापले युक्तभयाको तस्ते  
पनितो कंन्या कनदेवोपरस्परपतिभयो॥ त्थो ब्राह्मण आफ्ना धरगयोरका  
मदेउले अत्यंत भयो रखास्त्रिसंग संग गर्न कते पायेन मुही भै रह्योथ्यो॥  
त्थो अर्तंग मंजरि पति मुद्धित भै रसंधि पात भया कि भै रहि थियो सो भनि  
हे सखि कामदेउ भन्नाको देवता एस्तो रहेछ॥ अत्यंत कला जान्यो रहेछ  
पंडित कवचिन्मा उद्ध सुविदेवि हास्छ॥ धिर कन वंदल एकै छैन मा सखि  
भंदे॥ हे सखि शव सोन मन॥ तं श्रवावा माहातारिन देव मकेहि प्रकारले

२०

तं श्रोरतस्को संगगराउलातिमिमनमादुष नगर यो कुशेकसे कथे थिने कला  
भंदा त्थो भंदे॥ आजै ते ससग भेट गरान तर पा सो लाइ मरुला भंदा तस् सखिले बु  
झाइ र कमला करका धरगे॥ त्थो पनिते सैका विरहले मनीत भयाको थियो तस्ते मा  
सखिले बुझाइ रल्याइ॥ असोक फुल कावन मा ल्याइयो अर्तंग मंजरि केराका वोटम  
निवस्था कि थिताहि भेट ग्या पतिले आलिंगन ग्या मुख पाहा तमा बुवन ग  
योस्तन समात्यो॥ तति रया लगदी अर्तंग मंजरि मरिगे॥ लोकमला कर ब्राह्म  
णाले तसै कन आगालो बाल्यो रम्यो पति॥ तस्ते समय मा व्याहाग त्या पति आ



क.  
२९

इपुत्रो ॥ ससुरालिकन भेटन आयो मानिस मरि रोय कि सुन्यो र गयो जाहा अनं  
ग मंजरि मया कि पिताहि गयो देखो आर्क पुरुष संग अंकमालि भये रमया कि  
एलिष्टया कन देव्यार लोपनि ते सै गरि अंकमाल गयो तसै एलो सुन्या सवै राजा  
प्रभतिलोग हेर्न आया माहा को तु क देव्या ॥ राजा भं हर् न्या कर्म मनुख ले गयो  
को ह्मलो मंदो अवस्य भोग गर्नु पनी रहे ह् ॥ एतिका कथा के हेर वेताल भं ह् ॥  
हे माहा राज एतितनपा को कामाधि कटु लो छिनार को हो भंदा राजा भं ह्  
व्याहा गयो लो छिनार हो ॥ क्या हा भंदा पराइ संग लाया कि मया कि देखे मा को

२९

मदेउव ह्यो रमयो ॥ तसै अर्थ ले भन्या को सुनि वेताल गयो ॥ ॥ इति विवदास  
विरचितायां वेताल पंचविंशतिकायां विंशतिकथा ॥ २० ॥ नमः शंकराय  
वंश्या मरवारवे ॥ वै लोक नगरार्थ पुलस्तंभात्म संभवे ॥ फिरि वेताल भं ह् हे माहा  
राज सुत जयस्थल भन्या को नगर धियो ॥ ताहा विरपदन भन्या को राजा धियो  
॥ ताहा विष्णु सर्मा भन्या को ब्राह्मरा धियो तस ब्राह्मरा का वार ह्यो रा धिया एक  
जुवा घे ल्या ॥ दो ओ वस्या गमिते ओपण सिधि जा न्या वो धी नास्थिक ॥ ति वारै क  
न वा कु बु का उ न ला ग्यो ॥ हे पुत्र हो वडाले ता ति र्थ गर्नु जुवा घे लन ह् ॥ सि



क.  
२३

कोनासहं हंसिलनासभै जिउदावाहिविषमाइमनुभलो छहेरविघारः कलहम  
नुसिरभमराथकाइयेसुतअहंकारसोकएति जुवापरिपरियारहुइ जाहजुवा  
हताहललिमिरहंनर॥ जाहअग्निहताहविरारहदेनधनकोउछा जुवाहो  
जुवावेल्पाभाहतारिवावाकोआशाभांदैनतोपनित्योमहापातकहोभलोहभनि  
कोहिभंदैनर॥ आक्राकुलमासिनगरेरदुर्यराहुं हमापाकाववनजोरिला  
उछनेवत्अग्निमापछुरजुवाविलनुवरोवरहजुवानषेलभनिजुवायाकनभ  
न्यो॥ हेपुत्रवेस्यासगकोसंगनगरअतिसुंदरिअतिअलंकारभयापनिवस्या

क.  
२४

संगरतिनगनुः सत्यकोनासहं ह॥ सुविहुदेनसिलरहदेन॥ आक्रानित्यकर्मेसंध्या  
तोसभैदुरजां हतस्काराव्यस्याधिंनजानुतपः विद्यावृत्तियसकुलगुराएतिको  
नासहं ह॥ जस्किवेस्याप्रेमहंतस्काएतिकोनासहं हकोभन्यामाहातारिवावाभाइ  
छेराछेरिआफ्रिस्वास्मिइतिकुपियाराहुं ह॥ हिनायासत्यशौधभलो गुरुकोहि  
तववनस्वाउदेनंवा लुवाभाहालाकोदुदपियाजस्तोभां ह॥ जोवेस्याकोमुषहं ह  
तोमुषहोपहिलेमदकोगंधगूहाउछमासुमदसायालेकाभयोवेस्यधिंजाया  
पारमदमासुघायोवेस्याकोमुषजवनिवाजातिकाप्रसंगलेदुधितभयाकोतवसगज



संग ग-या प-हि म सुविग-हुं भ-या ले क्या हो ॥ उ-प्रांत जो पर-स्त्रि-चिंजं ह-व-ष्पु-हि-ड-नु-वो  
 ल-नु-तो-व-ह-त-जो-गि-ड-नु-अ-लिक-ति-बु-क्या-म-तु-हं-ह-स-र्प-पे-ला-या-ज-सो-हं-ह-पर-स्त्रि-  
 से-वा-ग-नु-भं-दा-ना-स्त्रि-हं-क-भं-ह-क-स्त्रि-मा-ह-तारि-क-को-वा-बु-क-का-हो-रा-ज-भं-ह-र-मं-ह-  
 र-सो-उ-त्प-ति-प्र-ल-य-ह-दे-ह-नि-र्द-या-नि-र्भ-य-संग-व-र्जित-व्य-था-के-हि-न-मा-नि-पर-मि-स्त्र-  
 र-को-ध्या-न-ग-नु-तो-मा-ने-ओ-ह-ह-त-व-क्या-भं-नु-॥ वा-वा-को-आ-शा-न-मा-मा-ह-या-ह-ने-  
 वि-द्या-रं-भ-को-पु-रु-ष-जि-उ-दो-भ-या-प-नि-म-या-को-हो-॥ त-र-का-र-रा-दे-स-मा-जा-ई-वि-द्या-  
 संग-ह-ग-रें-भं-या-वा-रै-ले-म-त-ग-या-॥ वा-र-ज-ना-वा-रै-दि-सा-मि-ना-मि-ने-ग-या-॥ को-ई-स-

म-य-वि-द्या-प-ह-या-प-हि-क-न-वा-रै-आ-या-ए-का-व-न-मा-ति-वा-रै-को-भे-ट-भ-यो-॥ यो-ढा-ले-  
 भ-यो-आ-पु-वि-द्या-प्र-का-स-ग-र-ए-का-ले-व-न-मा-हा-उ-जो-यो-आ-ठ-उ-ठ-ग-मि-ला-यो-॥ दो-आ-  
 का-मं-त्र-व-ल-ले-न-सा-मा-सु-धा-तु-जो-यो-॥ ते-आ-ले-हा-ला-रो-म-ते-ज-जो-यो-स-घ-वा-घ-भ-यो-॥  
 दो-था-ले-जि-उ-द्या-लो-मं-त्र-व-ल-ले-सिंह-उ-दो-र-ति-वा-रै-क-न-मा-यो-ए-ति-क-था-क-हे-र-वे-  
 ताल-भं-ह-॥ हे-मा-हा-रा-ज-ति-वार-मा-को-मु-षि-भ-न-भं-दा-॥ रा-जा-वि-क-म-से-न-भं-ह-र-॥ सिं-  
 ह-भ-या-को-दे-वा-दे-वे-॥ ज-स्त्रि-या-यो-तो-मु-षि-हो-॥ ए-सो-भ-या-को-ह-वि-द्या-वा-हि-ह-दि-  
 तु-लो-ए-ति-भ-या-को-सु-नि-वे-ता-ल-ग-यो-॥ ॥ इ-ति-शिव-दा-स-वि-र-वि-ता-यां-वे-ता-ल-पं-च-



क  
२४

विंशतिकायां एकविंशतिकाया ॥२॥ नमामिसिरसादेवं देवानामपि दुर्लभं ॥ विद्या  
निधानसंपूर्णपार्वतिमिश्रं ॥ फिरिवेतालभं ह्वेदजन्माभन्याकोनगरधियो  
॥ ताहप्रतापसेवभन्याकोराजाधियो ॥ ताहसुपादितभन्याकोब्राह्मराधियो अत्यं  
तरुपकोवडो गृहस्थधनाय ॥ महाभोगियस्तोरहे ॥ त्योब्राह्मरादेवकावसपनी  
ले एकदिनरातिमुत्रसुविगर्नगयामामरे ॥ तस्तेमाता एकदेसिब्राह्मरातेत्यो  
मृतकदेख्योरमनमावितायोमआकीकासरिरमापक्ष्याविद्याजांदहुतस  
विद्याकोफलआजिखिंदुभन्योरएसकासरिरमापसुर्योतजुवानहुतवसंप्र

२४

राभोगगरुलायोबुढोसरिरहुहुभन्योरआफुसरिरहुओरतेस्मृतकमाप  
स्यो जसेभिन्नपस्योपहिलेरोयोपद्धिहास्योआफुदेहिहोओरतस्कादेहिमा  
पस्यो ॥ विहाततस्कोसंस्कारगर्नपरियारदाजुभाइआयादेख्यातजिउदोभ  
याकोआकीमन्याकोदेख्यारउगसर्वमानिकोल्यातोघरआयोएजोदानादे  
प्रत्यतिथयाजागयो ॥ तरुणासरिरमापसेरपरियारथिंभंहुमयोगिहं  
हुवरपटवाक्यभंनलागो ॥ कदधासुनः कवनटलासं कहरिखंडकां  
तिजदासं ॥ कवजनकाष्टकासौरामः कदरेविकयेविधिपरिनामः ॥ १ ॥  
अंगगलितंपतितंमुंडदसनविहिनंजातंतुंडं ॥ एधोयातिगृह्णित्वादंडं



क.  
८५

स्तदपिनमुवंत्यासापिहुं ॥२॥ भिक्षादेमार्गा भिक्षादेवा भिक्षा गुरवो भिक्षा सेवा  
॥ भिक्षावेसा भिक्षा सुक्ति मोहा विसेषा सर्वा युक्ति ॥३॥ पात्रे पेन तदसंख्यं दानं त  
दसनिवर्जं ज्यो बहुमानं ॥ सगलति कृत्वा कृत्य विवेक किल भव कुपे विलस  
ति भेक ॥४॥ पुनरपिरजनि पुनरपि द्विषा पुनरपि वर्ष पुनरपि मास ॥ पुनर  
पि वधं पुनरपि बाल पुनरपि याति समेधित काल ॥५॥ कुपोद र्म ह क स सिमा  
या कार सुरागिरि सागर नगर विह्वर ॥ न त्वं नाहं नायं लोकस्तदपि किं मर्थं क  
यते सोक ॥६॥ अरदले न विडं वित विं वा गुत र कुव युग तुंग नितं वा ॥ वं व  
ल नयन विनिर्गत हरि सिखे तो हरति मुने रपित रुरि ॥७॥ काव्यं तरुरि

८५

प्रवहति गर्वं माया कार विनिर्मित सर्व ॥ एतन्मांसवसादिविकारं मनसि वि  
सर्जय वारं वारं ॥८॥ वत्वर विवर क व्यीत क क्षायु रि पु भिक्षो भ्रमरो दक्ता  
॥ ललना लोचन बोधित वक्ता हरते यो धि को यं सिध्द ॥९॥ अदशा काशा  
स विटित घ्राणाः काकः काशो घटित प्राणाः पाशो रेपिता काष्ठ कया राक  
रते यो गि पठसि पुरा शा कंथा खंडै कृत तनु जो पसरि सि निधा विन निह  
र दोष ॥१०॥ लोकेष्या पित सो व विलेप को यं यो गि योग निरोपः को हं कस्मिन्  
कुत काया ते कामे जननि को मेता त इति परिभात इह संसार सर्वो यं व ख प्र



क.  
२६

विहारह ॥११॥ पादौपानहपादौदंडः रथ्याकर्षटमुंडितमुंड ॥ हस्तेष्वर्पि  
रविरवितंमंदः सोहयोगिसहजानन्द ॥१२॥ मोंतिबंधनवेराभासपा  
यकहवयज्ञायासाकृतवहुवर्क्यौवाववर्णतदधिनलखं परमज्ञाने  
॥ पिङ्ककवंडिलुंवितवंडधृतदधिसर्करयाधितधिंड ॥ आग्नेयुवतिष्णति  
रंडवप्रेरिगंवरदर्शनमंड ॥ इत्यवमादिनिपठिकनभन्योमतीर्थया  
आगर्नजांकुभंदापरियारसभपुसिभया ॥ तस्त्वितरुणासरिरमापसे  
ररोयोपद्विहास्योऽतिकथाकहिकनवेतालभं ॥ हेमहाशजं कमा

२६

अर्थलेरोयोकाअर्थलेहास्योभंदाशजाभं ॥ तेसंयोगिलेआपुसुरि  
रत्पागगर्पीसमयमायेसोवितायो ॥ वालेषमायोसरिरमाहातारिरेजर  
नगरिपालित्वावालेवढायाभेलेयोवनमास्त्रीसंभोगगयाभनिरोयो  
॥ हास्याकोकारामेलेजात्याफेरितरुणासरिरपाआभनिहास्यो ॥ ए  
तिसुनिवेतालफेरिरुषेमागयो ॥ ॥ इतिशिवदासविरचीतायांवेता  
लपंथविंशतिकायांदाविंशतिकायांसमाप्त ॥२२॥ सरस्वत्याप्रसादे  
नकाव्यंकुर्वन्तिमानवा ॥ नतेषांदुर्लभं किंविद्यस्मरंतिवभारति ॥ के



क.

८७

रिवेतालभं हहेम हा राजधर्मधलभन्याको नगर हता हा धर्मधजभन्या  
को राजाधियो ॥ ता हा एक द्राक्षरावार वेद पद्याको गोविंदभन्याका धि  
यो ॥ तस्कीलिलक्षिभन्याकिधितस्कातिन पुन धिया हरिदत्तसोमदत्त  
यज्ञदत्तभन्याको तिसवै वेद पद्याका धिया सवै कलाभाकुसलधिया ए  
कदिन गोविंदभदुले यज्ञको आरंभ गयो रय शमा लाउन कहुवा बाहि  
म्पारहे हुरत्योलिन त्योलिन तिनै कोरला इपठायो समुंद्र पार सभैना  
उधियाउन जा मारहा हुरनालबिलन लाग्ना जालमा कहुवा लायो

८७

देखा लोकहुवा समाउन कपाला हा लाहा लग्या ॥ जेठाले भन्यामा डि  
लो समातः माडिलाले भन्याकां हो समातकां हाले भन्यामा समातिन भ  
न्यातिनै ऊगरागर्देद्वीरगया राजाभं हुर ॥ तिमिहरुक्या ऊगरागर्दे सुन  
तं प्रावावाले यज्ञगर्ने आरंभ ग्या तिमि विधं सगर्ने लाग्यो भनि राजाले भं  
दा ॥ जेठो भं हुरमाता भोजन वंग हुं भन्यो त्योग हाउ न्या कसो गरिली उभंदा  
राजा भं हुर त्यो विचार गर्नु भनितिन माषा न्या वेला मातस्कन डाक्यो।  
रंवेसमे हिधानको भात घाना दियो जसै घायो तसै मुख होयो मुख



क.  
२८

हो पाको राजा ले दे प्रो र सुधा यो ॥ क्या हा मुष हो पौ भंदा हे मा हा राज यो  
अन्न ता म सान भु मि मा का से त को र हे हं मो रा को गंध आ उ हं भंदा राजा ले  
धन सा या अडे धिं सुधा या ॥ ति वा वल का हा वा ट ल्या या का हं भंडारि या  
भंदा भंडारि भंदा ॥ हे महा राज म सान मा को ठा उ घने र हं पा को हो भ नि डा  
आर नि श्रय प्रा दा को वि वारि र ह्य हो त स्को मान ग या ॥ ति मि क स्ता  
हो भंदा दो ओ भंदा ॥ मनारि वंगुं भंदा त स्को विचार ग न र क अ ति सुं  
द रि नारि ध र मा प ठा इ दि यार व सा या वि हान सु धा या र भंदा ॥ हे म

हा राज सं भोग त क्या निंदा भये न ॥ क्या हा भंदा हे मा हा राज दुर्गंध का  
उर ले त स्को क्या गंध ले भंदा र स को सरि र वा क को दु द ग हा उ हं ॥ तो  
त सहि सकु हें न वा क का दु द ले पा ल्या कि र हि हं भंदा त स्कि जे ठि आ मा  
धिं सु धा या यो कं मा ते ले का हा पा इ धि सु भंदा तो भंदा ॥ हे महा राज  
मे रि व हि नि कि हो रि हो यो ज न्मा का द स दिन मा आ मा म रि र वा क का  
दु द ले पा ल्या कि हो भंदा राज ले गु ग्या यो प नि सा वो र हे हं भ न्मा त स्को  
मान ग या ॥ ते आ धिं सु धा या ॥ ते ओ भंदा हे महा राज म तु लि वंग



क.

९९

हंभन्यो राजाले रातमा विद्या उनामा सुताया ॥ मानिसरषुवा-या राघ्या  
काहू विद्या न विंतिग-या हे महा राज ए स ले रातमा निंशा पाये न भन्या  
त्यो भं हं हे महा राज विद्या उनामा पहिले पत्रभाव निवल कोरो मरहे  
हू ते हि विद्या यो र निंशा पाइन ॥ भंदा राजाले विद्या उना हे मार देखा  
वने वल कोरो मप-या को त स्कन मा मा निता ग-या ॥ एति कथा कहे र  
वे तल भं हं ॥ एति ति न मा को विवारि तु लो को हो हे महा राज कुह भं  
दा राजा वि-कम से न आ शा ग ईर ॥ तुलिवं ग ठु लो हो ॥ सात पत्र वि

द्या उनामा त-ला पव को व निवल को रो म विजा यो जाना त स अर्थ ले तु लो  
॥ एहि सुनि फेरि वेता लगयो ॥ ॥ इति शिव दास विरचिता यां वेता ल पं व  
विंशतिका यां त्रयो दस कथा समाप्त ॥ २३ ॥ अर्क सुतु रि पु सार थि सुनो रंत क  
स्य सिर सि प्रति भाति ॥ या मुंड सुर सिद्ध नि सेवते सा क शे तु भव ता म द्य ना स ॥  
॥ ॥ फेरि वेता ल भं हं हे मा हा राज प्र भाव ति भ न्या कि एक न गरि धि ॥ ता हा  
प्र मु म्भ न्या को रा जा थियो ॥ त न कि रा नि पि म ल दे वि भ न्या कि थिं र ॥ त न कि  
रो ते लि वं द प्र भा भ न्या कि थिं र त्यो द दि न दे स का रा जाले वि जय से न भ न्या



क.  
१००

ले विवाहागयो ॥ तन कित्तावं रापवति भन्मा किरो ते लिज्ज मि तो वडि ज्यो व  
न वति भै सहरमावेरिले छे यो ॥ तसे समयमा राजा रातिकन हेरानि सो छे  
रिले रजा भन्मा रआफु संग्राम गर्ने लाग्दा पर स्पर लोग्ग मरियो रजा विजय  
सेन पतिषस्याति राति रो ते लि भाग्पा एक पाषरिका नजिक पुग्पा एक क्षि  
रा ताहा विआम गरे रसूर्य अस्ताया ॥ तसे समयमा एक कुसुम पुर भन्मा  
को थियो कुसुम से घर भन्मा को राजा थियो ताहि ॥ दोरो संगं लिये र एक  
दिन सिकार कन गयो ॥ तसे मा बाटा मा पाइला देखा लक्ष्मि का पाइला

१००

देख्यार पुत्र ले भन्पो हेवा वा कस्कि राति रो ते लि आया कार ह्या छत्र भंदा राजा  
भंछत्र ॥ हे पुत्र एक ठुला पाउ ग्या कि एक साना पाउ ग्या कि रहि छ जो सा  
ना पाउ भया कि ते रिराति भै ॥ ठुला पाउ भया कि मेरि भै भन्मा र तसे पाइला  
पछि लाग्दा देखा बाटा मा जादा भेटा या रति दुइ आमा छिरि डरायार पहिले को  
ट तांत कल्या ॥ त्यो सुनि राजा भंछ वडिया भयो ॥ सरावरि र ह्या छत्र राजा भंछ हे  
पुत्र जो वा वा ग्या थ्यो त्यो विपरित भयो सानु पाउ भया कि आमा राह छ ॥  
ठुला पाउ भया कि छोरि रहि छ त्यो तले भंदा ॥ पुत्र भंछ त्यो कसो गरि लिउ मन



क

१०१

लेमाहता रिभन्मा ॥ तस्काररा साना पाउगर्भमेरिभै ॥ हवस्रभन्यारलेगा  
 इवीरतिदुइआमाहोरिले दोराहोरिपाया ॥ एतिकथा कहि वेताल सुधाउह  
 ॥ हेमाहाराज विक्रमसेन तनकासंन तावको क्वा नाताला गहु कह ॥ जानिन  
 कलासिरपुटिमरोला एति युनिशजाले उतरा केहिदियेन नइनको नाता  
 केहि जानिनभन्मा ॥ ॥ इति शिवदासविरचितायां वेतालपंचविंशतिकायां  
 वतुर्विंशतिकथा समाप्त ॥ २४ ॥ आसूठजेतहं सप्रमतिवरमहिदक्षरोः  
 वाञ्छसुत्रं कामेहस्ते वदिव्यं वरकनमम पुस्तकं ज्ञानयुक्तं याविशावा दयेति

१०१

खकरवरनघेस्तत्व विज्ञाभसदे कीडंतिदिव्यरूपं वरकमलधराभारतिसुप्रसं  
 न्न ॥ इहाउप्रांत वेतालप्रसन्नभयेरभंहु अवउप्रांत मरुषमाजान्न हेमाहाराज  
 तिमिदेशिमसंतुष्टभजामेरो एकउपदेसतिमिलेउमेशववनसुनेरत्योक्तप  
 नकयोगिकोविस्वासबुद्धहुहोला ॥ राजाभंहुन क्वाह्याभन्मा ॥ वेतालभंहुहे  
 माहाराज जसैयोमृतकलियेरतिमिजाउला ॥ त्योयोगियसोभनलापुजाग  
 ररतिमिकनहंडवतंगरभनलातिमियेसोभन्मा मताराजाहुं प्रणामगर्जेनां  
 दिनसिकाइदेउभन्मारअधितिमिनमस्कारगरपहिमतेहरेधिनमस्कारः



क  
१०२

गरुलाभन्या ॥ सैवेताल यो गिन म स्कार गरला त सैष डुले त स्को सिर काटे र  
त स्कार कले अर्ध देउ ॥ जो कबंध सुवरी को पुरुष होला अष्टमाहा सिद्धि पाउ  
ला मनो वांक्षा होला ॥ एति मेरो उपदेश समान ॥ मेरो उपदेश जो समै नोति मि  
कन मारला त स्को मना वांक्षा होला एति कथा कहै रवेताल आफ्ना ठाउ भाग  
यो ॥ राजा केरि सिंसी का रूप मागया तो मृत कविये र यो गिका ह नुर गया ॥  
जैसे देख्यो जो गि सुसि भयो भलो भलो हे माहा राजा सबै राजा को सिरो मारि  
होति मिले भन्या को पुचा यो ॥ पहिले पुजा गयो मंत्र ले वेताल कन शब्दोउ

१०२

३२

प्रांत त्यो दिगं वर भंडू हे माहा राजा नम स्कार गर दंड वर गर भंडा ॥ हे योगे ख  
र नाहं नम स्कार गन जां दिन नम स्कार गर्न सिका द्यौ भंडा जो गिन म स्कार गरि  
देखाउन लायो ॥ जब देव को कुदृष्टि हुं छु बुद्धि पनि होउ छु ॥ यिता मरिा पनि  
लोष्ट हुं छु ॥ काम धेनु गाइ पनि थारि रहं हिं न कल्प वक्ष पनि अरिउ जस्तो हो  
इजां छु ॥ कुदिन मा बुद्धि हुं दैन ॥ रामो हे म मृग मिति ॥ श्री राम वंश जस्ता पुरु  
ष सुवरी मृग पहिला पार सिता गुमाया ॥ नहुष राजा ले ब्राह्मण कनः  
जो लिवो कायार स्वर्ग देखि पतित भया ॥ सहार्जुन ले ब्राह्मण किशो इहर रा



क.

१०३

गगारसंहराक्षेत्रिमराया ॥ राजानुधिष्ठितले ज्ञानिभयेरनुवासे  
ररा निधनसंपत्तिसवहन्वा ॥ सहस्रार्जुनले ब्रह्मराकि गाइहररागया  
रसंहराक्षेत्रिमरायोवडा पुरुषकावितासकासमयमापहिले बुद्धिले  
इदं देवलेमायाको दिगंबरले नमस्कार गयो ॥ असे दिगंबरले नमस्कार  
रगयो तसे राजाले पङ्कले हाथा श्रीरक्षितिकन प्रदक्षिणा गगारतसे  
कारकले अर्घ्यदिया ॥ राजा अष्टसिद्धि पाया ॥ आकासवाट पुष्पष्टि  
पसाया ॥ भलो भलो हे माहा राजस त्वविक्रमादित्य हापि संतुष्ट भओ भनि

१०३

देवताले भन्या राजा विंतिगर्ह देवता थिहे परमेश्वर हो जो मपर संतुष्ट भयो  
तयो पंचिस वेताल को मेरो वरिष्ठ संसार मेरो वार्ता वलो सज्जो यो वरिष्ठ वाव  
लाभन ला सुनला ते स्वन विद्वक ते वाट हवैन ॥ देवता हरू ले पनि हवस्त ते से  
हो लाभन्या ॥ देवता हरू पनि आफू ठाउ गयो ॥ उघांत विक्रमादित्य राजाले  
यो वेताल पनि नगरि माय सोसाह सगया सिद्धि सभे कन भयो ॥ ए सोराछा  
पाट भयो सभे सुसि भया प्रिव भक्तले यो वेताल पविसव नाया ॥ ॥ इ  
ति शिवदास विरचिता यां वेताल पंच विंशतिका यां पंच विंशकथा समाप्ता ॥



क  
१०४

श्रीशोके ११३१ श्रीसंदर्भ १८६६ सा लमितिप्रोषवदिर रोत्र ७ या दृशं पुस्तकं इष्ट  
ता दृशं लिखितं मया ॥ यदि सुष्ठु मसुष्ठु वा न नदी प्रो न दियते ॥ ॥ भ ॥  
एकटिप्रीवा वधुष्टिरघो मष्टं कष्टेन लिखितं ग्रंथं यत्ने न परिपाल  
येत् ॥ ॥ निष्टुपुस्तकं लिखितं गौरे स्वरस मौ सतुष्टु भम् ॥ ॥ ॥

आर्य समाज  
ASMA ARCHIVES

2363

१०४